राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय।

# प्रेमबिलास

[भाग १-४]

जिसको

बाबू ब्रजबासी लाल साहब, बी. ए., एलएल. बी.,
वकील, हाई कोर्ट, ने

राधास्वामी सम्वत् १०७

सन् १९६४ ई०          [ १००० पुस्तकें

[illegible] Chetan Dass at the Model Printing Works,
34, Dayalbagh, Agra.

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

# प्रेमबिलास

[भाग १-४]

प्रेम सिन्ध से मौज उठ जगत किया उजियास।
सतगुरु रूप औतार धर घट घट प्रेम प्रकास॥
प्रेमी बिरही साध जन धर हिरदय विश्वास।
निस दिन भाग सरावते निरखत प्रेमबिलास॥

152

जिसको

बाबू व्रजबासी लाल साहब बी. ए., एलएल. बी.,
वकील, हाईकोर्ट, ने
दयालबाग़, आगरा, से प्रकाशित किया।

राधास्वामी सम्वत् १०७

पहली बार] सन् १९२४ ई० [१००० पुस्तकें

# सूचीपत्र प्रेमबिलास

[भाग १-४]

राधास्वामी दयाल की दया.

राधास्वामी सहाय

# प्रेमबिलास

## भाग पहला

### शब्द १

मंगल

आज साहब घर मंगल कारी।
गाय रहीं सखियाँ मिल सारी ॥ १ ॥

ऋतु बसन्त आये पुरुष पुराने।
शोभा धारी अद्भुत न्यारी ॥ २ ॥

मेहर दया की पर्बल धारा।
रोम रोम अँग अँग से जारी ॥ ३ ॥

जनम जनम के बिछड़े हंसा।
चरन कँवल में लिये लिपटारी ॥ ४ ॥

सब सखियाँ जुड़ मल मल न्हावत।
करम भरम से होवत न्यारी ॥ ५ ॥

सत्तपुरुष के दरश निहारत।
अलख अगम निरखत पद भारी ॥ ६ ॥

प्रेमभरी मेरी सुरत सुहागिन।
गाय रही राधास्वामी गुन सारी ॥ ७ ॥

## शब्द २

सावन मास सुहागिन आया ।
रोम रोम अँग अँग हरषाया ॥
प्रेम घटा के बदला छाये ।
रिमझिम रिमझिम बरषा लाये ॥ १ ॥
भक्ति प्रेम की गहरी नदियाँ ।
बहन लगीं सब ताल तलैयाँ ॥
लाल हुईं सब सखियाँ प्यारी ।
भूल गईं तन मन सुधि सारी ॥ २ ॥
सन्त अनुराग यह औसर पाया ।
प्रेमसंजोग मन अधिक सुहाया ॥
चरन आधीन सुरत रंगीली ।
गुरु आधार से भई सजीली ॥ ३ ॥
सरन आधीन गहे गुरुचरना ।
नाम रसायन हुआ मन मगना ॥
प्रेमदुलारी सुरत शिरोमन ।
नाम आधार रहे स्वामी चरनन ॥ ४ ॥
नामप्रताप की महिमा भारी ।
चरनप्रसाद हिये बिच धारी ॥
सतगुरु प्यारी सुरत अलबेली ।
हुई अचिन्त अब सन्तसहेली ॥ ५ ॥

प्रेमभरी हुई नाम की लोई ।
सुरत निरत दई चरन समोई ॥
प्रेमसरूप शब्द की छुनछुन ।
साहबगोद मगन रहे सुन सुन ॥ ६ ॥
प्रेम की धारा बही अस भारी ।
भींज गई रचना सब सारी ॥
साहबदास मगन होय खेलें ।
नाम आधीन सुरत को मेलें ॥ ७ ॥
करम भरम घर अगिनी लागी ।
सन्त बिश्वास प्रीति हिये जागी ॥
सतसंगी सब जुड़ मिल आये ।
सत्तपुरुष ढिंग आरत लाये ॥ ८ ॥
अरब खरब का मरम पिछाना ।
राधास्वामी पद का किया पयाना ॥
चरन अम्बु में गोता मारा ।
हैरत हैरत वार न पारा ॥ ९ ॥

---

## शब्द ३

साहब इतनी विनती मोरी । लाग रहे दृढ़ डोरी । टेक ।
जनम जनम बहु भटके खाये । भरम फिरा चहुँ ओरी ।
हार हार सब बिधि से हारा । नाम आधार लियो री ॥ १ ॥
संतमते को समझ बूझ कर । जान पड़ी सब काल की चोरी
ऐसी किरपा आपन कीनी । रात गई भई भोरी ॥ २ ॥

भूल चूक मेरी चित नहिं लाये । आप आय तुम मोहिं मिलो री
बाँह पकड़ मोहिं अंग लगाया । चरन कँवल दइ ठौरी ॥ ३ ॥
रैन दिवस गुन गाऊँ तुम्हारे । गावत गावत भूल गयो री ।
तन मन धन और जान प्रान सब। सरवस भेंट धरों री ॥ ४ ॥
इतनी बख़्शिश और भी माँगूँ । हे सतगुरु मेरे चितचोरी ।
सदा रहूँ मैं सँग में तुम्हरे । दीजे मोहिं न छोड़ी ॥ ५ ॥
चरन ते सीस टरै नहिं टारे । ऐसी मेहर करो री ।
हे राधास्वामी पुरुष अपारे । कस के बाँह गहो री ॥ ६ ॥

---

## शब्द ४

सुन री सखी पिया की बतियाँ ।
सुरत मेरी हुई चरनन रतियाँ ॥ १ ॥
गुरु मेरे की अगम गतियाँ ।
समझ कोई नेक नहीं सकियाँ ॥ २ ॥
चरन में जब से आय टिकियाँ ।
भाग मेरा निस दिन रहे जगियाँ ॥ ३ ॥
झकोले मन दे दे थकियाँ ।
काल भी जाल रहा फिकियाँ ॥ ४ ॥
गुरू अस किरपा धरीं चितियाँ ।
पेश तनि इनकी नहिं चलियाँ ॥ ५ ॥
फ़िकर मेरे जिय की सभी हरियाँ ।
दास अचिन्ता मोहिं करियाँ ॥ ६ ॥
चिन्ता चित से गइ हटियाँ ।
नाम राधास्वामी रहूँ रटियाँ ॥ ७ ॥

उमँग मेरे हिय में अस रहियाँ ।
लिपट रहूँ सद सतगुरु पइयाँ ॥ ८ ॥
मेहर जब उनकी चित धरियाँ ।
कसक कसक कसके छतियाँ ॥ ९ ॥
नयनन नीर बहे नदियाँ ।
अँग अँग मेरा रहे खिलियाँ ॥ १० ॥
हे सतगुरु मेरे सतमतियाँ ।
अलख अगम के गति लखियाँ ॥ ११ ॥
राधास्वामी धाम के निज बसियाँ ।
सदा मोहिं अपने सँग रखियाँ ॥ १२ ॥
सरन तुम्हारी दृढ़ गहियाँ ।
चरन रहें तुम्हरे मम मथियाँ ॥ १३ ॥

---

## शब्द ५

गुरु की सरन सँभालो । औसर न बार बारी । टेक ।
ऐ यार टुक तो चेतो । क्यों गहरी नींद सोवो ।
आँखें ज़रा तो खोलो । गौं की कहूँ तुम्हारी ॥ १ ॥
मुश्किल अजब मुसीबत । आफ़त के सिर पै आफ़त ।
सचमुच की अब क़यामत । सिर पर करे सवारी ॥ २ ॥
सोचो ज़रा तो मन में । क्योंकर याँ मन और तन में ।
होगी गुज़र अमन में । बिन गुरु की ओट धारी ॥ ३ ॥
चरनों में जिनके एक दिन । चाहते थे रहना निस दिन ।
गाते थे महिमा छिन छिन । तन मन थे देते वारी ॥ ४ ॥

उनको तो तुम ने भाई । एक दम दिया भुलाई ।
ऐसी क्या खुश्की छाई । हिम्मत सभी है हारी ॥ ५ ॥
संगत बुरी का है फल । करमों का भी कुछ है बल ।
मन भी रहा है चंचल । हँगता रही है तारी ॥ ६ ॥
छुटते ही गुरु का संजोग । ज़ाहिर हुए ये सब रोग ।
बैरी लगे सब हम लोग । ज़िल्लत सही और ख़्वारी ॥ ७ ॥
पूछो ज़रा तुम उनसे । है धारी आशा जिनसे ।
निज धार द्वारे किन से । कब कैसे तुम सँभारी ॥ ८ ॥
वह धार अगर न वाँ है । ख़ाली जिसम बेजाँ है ।
क्यों उससे फिर गुमाँ है । मुश्किल हो हल तुम्हारी ॥ ९ ॥
झूठी है सब यह आसा । नाहक़ सहो तरासा ।
अब भी धरो दिलासा । सुनलो अरज़ हमारी ॥ १० ॥
उस धार की जहाँ पर । ख़बरें सुनों वहाँ पर ।
पहुँचो तुरत और जाकर । निरनय करो बिचारी ॥ ११ ॥
जो बात चित में अटके । लज्जा तनिक न करके ।
पूछो उसे बे खटके । जिज्ञासू रीति धारी ॥ १२ ॥
सचमुच जो गुरु पियारे । निज चरन वाँ पधारे ।
लें ऐसी मौज धारे । इक छिन में लें सँभारी ॥ १३ ॥
पर याद रखना एक बात । बहुतक करे हैं जो घात ।
पिछले तुम्हारे सँग साथ । और आस बास सारी ॥ १४ ॥
इन सब को अपने दिल से । गुरु की मेहर का बल ले ।
मन बुद्धि और अक़ल से । देओ सब को दूर डारी ॥ १५ ॥

यह सब जो चित सुहाई । सतगुरु होएँ सहाई ।
फिर धुर की मेहर पाई । नइया तरे तुम्हारी ॥ १६ ॥
यह बात मेरी मानो । खुश्का इसे न जानो ।
गुरु का समझ पयानो । साहब कहें पुकारी ॥ १७ ॥
सतसंग रीति धारो । संशय सभी बिसारो ।
हिम्मत ज़रा सँभारो । राधास्वामी ओट धारी ॥१८॥

---

## शब्द ६

सतगुरु मेरे पियारे । धुर घर से चल के आये ।
सुपने में दर्श देकर । चरनन लिया लगाये ॥ १ ॥
प्रेमी जनों के सँग में । कुछ दिन को रख अलग में ।
अभ्यास कुछ करा के । सन्मुख लिया बुलाये ॥ २ ॥
परदे में गहरे रख कर । चरचा वचन सुना कर ।
दृढ़ प्रीति चित बसा कर । सूरत दई जगाये ॥ ३ ॥
फिर ऐसी मौज धारी । गहरी दया बिचारी ।
योंही बहाना कर के । खुद घर पै अपने लाये ॥ ४ ॥
फिर ऐसी दृष्टि डाली । सूरत हुई बेहाली ।
परशाद थोड़ा देकर । मन को दिया सुलाये ॥ ५ ॥
क्या भाग मैं सराहूँ । क्या गुन तुम्हारे गाऊँ ।
दम दम यही पुकारूँ । राधास्वामी प्यारे पाये ॥ ६ ॥
धुर घर के तुम हो बासी । सतपुर्ष नाम रासी ।
अगम और अलख से होकर । गुरुरूप धर के आये ॥ ७ ॥
आरत लेऊँ सजाई । पलकन छड़ी लगाई ।
बीना की धुन बजा कर । राधास्वामी नाम गाये ॥ ८ ॥

अद्भुत बनी यह आरत । कल मल गई सब आफ़त ।
निज धाम की तैयारी । सूरत रही कराये ॥ ६ ॥

---

## शब्द ७

इतनी अरज़ हमारी । सुन लो पिता पियारे ।
चरनों में आ गिरा हूँ । मैं दास अब तुम्हारे ॥ १ ॥
मैं बाल कुछ न जानूँ । कैसे तुम्हें पहिचानूँ ।
अपनी परख दया कर । मुझ को देओ जनारे ॥ २ ॥
मन भी कुछ ऐसा मिलिया । सँग साथ ऐसे पड़िया ।
जिज्ञासा रीति तज कर । परीक्षा लई सँभारे ॥ ३ ॥
बहु भाँति धोखे खाये । मन ने भरम उठाये ।
बहुतक अक़ल लड़ाई । तुम को दिया बिसारे ॥ ४ ॥
कुछ मान बस में होकर । सँग दोष सिर पै चढ़कर ।
लिख लिख बचन पुराने । बहु भाँति झख मैं मारे ॥ ५ ॥
तुम मौज मैं न जानी । सँग साथ बस रहानी ।
परम अर्थ इसी को समझा । बिष का किया अहारे ॥ ६ ॥
अपनी फ़िकर को तज के । औरों की चिन्ता सिर पे ।
लेने लगा यह मूरख । रचना का सिर पै भारे ॥ ७ ॥
बिछड़ा तुम्हारे सँग से । बहने लगा सर्व अँग से ।
स्वामी तुम्हारा सेवक । भौजल में बिन तुम्हारे ॥ ८ ॥
यह हाल तुम ने देखा । अन्तर का हाल पेखा ।
फिर मेहर तुम को आई । सँग में लिया बुलारे ॥ ९ ॥

एक ताव मन को दीना । बहने लगा पसीना ।
फिर परचा एक देकर । पकड़ा भुजा पसारे ॥ १० ॥
कसरें मेरी जनाईं । तब होश मुझको आई ।
धन भाग मैं सराहा । तन धन दिया मैं वारे ॥ ११ ॥
चरनों का तब तुम्हारे । मिलने लगा आधारे ।
कुछ प्रीति चित में उमँगी । सुधि आइ निज भँडारे ॥ १२ ॥
अब आरती यह गाकर । बहु बिधि तुम्हें धियाकर ।
बिनती करूँ पुकारी । मन को देओ जगारे ॥ १३ ॥
कुछ ऐसी मौज धारो । अन्तर मिले सहारो ।
यह भीख मुझको दीजे । सतगुरु मेरे पियारे ॥ १४ ॥
हे दयाल मानो बिन्ती । दासी की मेटो चिन्ती ।
धुर घर की मेहर माँगूँ । राधास्वामी ओट धारे ॥ १५ ॥

## शब्द ८

राह रपटीली साईं घर दूर ॥ टेक ॥
गहरी नदियाँ मग बिच बहियाँ ।
करम भरम की छाई धूर ॥ १ ॥
पँच इन्द्री और पंच तत्त सँग ।
चहुँ दिस घूम रहा मन सूर ॥ २ ॥
पंच भूत मिल सबको लूटें ।
मार मार करें चकना चूर ॥ ३ ॥
कौन उपाय करूँ अब सजनी ।
कैसे चढ़ूँ निज धाम हजूर ॥ ४ ॥
सारी उमर मेरी रोवत बीती ।
जोबन मिल गया मेरा धूर ॥ ५ ॥

रोय रोय कर नैन गँवायो ।
चारों ओर भई मजबूर ॥ ६ ॥
कोउ न सुने मेरी किसे सुनाऊँ ।
कैसे होय मेरी आशा पूर ॥ ७ ॥
सतगुरु सन्त सिपाही सुनिये ।
आय पड़ी उन चरन हज़ूर ॥ ८ ॥
दोउ कर जोड़ करूँ बहु बिनती ।
बख़्श देव मेरे सभी क़सूर ॥ ९ ॥
हे समरथ हे पुरुष अनामा ।
ना जानूँ कोइ ढंग शऊर ॥१०॥
जस तस पकड़े तुम्हरे चरना ।
सब साखा तज गही निज मूर ॥११॥
हे सतगुरु मेरे राधास्वामी दाता ।
डारो दृष्टि मेहर भर पूर ॥१२॥
दीन दास अस निश्चय धारी ।
तुमते होय सब आशा पूर ॥१३॥

---

## शब्द ९

### होली

होली खेलन मन चाव ( सखी आज ) ॥टेक॥
धूम धाम हुइ धरन गगन में ।
आय रहे निज साव ॥
दया मेहर के बोरे सँग में ।
काल करम सिर लाद लदाव ॥ १ ॥

प्रेम प्रीति की भर भर थैली ।
सब के दई आज हाथ थमाव ॥
अबीर गुलाल भक्ति नाम का ।
आप रहे सिर माथ चढ़ाव ॥ २ ॥
सब सखियन सँग खुल२ खेलें ।
वार वार उन अंग लगाव ॥
मूरख जन कुछ खेल न जानें ।
शरम शरम रहे आँख चुराव ॥ ३ ॥
मस्त हुईं सखियाँ वेहाली ।
प्रेम प्रीति दोउ हाथ उड़ाव ॥
नैन कमल को वार देन हित ।
तन मन छोड़ गईं सिमटाव ॥ ४ ॥
अनहद बाजे अद्भुत बाजे ।
धमक धूम धम अधिक धमाव ॥
सत्तपुरुष ने आज्ञा दीनी ।
अलख अगम ढिग सीस नवाव ॥ ५ ॥
पहुँचीं जाय सब राधास्वामी धामा ।
चरन कँवल में गईं लिपटाव ॥
वार वार सब घूम घूम कर ।
चरन अम्बु में गईं समाव ॥ ६ ॥

---

## शब्द १०

### तराना

शेरो सखुन का गाना कोई हमसे सीख जाय ।
कहता हूँ एक तराना कोई हमसे सीख जाय ॥ १ ॥
दुनिया को सच समझ के तू ग़ाफ़िल है सो रहा ।
ग़ाफ़िल को अब जगाना कोई हमसे सीख जाय ॥ २ ॥
इस दूँ को दीन मानकर सब हो गये तबाह ।
दामन को अब छुड़ाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ३ ॥
महबूब की तलाश का गर तुझको शौक़ है ।
इसमें क़दम उठाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ४ ॥
मुर्शिद की आँख बीच से है रास्ता चला ।
उस आँख में समाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ५ ॥
आँखों की पुतली खींचकर कसकर कमान को ।
नावक का फिर चलाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ६ ॥
बहरे फ़ना को हैफ़ तू दारुल अमाँ कहे ।
दारुल अमाँ का जाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ७ ॥
कर ज़िक्र नाम का तू और आवाज़ का शग़ल ।
पुतली में तिल जमाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ८ ॥
ख़िदमत में अपने पीर की हाज़िर तू रह सदा ।
इसका इनाम पाना कोई हमसे सीख जाय ॥ ९ ॥
सोहबत का राधास्वामी की गर शौक़ हो गया ।
उनकी जुगत कमाना कोई हमसे सीख जाय ॥१०॥

## शब्द ११

सतगुरु मेरे पियारे । गुरुरूप धर के आये ।
एक छिन में आप मुझको । चरनन लिया लगाये ॥ १ ॥
मैं बाल सम अजाना । कुछ भेद तुम न जाना ।
सँग साथ सदही रह कर । मन सँग रहा भुलाये ॥ २ ॥
निज चरन तुम पधारे । औगुन मेरे बिसारे ।
भेद अपना खुल के गाया । चरनन लिया मिलाये ॥ ३ ॥
मैं भाग हीन भारी । इच्छा के बस दुखारी ।
अपनी सी सब करूँ मैं । पर पेश कुछ न जाये ॥ ४ ॥
करमों के अपने बस हो । देह ली मैं अब निरस हो ।
चरनों की ओर ताकूँ । जल्दी लेओ बुलाये ॥ ५ ॥
हे दयाल दाता सन्ती । चित धारो मेरी चिन्ती ।
ऐसी दया कराओ । औसर न जाने पाये ॥ ६ ॥
तुम द्वार का हूँ बासी । चरनों की धारी आसी ।
दीवाना हो पुकारूँ । निज मेहर तुम कराये ॥ ७ ॥
बहु भाँति जग फँसा हूँ । संसार में ग्रसा हूँ ।
चरनों से सूत लेकिन । दुहरा हो तुम लगाये ॥ ८ ॥
बहु भाँति बिन्ती भाखूँ । फिर तुम्हरी ओर ताकूँ ।
तुम्हरा इशारा समझा । सब दुख दिये बहाये ॥ ९ ॥
बड़ भाग मेरा जागा । चिन्ता भरम भी त्यागा ।
निज मेहर तुम बिचारी । अँग से लिया लगाये ॥ १० ॥
अँग अँग से अब हरख कर । चरनों पै सीस धर कर ।
राधास्वामी नाम गाऊँ । जिन आप मुझ चिताये ॥ ११ ॥

## शब्द १२

### होली

आज होली का खेल खेलाऊँ (सखी) ॥ टेक ॥

परम पुरुष राधास्वामी चरन से, प्रेम की धार बहाऊँ ।
करम भरम और कलमल सब की, चिन्ता दूर नसाऊँ ॥ १ ॥
आदि करम सिर धौल मार कर, करम की धूल उड़ाऊँ ।
सब सखियन को अंग संग ले, भवजल पार कराऊँ ॥ २ ॥
इन सखियन की महिमा भारी, सबको खोल जनाऊँ ।
मूरख जन कोई तान मारिहैं, इन पाई निज ठाऊँ ॥ ३ ॥
देर अबेर का भेद छोड़कर, सबहिन ले पहुँचाऊँ ।
लाल रंग सिर पर मल मल के, लालहि लाल दिखाऊँ ॥ ४ ॥
दया मेहर पिचकारी भर कर, चारों ओर चलाऊँ ।
भर भर कुमकुम भक्ति नाम के, घट घट माहिं फिकाऊँ ॥ ५ ॥
बीन बाँसरी ढोल धमक धुन, बजत रहे सब गाऊँ ।
राधास्वामी धाम की धुन अति झीनी, सब के हाथ गहाऊँ ॥ ६ ॥

---

## शब्द १३

### वसंत

आज देखो बहार बसन्त (सखी) ॥ टेक ॥

अबीर गुलाल की थाली कर ले,
आये पुरुष अचिन्त ।
दया मेहर से परचे देकर,
कीन्हा सबको आज निचिन्त ॥ १ ॥

जाँच परख की धूल गर्द में,
　　वहुतक रहे थे थाक थकन्त ।
सबकी चिन्ता तुम मन धारी,
　　कहा भेद सब खोल कथन्त ॥ २ ॥
सोइ सखियाँ हुईं अति बड़भागी,
　　जिन सिर हाथ धरे निज कन्त ।
गति मति कैसे भाख सुनाऊँ,
　　फूल फूल रही फूल वसन्त ॥ ३ ॥
उमँग उमँग जिय लोट पोट होय,
　　नैनन नीर बहे बे अन्त ।
मौज चौज कुछ वार न पारा,
　　तन मन धन सब वार धरन्त ॥ ४ ॥
धूम मची अब चार लोक में,
　　दयाल देश भी जान पड़न्त ।
त्रिकुटी सुन और भँवर गुफा मध,
　　वहुविधि रहे आज साज सजन्त ॥ ५ ॥
सत्तपुरुष और अलख अगम सब,
　　ठाढ़ रहे निज घट के पन्थ ।
धन धन राधास्वामी पुरुष दयाला,
　　आप रची जिन आय बसन्त ॥ ६ ॥

---

## शब्द १४

राधास्वामी दयाल सरन की महिमा ।
सतसंगी मिल गाय रहे री (आज) ॥टेक॥
चरन कमल में सीस नवाकर ।
भक्ति दान सब पाय रहे री ॥ १ ॥
काल करम की तपन गई अब ।
प्रेम के बदला छाय रहे री ॥ २ ॥
अमीं की बुँदियाँ बरषन लागीं ।
मल मल के सब न्हाय रहे री ॥ ३ ॥
मल मल मैल गई जिन जिन की ।
उनको अंग लगाय रहे री ॥ ४ ॥
दया मेहर की दृष्टी भर भर ।
चहुँदिस आप घुमाय रहे री ॥ ५ ॥
जग ब्योहार असार छुड़ाकर ।
भक्ती रीति सिखाय रहे री ॥ ६ ॥
जगत जीव कुछ मरम न जानें ।
करमन बस भरमाय रहे री ॥ ७ ॥
जिन जिन भाग बड़ा गुरुकिरपा ।
सोइ निज भाग जगाय रहे री ॥ ८ ॥
ऐसी लीला राधास्वामी धारी ।
सहज में बन्द खुलाय रहे री ॥ ९ ॥
दास दासी सब अमर होय कर ।
अमरा पुरी को धाय रहे री ॥१०॥

## शब्द १५

राधास्वामी सतगुरु सरन पड़ा री।
राधास्वामी सतगुरु चरन गहा री ॥ १ ॥
राधास्वामी सतगुरु आन मिले री।
राधास्वामी संगत काज सरे री ॥ २ ॥
राधास्वामी महिमा सुनी अति भारी।
राधास्वामी सतगुरु दई दरसा री ॥ ३ ॥
राधास्वामी गुन को गाय सके री।
राधास्वामी बिन सब थाक रहे री ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्रेम के निज भण्डारी।
राधास्वामी प्रेम से रची रचना री ॥ ५ ॥
सत चित आनंद यह गुन भारी।
और चौथे परकाश अपारी ॥ ६ ॥
ये चारो मिल प्रेम कहा री।
प्रेम धार के अँग ये चारी ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरनन उठी एक धारी।
प्रकट भई तब गुप्त दशा री ॥ ८ ॥
राधास्वामी धुन प्रगटी पुन आ री।
रचन रची स्वामी अस सारी ॥ ९ ॥
रा अस्थूल अंग दिया झाड़ी।
धा पुनि सूक्ष्म दिया झटका री ॥१०॥
स्वा ने दीन्हा रूप बना री।
मी दिया केन्दर मध्य समा री ॥११॥

पिण्ड अस्थूल देश हुआ न्यारी ।
ब्रह्मँड सूक्षम हुआ खड़ा री ॥१२॥
दयाल देश में रूप भरा री ।
पुरुष अनामी पद में समा री ॥१३॥
वाह वाह क्या भेद भखा री ।
वेद कितेब रहे सब हारी ॥१४॥
सूरत मन और रचना सारी ।
राधास्वामी नाम मिल साख दिया री ॥१५॥
राधास्वामी दयाल की महिमा भारी ।
गाय रहूँ मैं सन्मुख ठाढ़ी ॥१६॥

## शब्द १६

चहुँ दिस आग लगी, जग जीव बिचारे,
करमों के मारे, रहे जग धार बहाई रे ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ १ ॥
मेरे भाग जगे, प्यारे सतगुरु मिले,
मोहिं चरनन लेके, बहु गोद खेलाई रे ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ २ ॥
मेरी उमँग बढ़ाई, मन दिया जगाई,
कुछ कीन बड़ाई, मन रहा मस्ताई रे ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ३ ॥

सतसंगी सारे, सब छोट दिखा रे,
सिर चढ़ा अहंकारे, कुछ कहा न जाई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ४ ॥

औगुन अपने भूला, चित बहुबिधि फूला,
मान वड़ाई भूला, तुम दिया बिसराई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ५ ॥

मन का धोखा खाया, ऐसा घूम घुमाया,
मन विच यही समाया, मुझ सम और न काई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ६ ॥

जव तुम दया विचारी, मोहिं दिया जगा री,
चित से हुआ दुखारी, बहुविधि रहा शरमाई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ७ ॥

अव तुम मोहिं सँभारो, मेरी दया बिचारो,
मैं दुखिया अति भारो, अब तुम सरनाई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ८ ॥

दृष्टि मेहर की कीजे, चित चरनन लीजे,
औसर जाने न दीजे, हूजे बेग सहाई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥ ९ ॥

गुरु यह दास तुम्हारा, छिन छिन रहा बलिहारा,
राधास्वामी नाम सँभारा, दम दम रहा गुन गाई रे।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी प्यारे
राधास्वामी रे ॥१०॥

---

## शब्द १७

मैं तो आय फँसी परदेस,
कोई घर की खबर जनाओ रे।
प्रेम नगर मेरे पिया बिराजें,
कोइ प्रेम की डगर खुलाओ रे ॥ १ ॥
मैं तो सोय रही बेहोश,
कोइ होश की दवा कराओ रे।
मेरा लुट गया सब ही माल मता,
कस होवेगा मेरा निबाहो रे ॥ २ ॥
नौ द्वारन में भरमत भरमत,
भूल गई सब दाओ रे।
रैन दिवस मेरी यही पुकारी,
कोइ दसवाँ द्वार खुलाओ रे ॥ ३ ॥
संतमते की महिमा भारी,
सुन सुन हुआ मन चाओ रे।
पर सतगुरु बिन काज न रत्ती,
कोइ सतगुरु संग मिलाओ रे ॥ ४ ॥

करनी धरनी सब हम कीन्ही,
पेश तनिक नहिं जाओ रे।
घट के बैरी सदा बिरोधी,
निस दिन रहे भरमाओ रे॥ ५॥
आज सखी कुछ औसर अद्भुत,
प्रेम रहा मन छाओ रे।
ज्ञान बिरह सन्तोष सीलता,
घट में रहे बसाओ रे॥ ६॥
करम भरम की धूल उड़ानी,
सतगुरु दरश दिखाओ रे।
मलयागिरि की आई सुगन्धी,
सुरत रही अब धाओ रे॥ ७॥
अलख अगम पहुँची मतवाली,
सबको सीस नवाओ रे।
राधास्वामी सतगुरु किरपा चीन्ही,
तबहि पड़ा मेरा दाओ रे॥ ८॥

---

## शब्द १८

दीन दुखी होय आज, हे सतगुरु हम दास मिल।
सीस चरन पर राख, बार बार बिनती करें॥ १॥
उट्ठें लहर अपार, भवजल गहिर गँभीर मध।
ज़हर क़हर की धार, इस रचना सिर पर गिरे॥ २॥

गहरी दया विचार, हे समरथ पूरन धनी ।
देश्रो कष्ट निवार, काल करम की धार के ॥ ३ ॥
तुम्हरी सरन अडोल, हम दासन ने दृढ़ गही ।
तुम्हरी मेहर अतोल, कस मुख से वर्नन करें ॥ ४ ॥
चरन कमल की छायँ, हे दाता तुम निज दई ।
क्या गुन तुम्हरे गायँ, आप मिले तुम आन कर ॥ ५ ॥
ऐसी मेहर कराय, हम चित अब डोले नहीं ।
भौजल पार लँघाय, तुम चरनन में वास हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल, परम पुरुष पूरन धनी ।
निस दिन करो सँभाल, जब लग बेड़ा पार हो ॥ ७ ॥
मान लेव मेरे साइयाँ, एती अरज़ हमार ।
नेकहु बिलँब न कीजिये, चरन सरन बलिहार ॥ ८ ॥

---

## शब्द १९

कोइ नज़र न आवे, कासे कहूँ मैं बात री ॥ टेक ॥
सतगुरु महिमा मूल वस्तु जो, काहू न चित्त बसात री ।
पिछली टेक अहंकार ईरषा, सब जग रहे भरमात री ॥१॥
कैसे भौजल पार लँघावें, चरनकमल होय बास री ।
यही सोच सब मन में धारी, जतन न कोइ पतियात री ॥२॥
सतगुरु स्वामी सदा के संगी, खोल कहें विख्यात री ।
बिन गुरुभक्ती और बिन सतसँग, काहू न काज बनात री ॥३॥
कुल की भक्ती सेवा कुल की, काहू न संग मिलात री ।
अन्तर बाहर बिन निज धारा, नेक न पंथ चलात री ॥४॥

तुम्हरी चिन्ता अधिक सतावे, तासे कहूँ सुनात री।
छोड़ छाड़ सब अक़ल बुद्धि बल, सतसँग मेल मिलात री ॥५॥
या जुक्ती बिन और न दूसर, काहू न चित्त समात री।
राधास्वामी चरन दृढ़ पकड़ो, औसर बीता जात री ॥६॥

---

## शब्द २०

लाग री मेरी सुरत सहेली, गुरु के चरन में लाग री ॥टेक॥
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया, जाग उठा तेरा भाग री ॥१॥
सेवा करो वचन चित धारो, गाओ मंगल राग री ॥२॥
मान बड़ाई टेक और पच्छा, इन सब चित से त्याग री ॥३॥
दीन हीन मान अपने को, गुरु की सरन में पाग री ॥४॥
अस औसर बिन मेहर न पैहो, गुरु से मेहर ले माँग री ॥५॥
मेहर करें गुरु चरन लगावें, बख़्शें सरन अनुराग री ॥६॥
बीन बाँसरी तोहिं सुनाकर, मारें काला नाग री ॥७॥
सत्तपुरुष की आज्ञा लेकर, अलख अगम को भाग री ॥८॥
राधास्वामी दयाल मेहर से, पाओ अटल सुहाग री ॥९॥

---

## शब्द २१

सुरतिया धूम मचाय रही, गुरु चरन भरोसा धार ॥टेक॥
जग बिच भूल पड़ी अस भारी, कहत न आवे वार।
पिछली टेक और नेम अचारा, अटक भटक संसार ॥ १ ॥
ऐसे मूरख मन के मौजी, समझ बूझ सब हार।
सन्त मते की चाल बिसारी, टेक पच्छ लइ धार ॥ २ ॥

भजन ध्यान और भक्ति नाम को, सबहिन दिया बिसार।
सतगुरु को रहे पीठ दिखाई, मन की ओट सँभार ॥ ३ ॥
देख देख अस हाल जगत का, उमँगत दया अपार।
खोल खोल सब धूल उड़ावत, संशय भरम निवार ॥ ४ ॥
बचन बान अस कस कस मारत, गया कलेजा फाड़।
गुरु भक्ती और महिमा गुरु की, सतसँग सेवा सार ॥ ५ ॥
बार बार अस हेला मारत, गावत गला पसार।
अटक भटक सब मन की तज कर, चरन गहो आधार ॥ ६ ॥
जागो रे जागो जीव अभागी, काल करम बरियार।
रात दिवस सब जग को लूटें, जल्दी हो हुशियार ॥ ७ ॥
आँखें खोलो ग़फ़लत छोड़ो, भक्ती रीति सँभार।
सतसँग खोजो सतगुरु खोजो, भरम भूल सब टार ॥ ८ ॥
यह इस्तग़ना भली न जानो, मानो बचन हमार।
अब नहिं चेतो बहु पछतैहो, रोवोगे सिर मार ॥ ९ ॥
राधास्वामी कहत पुकारी, सुन लो मूढ़ गँवार।
अब नहिं मानो सिर धुन रोवो, सहो करम की मार ॥ १० ॥

---

## शब्द २२

कौन सके गुन गाय री, मेरे गुरु प्यारे के ॥ टेक ॥
अगम अलख सत भँवर डगर होय, सुन्दर रूप धराय री ॥ १ ॥
जग बिच आये फाग रचाया, हंसन खेल खिलाय री ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति के कुमकुम भर भर, चारो ओर फिंकाय री ॥ ३ ॥
सतजुग त्रेता द्वापर बीते, काहु न यह दिन पाय री ॥ ४ ॥

आज दिवस सखि औसर अद्भुत, सतगुरु मेल मिलाय री ॥५॥
प्रेम की थाली लेकर ठाढ़ी, बिरह की जोति जगाय री ॥ ६ ॥
तन मन धन सब वार धराये, भक्ति नाम फल पाय री ॥ ७ ॥
जनम जनम की मारी पीटी, आरति लीन सजाय री ॥ ८ ॥
अनहद बाजे सुन सुन रीझूँ, कलमल दूर बहाय री ॥ ९ ॥
सत्तपुरुष और अलख अगम भी, देख देख मुसकाय री ॥१०॥
पहुँची जाकर राधास्वामी धामा, बिछुड़े पिया मैं पाय री ॥११॥
धाय धाय चरनन लिपटानी, रोम रोम हरषाय री ॥१२॥
प्रेमसंजोग मिला अब भारी, सतगुरु मेहर कराय री ॥१३॥

---

## शब्द २३

मेरी लिव लागी प्यारे चरन में ॥टेक॥
बिरह कटारी कस के मारी ।
घायल होय जा गिरी पगन में ॥ १ ॥
तन मन की सब सुद्धि भुलानी ।
आगी लगी मेरी रगन रगन में ॥ २ ॥
सखी सहेली बहु समझावें ।
मैं हुई बौरी प्यारे लगन में ॥ ३ ॥
कोई न बूझे मेरे घट की ।
दौड़ी फिरूँ मैं धरन गगन में ॥ ४ ॥
घायल की गति घायल समझे ।
कस कोइ लावे वाहि कथन में ॥ ५ ॥

जोती देख पतंगा घायल ।
बुलबुल घायल फिरे चमन में ॥ ६ ॥
मिरगा घायल सुन धुन बीना ।
या मैं घायल प्यारे लगन में ॥ ७ ॥
हंस बिथा को हंसहि जानें ।
आय पड़े जो प्यारे सरन में ॥ ८ ॥
वह क्या परखें हमरी बतियाँ ।
अटक रहे जो जनम मरन में ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम पुकारूँ ।
आय मिलें कस मोहिं बदन में ॥ १० ॥

---

## शब्द २४

कौन सके गुन गाय तुम्हारे ।
कौन सके गुन गाये जी ॥ टेक ॥
कामी क्रोधी लोभी हम से ।
चरनन आन मिलाये जी ॥ १ ॥
औगुन हमरे चित नहिं धारे ।
धुर की मेहर कराये जी ॥ २ ॥
भजन ध्यान कुछ हम नहिं कीन्हा ।
ना कुछ कार कमाये जी ॥ ३ ॥
जतन जुक्ति हम कुछ नहिं कीन्ही ।
ना कुछ कीन उपाये जी ॥ ४ ॥

सच्ची कच्ची भक्ती करते ।
एक चरन लिव लाये जी ॥ ५ ॥
कौन करम हम ऐसा कीन्हा ।
आज साहब घर आये जी ॥ ६ ॥
बड़े भाग जागे हम सब के ।
चरनन माहिं समाये जी ॥ ७ ॥
दयालदास यह विनती करते ।
चरनन सीस नवाये जी ॥ ८ ॥
ऐसी किरपा हम पर कीजे ।
चरन छूट नहिं जाये जी ॥ ९ ॥
निस दिन आस दरस की तुम्हरे ।
चित में रहे बसाये जी ॥१०॥
राधास्वामी दयाल चरन की ।
महिमा निस दिन गाये जी ॥११॥

---

## शब्द २५

राधास्वामी गुरु दातार । प्रगटे संसारी ॥ १ ॥
राधास्वामी सद किरपाल । मिले मोहिं देह धारी ॥ २ ॥
राधास्वामी गुरू हमार । चरनन बलिहारी ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम आधार । सुर्त ने लिया धारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी रूप निहार । सुरत हुई मतवारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी धुन झनकार । घट में झनकारी ॥ ६ ॥
मेरे रोम रोम हरषाय । हिय जिय दोउ वारी ॥ ७ ॥

तन मन की सुधि बिसराय। घर की सुधि पा री ॥ ८ ॥
सुर्त भागी उमँग जगाय। पहुँची जाय पारी ॥ ९ ॥
अलख अगम रहे वार। चरनन लिपटा री ॥ १० ॥
मोहिं मिल गये प्रेम भँडार। राधास्वामी दरबारी ॥ ११ ॥
यह गति बिरले पायँ। गहें गुरु सरना री ॥ १२ ॥
राधास्वामी लें अपनाय। जस तस दया धारी ॥ १३ ॥

---

## शब्द २६

मेरे दरद उठे हिय माहिं।
दरश कैसे पाऊँ री ॥ टेक ॥
लहर उठें घन्नाटी आवे।
कैसे पीड़ सुनाऊँ री ॥ १ ॥
रैन दिवस मोहिं कल नहिं चैना।
केहि बिधि तपन बुझाऊँ री ॥ २ ॥
भजन ध्यान और सुमिरन कर के।
बहुबिधि मन समझाऊँ री ॥ ३ ॥
समझ बूझ मेरी सब थक हारी।
समझ कैसे लाऊँ री ॥ ४ ॥
हार पड़ी अब छोड़े जतना।
सतसँग सुरत लगाऊँ री ॥ ५ ॥
हाथ जोड़ नित बिनती लाऊँ।
औगुन देख लजाऊँ री ॥ ६ ॥

हे सतगुरु मेरी दया बिचारो ।
नैनन नीर बहाऊँ री ॥ ७ ॥
जस चाहो मोहिं दरशन दीजे ।
तुम बिन ठौर न ठाऊँ री ॥ ८ ॥
राधास्वामी की ओटा गहकर ।
चरनन माहिं समाऊँ री ॥ ९ ॥
एक भरोसा राधास्वामी नामा ।
नामहिं नाम धियाऊँ री ॥१०॥
नाम मिला परसादी पाई ।
सतगुरु के गुन गाऊँ री ॥११॥

---

## शब्द २७

मेरे समझ पड़ी मन माहिं ।
जगत सब सुपना रे ॥ टेक ॥
जग की दौलत धाम बड़ाई ।
यह सब छोड़ के मरना रे ॥ १ ॥
दौलत इज़्ज़त अक़ल हुकूमत ।
अव्वल आख़िर तजना रे ॥ २ ॥
बिन सतगुरु बिन भक्ति नाम के ।
रोय रोय कर खपना रे ॥ ३ ॥
चेत करो हे बौरे मूरख ।
एक दिन तुमको भी चलना रे ॥४ ॥

देह फुलाय फूल बहु बैठा ।
अगनी पड़े तोहिं जलना रे ॥ ५ ॥
सतसँग सार की महिमा भारी ।
काहे नहीं चित धरना रे ॥ ६ ॥
बार बार तोहिं कहूँ बुझाई ।
मानो सतगुरु वचना रे ॥ ७ ॥
बिन गुरुभक्ती राधास्वामी नामा ।
और नहीं कुछ जतना रे ॥ ८ ॥

---

## शब्द २८

कोई सुनो गुरू के निज बचना ॥ टेक ॥
या जग में रहे घोर अँधेरा ।
घोर अँधेरे जग जलना ॥ १ ॥
छूटन की कोइ जुक्ती धारो ।
बहुत पड़े नहिं सिर धुनना ॥ २ ॥
कूच नक़ारा सिर पर गाजे ।
आज नहीं तो कल चलना ॥ ३ ॥
याते समझो चेतो भाई ।
समझ सोच कर चित धरना ॥ ४ ॥
दीन ग़रीबी चित में धारो ।
हँगता ममता दोउ तजना ॥ ५ ॥
खोज करो तुम गुरु की संगति ।
जाय पड़ो फिर उन चरना ॥ ६ ॥

गुरु की किरपा काज बनावे ।
मेल मिलावे निज चरना ॥ ७ ॥
दया करें जब सतगुरु तुझपर ।
मेहर से बख़्शें निज सरना ॥ ८ ॥
करनी तुझसे तब बन आवे ।
छिन छिन भाग रहे जगना ॥ ९ ॥
मन बैरी भी बस में होकर ।
छोड़ देय सब सिर खपना ॥ १० ॥
मस्त होय कर उन चरनन में ।
रैन दिवस तुम रहो खिलना ॥ ११ ॥
खेलत खेलत धुर घर पहुँचो ।
अलख अगम दोउ रहें हँसना ॥ १२ ॥
राधास्वामी दयाल मेहर तब परखो ।
मस्त होय सुत रहे मगना ॥ १३ ॥
समझ सोच जिन यह मन धारी ।
कारज उनहीं के सरना ॥ १४ ॥
जीवन्मुक्त होय वह बरतें ।
फ़तह का झंडा उन गड़ना ॥ १५ ॥
चरन भरोसा चित में दृढ़ कर ।
राधास्वामी नाम रहें जपना ॥ १६ ॥

---

## शब्द २९

सखी आज देखो बहार नई ॥ टेक ॥

भक्ति भाव मेरे हिय बिच जागे, प्रेम का रंग चढ़ी ।
शील संतोष और बिरह अनुरागा, इन सब थान गड़ी ॥ १ ॥
नाम गुरू का छिन छिन गाती, चरन सरन की आस बढ़ी ।
प्रेमी सुरत होय मगनानी, सुरत शब्द अभ्यास करी ॥ २ ॥
दयाल देई अस जुक्ति बताए, चन्दा संग पई ।
फोड़ अकाशा आगे चढ़ती, त्रिकुटी गढ़ भी जाय लई ॥ ३ ॥
हंस क़िले पर देखन आए, शोभा अद्भुत आज नई ।
चरनआधारी भक्तसहेली, देख देख मुसकाय रही ॥ ४ ॥
गुरु किरपा से पहुँची सतपुर, सत्तपुरुष के दरश लई ।
अलख अगम निज किरपा कीन्ही, साहबप्यारी पार गई ॥ ५ ॥
भक्ति जवाहिर अद्भुत पाये, हीरा रतनी वार धरी ।
सदा सरन में रहे मतवारी, नाम अमींरस चाख रही ॥ ६ ॥
ऐसी किरपा राधास्वामी धारी, सहज़ सुरत निज धाम गई ।
कहन सुनन की यह नहिं वतियाँ, जो जाने सो मान लई ॥ ७ ॥

---

## शब्द ३०

गुरू मोहिं लेव आज अपनाई ॥ टेक ॥

तुम्हरे दर की हूँ मैं चेरी ।
निस दिन तुम गुन गाई ॥ १ ॥
नीच ऊँच सब सेवा करती ।
मन और सुरत लगाई ॥ २ ॥

चरन दबाऊँ बस्तर झाड़ूँ ।
जो जो तुम बतलाई ॥ ३ ॥
सेवा करनी मैं नहिं जानूँ ।
अपनी मेहर से आप कराई ॥ ४ ॥
एक भरोसा तुम्हरे चरना ।
निस दिन हिरदय छाई ॥ ५ ॥
प्रेम की चिनगी तुम किरपा कर ।
घट मेरे में आप धराई ॥ ६ ॥
अब तुम दया बिचारो ऐसी ।
हरदम रहे सुलगाई ॥ ७ ॥
अटक भटक और कलमल जग की ।
जल जल सब जल जाई ॥ ८ ॥
तब मैं समझूँ मैं भइ तुम्हरी ।
और तुम मुझको लिया अपनाई ॥ ९ ॥
गुरु देई तुम शिक्षा निज अपनी ।
अब आपहि कार कराई ॥ १० ॥
एक बात मेरे निश्चय जमती ।
और समझ सब गइ बिसराई ॥ ११ ॥
जब लग किरपा गुरु की न होई ।
कोई न बात बन आई ॥ १२ ॥
दीन दुखी होय मेहर अब माँगूँ ।
हे राधास्वामी मेहर कर आई ॥ १३ ॥
सबकी आशा पूरन करते ।
मेरी भी आस पुराई ॥ १४ ॥

राधास्वामी दीन दयाला।
जल्दी होश्रो सहाई ॥ १५ ॥
इस दासी की बिनती मानो।
जल्दी लेश्रो अपनाई ॥ १६ ॥

---

## शब्द ३१

सुन प्यारी मैं कहूँ जनाई ॥ टेक ॥
तुम चिन्ता मम हिरदय बसती।
तुम क्यों रहो घबराई ॥ १ ॥
धीरज धरो करो बिश्वासा।
सूरत चरन लगाई ॥ २ ॥
छोड़ छाड़ सब जगत बखेड़ा।
सतसँग मेल मिलाई ॥ ३ ॥
अनेक रूप मैं आप धार कर।
तुम को लेउँ अपनाई ॥ ४ ॥
अपना भेद आप मैं गाया।
आपहि चल कर आई ॥ ५ ॥
आप आय कर जीव चिताये।
आपहि संग लगाई ॥ ६ ॥
आपहि जुक्ती सबको दीन्ही।
आपहि कार कराई ॥ ७ ॥
काल करम का तुम सिर क़रज़ा।
आपहि रहा चुकाई ॥ ८ ॥

रोग सोग सब चिन्ता सगरी ।
करमहिं भोग रहाई ॥ ९ ॥
कोइ दिन रोग सोग मिट जावें ।
देर नहीं जल्दी भुगताई ॥ १० ॥
अब तो तुमको ऐसा चहिए ।
चित से भरम नसाई ॥ ११ ॥
सतगुरु सेवा साध की संगति ।
निस दिन करो कमाई ॥ १२ ॥
गुरुभक्ती सब काज बनावे ।
शब्द की धार गहाई ॥ १३ ॥
सुन सुन धुन मन मरता जावे ।
सुरत होय अलगाई ॥ १४ ॥
अलग होय सुर्त गगन चढ़ावे ।
दसवाँ द्वार खुलाई ॥ १५ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर पहुँचे ।
अलख अगम दरसाई ॥ १६ ॥
धार अगम तोहिं लेवन आवे ।
राधास्वामी संग मिलाई ॥ १७ ॥
अपनी कर तोहिं अंग लगाऊँ ।
चरनन लेउँ लिपटाई ॥ १८ ॥
धीरज धर अब चित में प्यारी ।
जस तस मन समझाई ॥ १९ ॥

हाकिम हुकम कहा यह मानो।
राधास्वामी सरन समाई ॥२०॥

## शब्द ३२

सतगुरु के निज पियारे, किस सोच में रहाये ॥टेक॥
राधास्वामी मत में होकर, समरथ की ओट गहकर।
उपदेश उनका लेकर, क्या सोच मन में लाये ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम अपारा, समरथ पुरुष दयारा।
जुक्ती सरब का सारा, सतगुरु सदा सहाये ॥ २ ॥
सोचो तो अपने चित में, कब किसने इस जगत में।
पाये थे अस मुफ़त में, सामाँ सभी जो गाये ॥ ३ ॥
सामाँ यह किन सजाये, औसर यह किन मिलाये।
परतीति किन दिलाये चरनन लिया लगाये ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु, निज मेहर धारी निज उर।
जीवन की चिन्ता लेकर, गुरु रूप धर के आये ॥ ५ ॥
जो बात यह सही है, किस चीज़ की कमी है।
जब प्रीति उन लगी है, चिन्ता कहाँ रहाये ॥ ६ ॥
पड़ना न मन के बस में, बैरी बड़ा यह घट में।
मत आना इस झपट में, गुरु प्रीति चित बसाये ॥ ७ ॥
बहु भाँति धोखे देगा, उलटी समझ गहेगा।
अपनी सी सब करेगा, कर कर के मर यह जाये ॥ ८ ॥
जुक्ती जो गुरु बताई, उसको लो चित बसाई।
निस दिन करो कमाई, सूरत चरन लगाये ॥ ९ ॥

निज मेहर वह करावें, सँग साथ में रखावें ।
दृढ़ प्रीति फिर जगावें, बन्धन सभी कटाये ॥१०॥
वड़ भाग जिनके जागें, सतगुरु चरन वे लागें ।
जग पीठ देके भागें, सतसंग में समाये ॥११॥
सतसंग की वहारी, बचनों की धार जारी ।
अम्मृत की वरषा न्यारी, पी पी अमीं अघाये ॥१२॥
गुरु आप वख़्शें संजोग, तन मन के बिनसें सब रोग ।
हँस खेलते ही सब लोग, धुर घर की ओर जाये ॥१३॥
सतगुरु की निज यह साखी, बिश्वास मन में राखी ।
राधास्वामी नाम भाखी, उन रूप नित धियाये ॥१४॥
राधास्वामी नाम की धुन, राधास्वामी मेहर से सुन ।
राधास्वामी पड़ के चरनन, राधास्वामी में समाये ॥१५॥

---

## शब्द ३३

मेरी सुनो पुकार हे गुरु प्यारे ॥टेक॥

जग व्योहार असार देख कर ।
और झगड़े सब संसारे ॥ १ ॥

चित अकुलात रहे दिन राती ।
किस बिधि होय जिव छुटकारे ॥ २ ॥

निसदिन सोच सतावत यहही ।
कौन जुगति अब लेउँ धारे ॥ ३ ॥

पिछली टेक और कुल की पूजा ।
अटक भटक रहे जिव सारे ॥ ४ ॥

कठिन भयो अब जीव छुड़ावन ।
हाथ पैर सब दिये डारे ॥ ५ ॥

खोल खोल सब जीव सुनाया ।
धोखे मन के कहे गा रे ॥ ६ ॥

पर अस जाल पड़ा अति भारी ।
भूल भरम और अहंकारे ॥ ७ ॥

कोई न चित से मेरी सुनता ।
जो सुनते नहिं चित धारे ॥ ८ ॥

अटक छोड़ते जिवसा जावे ।
भटक भटक रहे झख मारे ॥ ९ ॥

ऐसी दशा निहार जगत की ।
उमँग उठे चित में भारे ॥ १० ॥

उमँग उमँग चित विनती उठती ।
हे राधास्वामी गुरु प्यारे ॥ ११ ॥

परम पुरुष तुम सदा दयारा ।
खोल देव निज भंडारे ॥ १२ ॥

गहरी दया विचारो प्यारे ।
सब जिव रहे महा दुखियारे ॥ १३ ॥

जब लग मेहर न धुर की होई ।
कैसे कटें जिव जंजारे ॥ १४ ॥

हे स्वामी हे पिता दयाला ।
हे प्रीतम हे पिया प्यारे ॥ १५ ॥

जस तस मेहर अब धुर की कीजे।
भूल भरम जग जाँय सारे ॥ १६ ॥
बिरह खोज और सुमति दीनता।
इन सब का होय उजियारे ॥ १७ ॥
दासन दास करे यह बिनती।
सीस चरन तुम दिया डारे ॥ १८ ॥
तुम्हरी भक्ती सब जिव धारें।
अटक भटक बिनसें सारे ॥ १९ ॥
आरति तुम्हरी सब मिल गावें।
चरन कमल पर बलिहारे ॥ २० ॥
हे स्वामी मेरी यह अभिलाषा।
पूरी करो निज दया धारे ॥ २१ ॥
पिंड अंड सब अगनी लागे।
सुरत चढ़े सत दरबारे ॥ २२ ॥
सत्तपुरुष की आयस लेकर।
अलख अगम के ढिंग जा रे ॥ २३ ॥
आगे चल कर गहे निज चरना।
परस चरन होय मतवारे ॥ २४ ॥
हे राधास्वामी तुम्हरी मेहर से।
तुम चरनन मिले आधारे ॥ २५ ॥

---

## शब्द ३४

सतगुरु खोज करो मेरी सजनी। औसर बीता जाय। १।
या जग में कोइ मीत न साँचा। स्वारथ जग लिपटाय। २।
नाना बिधि तोहि धोखे देकर। अपना उदर भराय। ३।

जब लग उनकी मति तू धारे। सब रहे मेल मिलाय ॥ ४ ॥
हानि करें तेरी और अपनी। भूल भरम भरमाय ॥ ५ ॥
जब सच्चा होय चले डगर गुरु। रल मिल रोकें आय ॥ ६ ॥
नाम धरें बहु बातें मारें। जहँ लग पार बसाय ॥ ७ ॥
अस हितकारी कहो कौन होय। जो यह जाल कटाय ॥ ८ ॥
सतगुरु संतहि निज हितकारी। उन बिन और न काय ॥ ९ ॥
जीव दया निज हिरदय धर के। जग बिच प्रगटें आय ॥१०॥
जीव भार बहु अपने सिर ले। जीव का बन्द छुड़ाय ॥११॥
भेद भाव निज घर का देकर। प्रीति प्रतीति जगाय ॥१२॥
घर चलने की जुक्ति बतावें। चरनन लें लिपटाय ॥१३॥
नाना बिधि तेरी रच्छा करके। निज घर दें पहुँचाय ॥१४॥
ताते तुमको ऐसा चहिये। सतगुरु खोज कराय ॥१५॥
खोज उन्हें निज चरनन लागो। हिरदे उमँग बसाय ॥१६॥
सुरत शब्द की जुक्ती लेकर। निस दिन कार कमाय ॥१७॥
सतसँग सेवा दिन प्रति धारो। ले निज भाग जगाय ॥१८॥
चरन अनुराग हिये तेरे जागे। घट का तिमिर नसाय ॥१९॥
चरनसहेली होय सुर्त प्यारी। आनँद मंगल गाय ॥२०॥
निज घट की तब बाट चलावे। तन मन वार रहाय ॥२१॥
नामसँवारी सुर्त फिर चढ़ कर। दसवाँ द्वार खुलाय ॥२२॥
सोहँग सत्त और अलख अगम लख। राधास्वामी चरन समाय
सतगुरु महिमा है अस भारी। सहजहि निज घर पाय ॥२४॥
समझ बूझ ले अबही प्यारी। यह दम फिर नहिं आय ॥२५॥
राधास्वामी से गुरु मिलें न कबही। सोच समझ गठियाय २६

## शब्द ३५

### होली

ऐसी होली रचाई ( दयाल ने ) ॥टेक॥
यह संसार तिमिर का देशा, रैन अँधेरी छाई ।
माया काल शिकारी मिलकर, गहरे जाल बिछाई ।
बहुतक जीव फँसाई ॥ १ ॥
जीव बिचारे दीन दुखारी, अपनी सी बहुत कराई ।
हार हार सबही थक हारे, नेकहु पेश न जाई ।
करम सिर भार बढ़ाई ॥ २ ॥
ऐसी दशा देख गुरु प्यारे, धुर की मेहर कराई ।
भवन छोड़ निज भौजल आये, सतगुरु रूप धराई ।
सत्त का सूर उगाई ॥ ३ ॥
सत्त सूर के उदय होत ही, जग का तिमिर नसाई ।
सत्त शब्द का हुआ उजियारा, सोवत जीव जगाई ।
काल का जाल कटाई ॥ ४ ॥
आलस नींद तजी जिन जीवन, जुड़ मिल गुरु ढिग जाई ।
सुन सुन गुरु प्यारे के बचना, धीरज मन बिच लाई ।
मेहर की परख कुछ पाई ॥ ५ ॥
धीरज धर मन किया गुरुसंगा, जस तस मेल मिलाई ।
सुरत लगा कुछ करनी कीन्ही, जस जस गुरु बतलाई ।
मेहर तब गहरी पाई ॥ ६ ॥

अटक भटक सब मन की छूटी, प्रेम गया घट छाई ।
सतगुरु संग लगे अति प्यारा, चरनन बलि बलि जाई ।
तन मन वार धराई ॥७॥

सतगुरु प्यारे समरथ दाता, ऐसी मौज कराई ।
ऋतु फागुन की फिरसे लाकर, अद्भुत फाग रचाई ।
कहन कुछ नहिं बन आई ॥८॥

भक्ति भाव और प्रीति चाव के, निज भंडार खुलाई ।
दया धार सिर बरसन लागी, प्रेम का नीर बहाई ।
सब रहे मल मल न्हाई ॥९॥

न्हाय धोय सखियाँ होय निर्मल, सुन्दर रूप सजाई ।
जुड़ मिल गुरु से फगुआ माँगत, चरनन सीस नवाई ।
मुख से गात बधाई ॥१०॥

सतगुरु प्यारे प्रेम भँडारा, सब को अंग लगाई ।
दया मेहर से सब सखियन को, बीन की धुन सुनवाई ।
पुरुष का दरश दिखाई ॥११॥

अलख अगम लख सखियाँ प्यारी, चरनन गईं लिपटाई ।
लिपट लिपट चरनन रस लेतीं, पी पी कर तृप्ताई ।
राधास्वामी राधास्वामी गाई ॥१२॥

वाह वाह मेरे राधास्वामी दाता, जिन यह फाग खिलाई ।
वाह वाह मेरे प्यारे सतगुरु, जिन मोहिं खैंच बुलाई ।
निस दिन तुम गुन गाई ॥१३॥

---

## शब्द २६

मेरी सुनो गुहार हे गुरु प्यारे ॥टेक॥

दीन अधीन सदा तुम रीना ।
निस दिन रहूँ तुम आधारे ॥१॥

बल पौरुप मेरे कुछ नाहीं ।
आस भरोस एक चरना रे ॥२॥

तुम बिन और न कोई आसर ।
जीऊँ भरोसे तुम्हारे ॥३॥

भौजल गहिर गँभीर भयंकर ।
लहर जहर का नहिं पारे ॥४॥

मौज तुम्हारी हुइ अस स्वामी ।
आन पड़ा मैं मझधारे ॥५॥

बहुतक या मध भटके खाये ।
भटक भटक रहा दुखियारे ॥६॥

जब तुम दया बिचारी गहरी ।
सुधि पाई तब तुम द्वारे ॥७॥

दया मेहर मोहिं नाव चढ़ाया ।
मेट दिये सब दुख सारे ॥८॥

मेरे मन अस निश्चय आई ।
बिन तुम नाव नहिं छुटकारे ॥९॥

सभी जीव निज अंश तुम्हारे ।
भौजल गोते रहे खा रे ॥१०॥

हे स्वामी हे पिता दयाला ।
क्या क्या दुख इन कहुँ गा रे ॥११॥
हाथ पैर सब बहु विधि मारें ।
डूब रहे सब थक हारे ॥१२॥
सब जीवन से कहूँ पुकारी ।
आन चढ़ो होजाओ पारे ॥१३॥
पर अस मूरख जीव अजाना ।
कहन न मानें झख मारे ॥१४॥
कुछ जिव नाव चढ़े तुम किरपा ।
खींच लिया तुम दया धारे ॥१५॥
पर अस मूरख मन रँग राते ।
राग द्वेष रहे मतवारे ॥१६॥
छोड़ नाव सब गिर गिर पड़ते ।
भवसागर मध मझधारे ॥१७॥
ऐसी हालत देख जगत की ।
हरदम मन में यही आ रे ॥१८॥
हे स्वामी अब किरपा कीजे ।
होश सँभालें जिव सारे ॥१९॥
औसर हाथ से जाने न देवें ।
आन गहें तुम सरना रे ॥२०॥
भवजल पार सहज में होकर ।
पहुँचें जाय सत दरबारे ॥२१॥
आगे अलख अगम पद निरखें ।
राधास्वामी चरन सीस डारे ॥२२॥

जो तुम दया बिचारो ऐसी ।
मम हिरदा होय सुखियारे ॥२३॥
दासन दास करे यह बिनती ।
रोम रोम से बलिहारे ॥२४॥
राधास्वामी दयाल यह अर्ज़ी सुनिये ।
मान लेव निज दया धारे ॥२५॥

---

## शब्द ३७

बिन दरशन मन शान्ति न आवे
क्योंकर धीर धरूँ (सखी मैं) ॥ टेक ॥
तड़प तड़प जिया बहु अकुलावे, नैनन नीर भरूँ ॥ १ ॥
तन मन बिच मेरे अगनी लागी, निस दिन पीड़ सहूँ ॥ २ ॥
रैन दिवस मैं करूँ पुकारी, तुम्हरी ओर तकूँ ॥ ३ ॥
हे सतगुरु मेरी बिनती सुनिये, तुम्हरे गोड़ पड़ूँ ॥ ४ ॥
एक बार मेरे घट में आओ, सुन्दर सेज सजूँ ॥ ५ ॥
खुले नैन मोहिं दर्शन दीजे, सुन्दर रूप लखूँ ॥ ६ ॥
लिपट जाऊँ मैं चरन कमल में, तुम सँग गमन करूँ ॥ ७ ॥
तब मेरे मन शान्ती आवे, सगरी ब्याध हरूँ ॥ ८ ॥
मौज होय तो सतपुर धाऊँ, सत्य सरूप मिलूँ ॥ ९ ॥
जब तुम चाहो अलख अगम होय, तुम्हरे चरन लगूँ ॥ १० ॥
चरन बहारी निस दिन निरखूँ, राधास्वामी नाम जपूँ ॥ ११ ॥

---

## शब्द ३८

मेरे सतगुरु दीन दयाल । अरज एक सुन लीजे ।
मेरे समरथ पुरुष सुजान । चरन में मोहिं लीजे ॥ १ ॥

मैं बहुतक भटके खाये । सरन में रख लीजे ।
मेरा मन है बड़ा कठोर । नरम अब वाहि कीजे ॥ २ ॥
चहुँ दिस रहे यह धाय । पकड़ अब धर दीजे ।
मेरे प्यारे गुरू दातार । जल्दी सुधि लीजे ॥ ३ ॥
मेरी आयू बीती जाय । बदन निस दिन छीजे ।
मैं बिनती करूँ पुकार । मेहर से सुन लीजे ॥ ४ ॥
मेरे सतगुरु बन्दीछोड़ । मोहिं निरबँध कीजे ।
मेरा कोमल चित हो जाय । कमल सम बिगसीजे ॥ ५ ॥
घट प्रगटे शब्द अपार । सुन सुन सुत रीझे ।
कलमल सब दूर बहाय । चरन रस नित भींजे ॥ ६ ॥
फिर चढ़कर निज घर जाय । मेहर से सँग दीजे ।
अलख अगम के पार । राधास्वामी सँग सीझे ॥ ७ ॥
राधास्वामी गुरू दयाल । दरद मेरा लेव बूझे ।
तुम बिन और दुवार । कोई नहिं मोहिं सूझे ॥ ८ ॥

---

## शब्द ३९

कोई क़दर न जाने । सतगुरु परम दयाल री ॥ टेक ॥
देह धरें जिव भार उठावें । काटें जम का जाल री ॥ १ ॥
जीव अनाड़ी जग झख मारें । दुख सुख संग बेहाल री ॥ २ ॥
दया मेहर निज बचन सुनावें । मेटें घट दुख साल री ॥ ३ ॥
छूटन की वह जुक्ति बतावें । घट में चलावें चाल री ॥ ४ ॥
दया मेहर करनी करवावें । करदें मालामाल री ॥ ५ ॥
घट के बैरी सभी नसावें । मारें काल कराल री ॥ ६ ॥

निस दिन तेरी दया बिचारें । जस माता सँग बाल री ॥ ७ ॥
अन्त समय जब तेरा आवे । आप होयँ रछपाल री ॥ ८ ॥
घट तेरे में प्रगट करावें । अपना रूप बिशाल री ॥ ९ ॥
पकड़ चरन तू जिन घर जावे । काल करम पामाल री ॥ १० ॥
राधास्वामी सतगुरु मोहिं अस भेंटे । होगई मैं खुशहाल री ॥ ११ ॥

---

## शब्द ४०

कोई जतन बताओ । मेरे उठत कलेजे झाल री ॥ टेक ॥
प्रीतम पीड़ सतावत निसदिन । खटकत रहे ज्यों भाल री ॥ १ ॥
बिन दरशन मोहिं चैन न आवे । हरदम उन सँग ख्याल री ॥ २ ॥
जस मछली तड़पे बिन नीरा । बिन माता जस बाल री ॥ ३ ॥
अस प्रीतम बिन मैं नित तड़पूँ । कासे कहूँ अहवाल री ॥ ४ ॥
मेरे दरद की कोई न बूझे । कौन करे प्रतिपाल री ॥ ५ ॥
धन दौलत मैं सब खो बैठी । बिन पैसे कंगाल री ॥ ६ ॥
कौन उपाय बने अब मोसे । कस भेटूँ दीनदयाल री ॥ ७ ॥
रोम रोम से करूँ पुकारी । गल बिच कपड़ा डाल री ॥ ८ ॥
प्रीतम मेरे राधास्वामी दाता । कीजे आप सँभाल जी ॥ ९ ॥

---

## शब्द ४१

भाग मेरे जागे भारी । सतगुरु आये पाहुना ॥ टेक ॥
चुन चुन कलियाँ सेज साजी । कँवलन का बिछावना ।
अंगनिया में चौकी डारी । सतगुरू बिठलावना ॥ १ ॥

माला लेके दर पै ठाढ़ी । प्यारे को पहिनावना ।
आये प्रीतम मेरे प्यारे । मधुरी चाल चल आवना ॥ २ ॥
चौकिया पै आ बिराजे । तन मन वार धरावना ।
फूली फूली फिरूँ अधर में । दम दम भाग सराहना ॥ ३ ॥
आरती ले कर में ठाढ़ी । सतगुरू के सामना ।
वारि वारि वारी जाऊँ । सत्तपुरुष मन भावना ॥ ४ ॥
अरब खरब मिल चन्द सूरा । रोम एक न पावना ।
ऐसे मेरे प्यारे सतगुरु । राधास्वामी नावना ॥ ५ ॥

---

## शब्द ४२

ज़रा तुम होश में आओ हँसी और दिल लगी छोड़ो ।
यह ग़फ़लत ज़हरे क़ातिल है जहाँ तक हो सके बचना ॥ १ ॥
जहाँ में आनकर साहब जहाँ तक बन पड़े तुमसे ।
सँभल कर रास्ता चलना क़दम को फूँक कर रखना ॥ २ ॥
मिज़ाजे आशक़ी गर है दरद इश्क़े हक़ीक़ी भी ।
मजाज़ी इश्क़ से हट कर हक़ीक़ी में दख़ल करना ॥ ३ ॥
अलग हो बुत व काबे से नज़र अन्दाज़ कर सब को ।
गली कूचे से नाफ़िर हो सुराते इश्क़ पर चलना ॥ ४ ॥
फ़हम इदराक कुछ तेरे मुआविन हो नहीं सकते ।
यह राह अजबसके नाज़ुक है नज़ाकत से क़दम धरना ॥ ५ ॥
मगर सूरत है इक ऐसी कि मुश्किल हल हों सब जिससे ।
सभी सामाँ मुयस्सर हों सहज हो रास्ता कटना ॥ ६ ॥

मिलें खुशबख़्ती से तुमको कहीं जो मुर्शिदे कामिल ।
कमर को बाँधकर ख़िदमत में दिल दीदा से जा लगना ॥७॥
मेहर जब उनको आवेगी शग़ल सुल्तानुल अज़कारी ।
बतावेंगे वह तुमको तब उसी का फिर शग़ल करना ॥८॥
मेहर से पीर की इक दिन सफ़र अंजाम हो जावे ।
मिले फिर मंज़िले अबदी ख़तम हो जीना और मरना ॥९॥
ख़ुशा बख़्ता कि आख़िर शुद मरा ईं जुमला दिक़्क़तहा ।
ज़े मेहरे राधास्वामी अम बदर रफ़तम अर्ज़ी रख़ना ॥१०॥

---

## शब्द ४३

चे गोयम हाले ख़ुशबख़्ती जेहा क़िस्मत कि यारी कर्द ।
रुख़े पुरनूरे दिलदारम दरूनम जलवः ख़ुद करदा ॥१॥
पए दीदारे महबूबम् मुसीबतहाय बेपायाँ ।
शबाना रोज़ बिकशीदम्, मोहर बर लब सबत् करदा ॥२॥
चे शबहा सोख़्तम ख़ूँरा शमावश एसतादः मन ।
ब यादे ज़ुल्फ़े गुलगूनश दिले ख़ुदरा ज़बत करदा ॥३॥
मिसाले तिफ़्ले बे मादर सरापा जामा बिदरीदा ।
बिगश्तम् दर बदर रोज़ा हवासम रा ख़बत करदा ॥४॥
ज़े मेहरे मुर्शिदे कामिल कुनूँ कीं दौलते उज़मा ।
बदस्ते मन बियुफ़्तादस्त ज़मी आलम हसद करदा ॥५॥
हसद रा ख़ाक बर सिर कुन हिरस रा ज़ेर पाई नेह ।
अताअत रा बदिल आवर बहुशयारी जिहद करदा ॥६॥

अगर ईं शेवा मक़बूली पये चन्दे तअज्जुब नेस्त ।
कि आँ खुसरो शवद मायल बसूए तो क़सद करदा ॥ ७ ॥
बजुज़ ईं हेच दिरमाँ ने नसीहत गोशकुन जानाँ ।
हमींनस्त हुक्मे राधास्वामी बिनह दरदिल अहदक रदा ॥ ८ ॥

---

## शब्द ४४

कहूँ क्या हाल मैं अपना सराहूँ भाग क्या अपने
मनोहर रूप प्यारे ने किया रोशन मेरे घट में ॥ १ ॥
दरश के वास्ते उनके हज़ाराँहा ही तकलीफ़ें ।
उठाईं रात दिन मैंने लगा के ताला लब अपने ॥ २ ॥
जलाया खून अपना मैं शमा बन के कई रातें ।
लिपट मैं याद ज़ुलफ़ों के पकड़ दिल हाथ से अपने ॥ ३ ॥
फटे कपड़ों में जैसे हो कोई बालक बिना माँ के ।
फिरा आवारा कितने दिन ख़ब्त कर होश को अपने ॥ ४ ॥
गुरू की मेहर से मुझको मिली अब जो यह दौलत है ।
जहाँ सारा ही हासिद है मले है ख़ाक सिर अपने ॥ ५ ॥
हसद के ख़ाक सिर डालो हिरस को फेंक तुम मारो ।
ग़रीबी दीनता धारो जतन से दिल में तुम अपने ॥ ६ ॥
अगर यह बातें मन माने कोई दिन पर यह मुमकिन है ।
दया निज धारें वह दाता पधारें चरन निज अपने ॥ ७ ॥
बजुज़ इसके नहीं मुमकिन यह कहना मेरा तुम मानो ।
यही है हुक्म राधास्वामी समझ के धार चित अपने ॥ ८ ॥

---

## शब्द ४५

चरन गुरू में लाग सुरत क्यों सोवई ।
जनम अमोलक पाय बृथा क्यों खोवई ॥ १ ॥
सतगुरु दिया सुहाग सरन में जा पड़ो ।
जनम मरन का रोग पलक में परिहरो ॥ २ ॥
सुन्दर रूप सजाय पिया सों मेल कर ।
जाग उठे तेरा भाग सुरत को पेल धर ॥ ३ ॥
महल माँहिं धस जाव पुरुष सँग जा मिलो ।
पूरन होय सब काज तनिक आगे बढ़ो ॥ ४ ॥
अलख अगम के पार महल इक और है ।
क्यों कर होय बखान रचा जिस तौर है ॥ ५ ॥
सूरज चन्द अनेक लगे इक रोम में ।
कोटि कोटि रविभान इक इक सोम में ॥ ६ ॥
ऐसा महल अनूप वही सुत पावही ।
राधास्वामी चरन अधार हिये जो लावही ॥ ७ ॥

---

## शब्द ४६

देखो दृष्टि पसार जगत सब धूल है ।
सब ही भोग बिलास भरम की सूल है ॥ १ ॥
जग जिव मूढ़ अजान उन्हीं में फँस रहे ।
स्वानहु रेती चाट अधिक जस रस लहे ॥ २ ॥

कोई काल के माँहि समझ जब आवई।
जिभ्या मूढ़ गँवाय बहुत पछतावई ॥ ३ ॥
पछतावा चित लाय दुगुना दुख सहे।
पेश कछू नहिं जाय रो रो खप मरे ॥ ४ ॥
ताते कहूँ जनाय समझ कर चित धरो।
जगत मोह सब त्याग सरन गुरु सुधि करो ॥ ५ ॥
संगत उनकी खोज करो सँग चेतकर।
सेवा जुक्ति सम्हार करो हिय हेत धर ॥ ६ ॥
कोई काल के माँहि मेहर जब पावई।
परख कुछ उनकी आय हिया उमँगावई ॥ ७ ॥
चरन सरन दृढ़ होय जगत भय डर मिटें।
प्रेमी प्यारे दास सभी प्यारे लगें ॥ ८ ॥
प्रिय लगें गुरुदेव और लीला सभी।
सहज सहज मन आय परख कुछ मौज की ॥ ९ ॥
करनी तभी बन आय घट रस्ता खुले।
गह कर शब्द अपार सुरत ऊपर चढ़े ॥ १० ॥
घट का भेद अगाध कहूँ मैं खोल अब।
लेव चित वाहि धार चिन्ता मेट सब ॥ ११ ॥
घंटा संख पुकार घट शोभा बड़ी।
सुन सुन स्रुत हरषाय मृदँग धुन जा लही ॥ १२ ॥
त्रिकुटी गढ़ को फोड़ मिली धुन सारँगी।
भँवरगुफा चढ़ गई बजत जहाँ बाँसुरी ॥ १३ ॥

सुरत अती मगनाय पुरुष सँग जा मिली ।
गावत राग मलार बीना धुन वजी ॥ १४ ॥
पुरुष दई दुरबीन सुरत आगे बढ़ी ।
अलख अगम के पार चरन में जा पड़ी ॥ १५ ॥
मिले पिया हँस बोल शोभा क्या कहूँ ।
राधास्वामी पुरुष दयाल चरन में जा रलूँ ॥ १६ ॥
पदवी निस्सन्देह मिले यह जीव को ।
टेक पच्छ को त्याग चहे जो पीव को ॥ १७ ॥
बिना सन्त अनुराग पिया को को चहे ।
सतसँग बिना अनुराग हिये में ना बसे ॥ १८ ॥
राधास्वामी कहें पुकार बचन यह सार है ।
समझ सोच लेव धार बेड़ा पार है ॥ १९ ॥

---

## शब्द ४७

मिले मोहिं राधास्वामी प्यारे सराहूँ भाग क्या अपना ।
दिया मोहिं चरन आधारे छुड़ाया दर बदर फिरना ॥ १ ॥
जगत जिव देखकर मुझको हँसी और बान करते हैं ।
भला वह सार क्या जानें किसे कहते हैं गुरुसरना ॥ २ ॥
जगत जिव कहते हैं सब ही गया यह दीन दुनिया से ।
भला क्या खाक वह बूझें किया गुरु ने मुझे अपना ॥ ३ ॥
पड़ा था बेखबर सोया जहाँ में एक अरसे से ।
मेहर से आन कर घट में दिखाया इक अजब सुपना ॥ ४ ॥

लगाया मोहिं चरनन से जुगत घर चलने की बख़्शी ।
मिटाये जग के भय सारे चढ़ा कर सुर्त को गगना ॥ ५ ॥
चढ़ी स्रुत और भी ऊपर दसम द्वारे से हो निकली ।
गुफा का हाल कुछ पेखा सुनी ऊपर से धुन बीना ॥ ६ ॥
हुई स्रुत मस्त मगनानी धसी फिर वार से पारा ।
दो पद रस्ते के लख करके पुरुष के जा पड़ी चरना ॥ ७ ॥
क़दर सतगुरु की तब जानी मिला चरनों का आधारे ।
मैं कस गुन गाउँ प्यारे के कहन में आ नहीं सकना ॥ ८ ॥
कई इक बार रह रह कर मुझे यह ख़्याल आता है ।
कोई अस दाव पड़ जावे लगे कुछ हाथ अस जतना ॥ ९ ॥
कि जिससे जिव जगत के सब सुमति के घाट पर आवें ।
जगत को जान कर मिथ्या चहें इससे तुरत भगना ॥ १० ॥
मगर यह बात है मुश्किल जगत की जान लेना है ।
मेहर गर राधास्वामी धारें तभी मुमकिन है कुछ बनना ॥ ११ ॥
करूँ फ़रियाद सतगुरु से सुनो बिनती मेरे साहब ।
मेहर की दात माँगूँ हूँ पकड़ कर जोर से चरना ॥ १२ ॥

---

## शब्द ४८

गुरू का संग मोहिं मिलिया कोई बड़ भाग जागा है ।
जगत का संग मन तजिया चरन में गुरु के लागा है ॥ १ ॥
हुआ मन गुरु पै अब मायल हिये में प्रीति उन जागी ।
बिरह से हो रहा घायल जगत नेह चित से भागा है ॥ २ ॥

गुरू ने मेहर से मुझको अजब इक रूप दरसाया।
कहूँ कस हाल मैं उसका लबों पर ताला लागा है ॥३॥
गुरू के देख के नैना सिमिट आई सुरत नभ पर।
धसी फिर वार से पारा सुई में जैसे धागा है ॥४॥
दसम द्वारे से होकर के गुफा से होगई पारा।
बजे जहाँ धुन मधुर बीना अनन्त ही होत रागा है ॥५॥
कहूँ क्या हाल ऊपर का दो पद आगे जो चल देखा।
सिंहासन इक अजब अद्भुत पुरुष राधास्वामी साजा है ॥६॥
गुरू की मेहर से मैंने लखा सब हाल अन्तर का।
फ़तह अब कर लिया मैदाँ करन को कुछ न राखा है ॥७॥
चरनसेवक मेरे गुरु के सभी इक दिन यह गति पावें।
परम गुरु राधास्वामी दाता उन्हीं यह भेद भाखा है ॥८॥

---

## शब्द ४९

ऐ मावूदे आलम व मक़बूले मन।
खुदावन्दे नेमत व मसजूदे मन ॥ १ ॥
यके अर्ज़ दारम बदीं दो सखुन।
ब लब मी रसानम समाअत बुकुन ॥ २ ॥
चे खुश रोज़ बूदं चे फ़रखुन्दा फ़ाल।
ज़े लुत्फ़े अज़ीमत व मेहरे कमाल ॥ ३ ॥
दरे दौलते तो मयस्सर शुदम।
बशुकरे क़दूमत निहादम सरम ॥ ४ ॥

बशकूले गुलामे बख़िदमत शुदा।
जे जाने अज़ीज़म परस्तम तुरा ॥ ५ ॥
गहे महव गश्तम बहुस्ने जमाल।
लबे दुर फ़िशानत बकरदम निहाल ॥ ६ ॥
गहे दम कशीदा बख़िलवत शुदम।
बयादे रुखे तो बिगश्तम अदम् ॥ ७ ॥
फ़रामोश करदम तने खेश रा।
व आतिश फ़िगन्दम दिले रेश रा ॥ ८ ॥
कि हैहात हालम दिगर गूनः गश्त।
दरत रा गुसिस्तम व रफ़तम बदश्त ॥ ९ ॥
गुनाहाँ बिकरदम हज़ाराँ हज़ार।
बदामे हविस गश्ता लैलो निहार ॥ १० ॥
फ़रामोश करदम तुरा सर बसर।
व पैवस्ता गश्तम ब दुनिया व ज़र ॥ ११ ॥
यके लहज़ा ख़्याले जमालत न शुद।
यके लमहा हौले ख़सामत न शुद ॥ १२ ॥
ज़बाँ चे कुशानम् बयाँ चे कुनम।
गुनाहाँ व इसियाँ बसा करदा अम ॥ १३ ॥
कुनूँ कि जे मेहरत बहोश आमदम।
सदाए अफ़ूअत बगोश आमदम ॥ १४ ॥
ख़िजिल आमदम पेशत आमुर्ज़गार।
अफ़ूकुन गुनाहाँ ऐ परवरदिगार ॥ १५ ॥

मनम् तिफ़्ले बेहोश गन्दः ख़राब।
ऐ दरियाय रहमत रहम कुन शिताब ॥ १६ ॥
हमीनस्त अरज़म् ख़ुदावन्द बस।
गुनाहाने मारा क़लम दर बिकश ॥ १७ ॥
व ताक़त चुनीं बख़्श परवरदिगार।
कि सरज़द नेआयद चुनीं हेचकार ॥ १८ ॥
दुबारा ज़ेमन ता बिमानद क़याम।
दरीं दहर गरदाँ व फ़ानी मुक़ाम ॥ १९ ॥
पिज़ीरा बुकुन राधास्वामी नईम।
सदाए क़बूली बिदेह ऐ रहीम ॥ २० ॥

---

## शब्द ५०

आज गाऊँ गुरु महिमा मन उमँग जगाय ॥ टेक ॥
राधास्वामी नाम बसा मेरे हिय में।
चरन गुरु रहे घट में छाय ॥ १ ॥
सतसँग सेवा चित से करती।
निस दिन अपने भाग सराय ॥ २ ॥
जब तब सतगुरु दया धार निज।
बचन सुनावें प्रीति बढ़ाय ॥ ३ ॥
सुन सुन बचन मेहर के गुरु से।
प्रेम हरष मन अधिक समाय ॥ ४ ॥
ऐसी दुर्लभ भक्ति दया से।
मोसी अधम रही नित्त कमाय ॥ ५ ॥

वाह वाह मेरे गुरू दयाला।
चरनन में लिया आप लगाय ॥ ६ ॥
वाह वाह मेरे राधास्वामी दाता।
तुम्हरी मेहर यह औसर पाय ॥ ७ ॥
दया मेहर मोहिं जुक्ती दीन्ही।
तन मन से सुत दई अलगाय ॥ ८ ॥
अन्तर बाहर गुरु किरपा से।
सन्त बिश्वास हुआ अधिकाय ॥ ९ ॥
धर बिश्वास चढ़ी सुत ऊँचे।
त्रिकुटी गढ़ लख सुन को जाय ॥१०॥
उमँग उमँग, सुत चाली आगे।
भँवरगुफा तज सतपुर धाय ११
अलख अगम के पार सिधारी।
राधास्वामी चरनन सीस नवाय ॥१२॥
ऐसी मेहर अपूरब पाई।
क्या क्या गुन गुरु कहूँ सुनाय ॥१३॥
हे राधास्वामी प्यारे सतगुरु।
तुम बिन और न कोइ सुहाय ॥१४॥

---

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

# प्रेमबिलास

## भाग दूसरा

### शब्द ५१

(दोहे)

सन्त सतगुरु महिमा

राधास्वामी सतगुरु सन्त की चरन धूर धर चीत ।
बिरही प्रेमी कारने रचूँ उन महिमा गीत ॥ १ ॥
बार बार करूँ बन्दगी चरनन सीस नवाय ।
तन मन धन सब वारहूँ सतगुरु नाम धियाय ॥ २ ॥
महिमा सतगुरु सन्त की बरनम करी न जाय ।
गति मति अगम अगाध जिन कस मति माहिं समाय ॥ ३ ॥

मुट्ठी माटी लेय कर पानी चुली मिलाय।
धरी चाक कुम्हार ने ठूठा लियो वनाय ॥ ४ ॥
धूरत धर अभिमान चित चला सिंध की ओर।
ठूठा बग़ल सँभालिया करन सिंध की तोल ॥ ५ ॥
एक दो दस बीस सौ ठूठे भरे हज़ार।
दिन भर झख बहु मारिया ऐसा मूढ़ गँवार ॥ ६ ॥
ठूठा था सो गल गया गल कर हूआ चूर।
सिन्ध जल पर ना घटा रहा अघट भर पूर ॥ ७ ॥
ऐसे मूरख जीव बहु ज्ञानी नाम धराय।
ठूठा बुद्धी ले फिरें अनुभव समुँद तुलाय ॥ ८ ॥
सतगुरु सन्त महा बली सर्बस के ठकुराय।
ठोकर एक जो मारिहैं ठेका ठौर न काय ॥ ९ ॥
सतगुरु सन्त दानी बड़े दान देयँ हर हाल।
दाना जिन एक बख़्शते दले करम और काल ॥ १० ॥
सतगुरु के परताप की उपमा कही न जाय।
कोटि जनम के पाप की ताप हरें छिन माहिं ॥ ११ ॥
जिन सतगुरु और सन्त की धरी न हिरदय सीख।
वेमुख सते दरवार से दर दर माँगें भीख ॥ १२ ॥
जगत जीव कीड़े सभी पुस्तक पढ़ें हज़ार।
सतगुरु सन्त न खोजिहैं विद्या के भण्डार ॥ १३ ॥
पढ़ पढ़ जग पटड़ा भया घोटे ग्रन्थ अनेक।
पढ़न समय जब आइया रही याद नहिं एक ॥ १४ ॥

पंडित सा मूरख नहीं मूल बस्तु जिन खोय।
ग्रन्थ बोझ सिर लादिया रहा बिगारी होय ॥१५॥
सतगुरु पुरुष सुजान हैं अनुभव के भण्डार।
चार बेद चाकर किये हाथ जोड़ तैयार ॥१६॥
भेष धार साधू भये कपड़े लिये रँगाय।
हिरदा काला कीट सा ता की सुधि नहिं लाय ॥१७॥
सतगुरु प्रेम सरूप हैं चोला रँगा मजीठ।
नाम दीप घट बारिया झिलमिल झिलमिल डीठ ॥१८॥
सतगुरु साँचे शाह हैं और जगत कंगाल।
नाम रतन धन बाँटते निस दिन भर भर थाल ॥१९॥
सोना चाँदी ठीकरी रहते एकहि ठाँय।
ताते फ़र्क़ न मानते सतगुरु तीनों माहिं ॥२०॥
भुखमूए संसार के टका एक जो पायँ।
उड़े फिरें आकाश में धरती पग नहिं लायँ ॥२१॥
याते सब को चाहिए सतगुरु खोज कराय।
होय दीन चरनन गिरें मन मत दूर नसाय ॥२२॥

---

## शब्द ५२

### ( दोहे )

### बिरह

बिरह को मत छेड़िये बुरी बिरह की छेड़।
छेड़े पर छाड़े नहीं बहुत करेगी ज़ेर ॥१॥

बिरह अगिन हिरदय धरे नैन बहावे नीर ।
सुद्धि भुलावे देह की सर सर करे शरीर ॥ २ ॥
बिरह को मत हाँसिये हाँसी बुरी बलाय ।
हाँसी गल फाँसी लगे बन्द बन्द बँध जाय ॥ ३ ॥
बिरह समान दौलत नहीं बिरहा है अनमोल ।
प्रेम हाट जो जिन्स है मिले इक बिरह के तोल ॥ ४ ॥
बिरह छोड़ के ज्ञान सब कहिये बारह बाट ।
प्रेम हाट जो बानिया समझे और न बात ॥ ५ ॥
बिरह बिना विद्या सभी बाज़ीगर का ढोल ।
बाहर राड़ मचावई भीतर पोलहि पोल ॥ ६ ॥
योंतो बिरहा कठिन है कठिन सभी ब्योपार ।
बिरह धन बरते बिना फीके सब ब्योहार ॥ ७ ॥
बिरही जलता देख के होय सभी मन खेद ।
प्रेम बुन्द जब आ पड़ी तभी खुलेगा भेद ॥ ८ ॥
बिरह सा साथी नहीं नहीं बिरह सम मीत ।
बिरह रीति सो जानि है जो करे बिरह से प्रीत ॥ ९ ॥
हिरदा सूना साईं बिन साँय साँय नित होय ।
अस सूने संगी सदा बिना बिरह को होय ॥१०॥
बिरही बौरा मत कहो बिरहा सब का पीर ।
जो बिरही बौरा कहे है बढ़ का बेपीर ॥११॥
बिरहन यही अँदेसरा हरदम हिये मँझार ।
बिरहन को तुम एक हो बिरहन तुम्हें हजार ॥१२॥

साईं घट में आ रहो पुजवो मेरी आस ।
छिन छिन काया छीजती घटे जात हैं स्वाँस ॥१३॥
साईं तुम्हरे दरस बिन अँगना नहीं सुहाय ।
घर के सब बैरी लगें घर खावन को आय ॥१४॥
साईं तुम्हरे दरस बिन अगिन जरे सब देह ।
नैनन जल बरसे नहीं जल कर होवे खेह ॥१५॥
हिरदा थाली एक थी जा में भरिया नीर ।
सो भी अब छलनी भया लग लग बिरहा तीर ॥१६॥
बिरह अगिन भड़कन लगी अंग अंग अकुलाय ।
हिरदा तो खाली पड़ा क्योंकर लेउँ बुझाय ॥१७॥
जीवन मेरा हाथ तुम और न कोई उपाय ।
जो चाहो मोहिं राखना प्रेम बुन्द बरसाय ॥१८॥

---

## शब्द ५३

(दोहे)

### सतगुरुदर्शन

सतगुरु दयाल दया करी घट प्रगटाया सूर ।
रोम रोम भया चाँदना तिमिर भया सब दूर ॥ १ ॥
सुरत पियारी जग पड़ी निद्रा गई नसाय ।
नौ नेजे सूरज चढ़ा अँखियाँ रहीं चुँधियाय ॥ २ ॥
होश आय जो देखिया उलट नैन असमान ।
सुन्दर रूप निहार कर बहुत हुई हैरान ॥ ३ ॥

चकित होय सुत पूछती कौन दिवस है आज ।
कौन भाग मेरा जागिया प्रगटे ग़रीबनिवाज ॥ ४ ॥
कौन वस्तु मैं वार हूँ भेंट धरूँ क्या आय ।
उमँग कौन दिखलावहूँ सतगुरु लेउँ रिझाय ॥ ५ ॥
दृष्टि जोड़ इकटक खड़ी बिनती करे पुकार ।
अपने सँग मोहिं ले चलो परम गुरू भरतार ॥ ६ ॥
बिनती सुन स्वामी अजब नैन चलाई सैन ।
सैन पेख घायल हुई चली ऐन में पैन ॥ ७ ॥
आगे बढ़ सुत देखिया अचरज रूप अपार ।
गति मति कहते ना बने अचरज सब ब्योहार ॥ ८ ॥
अरज करे सुनो प्रीतमा बर दीजे इक मोहिं ।
मौज ऐसी लेउ धार चित अब नहिं बिछड़न होय ॥ ९ ॥
हे स्वामी कहाँ जात हो मोंको छोड़ किनार ।
पलक एक तो लहन दो दरशन रस दिलदार ॥१०॥
बिनती स्वामी ना सुनीं हाँसी दीन टलाय ।
बेबस सुत तन आ पड़ी पेश कछू नहिं जाय ॥११॥
रोय रोय दिन काटती करत रहे बिल्लाप ।
दिल की दिल में रह गई होन न पाई बात ॥१२॥

---

## शब्द ५४

### ( दोहे )

### चितावनी

क्या नर सोया बावरे लाँबी टाँग पसार।
चोरन ने तोहिं लूटिया घर बिच खोदा मार ॥ १ ॥
जग की हाटी आन कर जमा हाथ क्या लाय।
आवत मुट्ठी बन्द थी जावत हाथ फैलाय ॥ २ ॥
भौजल गहिर गँभीर मध आन पड़ी तेरी नाव।
आज काल में डूबि है जल्दी करो उपाव ॥ ३ ॥
सत्तपुरुष की अंस होय उनस करी जड़ संग।
कुल का नाम डुबोइया अरु धूल मिलाई नंग ॥ ४ ॥
क्या हिरदय तुम धारिया कुमति कौन तुम लीन।
माल अपना सब फूँक कर जग बिच हाँसी कीन ॥ ५ ॥
बढ़ चढ़ के क्या बोलता धर मन माहिं ग़रूर।
जो चढ़ि है सो डूबि है निस दिन जैसे सूर ॥ ६ ॥
दिना चार की बात पर क्या धारे चित जोम।
ऐंठन सब ढल जायगी आँच पड़े ज्यों मोम ॥ ७ ॥
छल बल बुधि और चातुरी मुख की हाँकी डींग।
जम देखत उड़ जायँगी जस गदहा के सींग ॥ ८ ॥
मानुष तन जिन पाय कर करी न कुछ तदबीर।
रहे दुखी संसार में मर मर धरे शरीर ॥ ९ ॥

सतगुरु सेवा जिन करी हिरदय चिन्ता धार ।
छूटत ही सो पहुँचिया साहब के दरबार ॥१०॥

---

## शब्द ५५

सजनवा जाय छिपे कौनी ओर ॥ टेक ॥
रैन अँधेरी सब जग छाई
गरजे घटा सिर अति घनघोर ।
बिन तुम भेंटे कल न पड़त है
डरत रहे जिया मोर ॥ १ ॥
दुष्ट विरोधी बहु किलकारें
बहुत मचावें अपना शोर ।
मैं अति दुर्बल दीन अधीनी
ना चित पौरुष नहीं कुछ ज़ोर ॥ २ ॥
रैन दिवस रहूँ हिये घबरानी
डरप डरप निरखूँ तुम ओर ।
नाम तुम्हारा लेउँ सँभारी
चरनन में चित राखूँ जोड़ ॥ ३ ॥
या बिधि मुश्किल मोंहिं पड़ी है
अरज़ सुनो मेरी बन्दी छोड़ ।
दयाल नाम तुम सदा धराया
अब क्यों भये तुम दयाल कठोर ॥ ४ ॥

दीन दुखी की बिनती सुनिये
हे राधास्वामी मेरे चितचोर ।
दया मेहर निज हिये उमँगाओ
दरशन दे मोहिं करो सरबोर ॥ ५ ॥

---

## शब्द ५६

सुरत लाड़ली प्रेम सनीली ।
करे आरती आज नवेली ॥ १ ॥
नैन कमल का थाल बनाया ।
भक्ति प्रेम का दीप जगाया ॥ २ ॥
कपड़े बस्तर रंग रँगाने ।
सन्मुख गुरु के आन धराने ॥ ३ ॥
हीरे मोती लाल जवाहिर ।
वार रही आज गुरु के चरन पर ॥ ४ ॥
दृष्टि जोड़ कर इक टक ठाढ़ी ।
तन मन की सब सुद्धि बिसारी ॥ ५ ॥
अद्भुत रूप गुरू दरसाया ।
देख देख ताहि हिया उमँगाया ॥ ६ ॥
दृष्टि मेहर की गुरु ने डारी ।
मस्त मगन हुइ सुत मतवारी ॥ ७ ॥
दोउ कर जोड़ मुख बिनती करती ।
हे सतगुरु मेरे राधास्वामी संती ॥ ८ ॥

तुम्हरी मेहर यह औसर पाया।
भाग आदि तुम आप जगाया ॥ ९ ॥

दया मेहर तुम धुर की कराये।
तब यह दर्शन दासी पाये ॥१०॥

हे दाता तुम गुन कस गाऊँ।
नीच निबल मैं बलि बलि जाऊँ ॥११॥

इक बिनती मेरी अब प्यारे।
मान लेव निज मेहर बिचारे ॥१२॥

चरन कमल तुम जो पकड़ाये।
उन सँग निस दिन रहूँ लिपटाये ॥१३॥

उनते बिछड़न कभी न होवे।
हे समरथ मेरी बिनती यही है ॥१४॥

अन्तर बाहर रहूँ लौलीनी।
चरन कमल की निस दिन रीनी ॥१५॥

यह बिनती मेरी सुन लीजे।
मान लेव अब मेहर करीजे ॥१६॥

हे राधास्वामी दीनदयाला।
हे समरथ सतगुरु प्रतिपाला ॥१७॥

बल पौरुष मेरे कुछ नाहीं।
निस दिन राखो चरनन छाहीं ॥१८॥

———

## शब्द ५७

सतगुरु परम पियारे की आरती सजावें ।
आज मिलके दास सारे ॥ टेक ॥

हिरदय का थाल लेकर भक्ती की जोति धरकर ।
सन्मुख गुरू के वारत गुरु महिमा मुख से गा रे ॥ १ ॥
कमलन की माला भारी अति कर लगे पियारी ।
गुरु के चरन पै डारत निज भाग मिल जगा रे ॥ २ ॥
बाजे अधिक पियारे बजने लगे अपारे ।
सारँग सितार बीना राधास्वामी की पुकारे ॥ ३ ॥
सब दास दीन अधीना गुरु प्रेम में लौलीना ।
तन मन धन और सरब को चरनन पै देत वारे ॥ ४ ॥
सतगुरु दयाल दानी निज मेहर चित जगानी ।
इक इक को अँग लगाया कलमल से कीन न्यारे ॥ ५ ॥
आरति सजी अजायब चिन्ता फ़िकर मुसायब ।
आज चित से सब बिडारी गुरु के चरन समा रे ॥ ६ ॥
यह भाग वह ही पावें जो गुरु की ओट आवें ।
सतगुरु के मन जो भावें राधास्वामी के दुलारे ॥ ७ ॥
सब जीव जगत के अन्धे चिन्ता के बस में बन्धे ।
क्या महिमा उनकी जानें जिन गुरु लिया अपना रे ॥ ८ ॥
सतगुरु की महिमा भारी कस मुख से हो अदा री ।
उनकी मेहर से इस दिन औसर यह हम भी पा रे ॥ ९ ॥

हे दयाल दाता प्यारे जो ऐसी मौज धारे।
चरनन में तुम्हरे पावें हम दास सब क़रारे ॥१०॥
अरज़ी हमारी सुनिये औगुन न हमरे गुनिये।
निज मेहर अब करावो राधास्वामी दीन दयारे ॥११॥

---

## शब्द ५८

गुरु चरनन अनुराग जगा मेरे हिये न्यारा ॥टेक॥
बिरह की अगिन जरे हिये अन्तर।
सहत रहूँ दुख भारा ॥ १ ॥
रैन दिवस रहूँ अति घबराना।
कहन न आवत वारा ॥ २ ॥
बिन दर्शन मोहिं शान्ति न आवे।
क्या करे सोच बिचारा ॥ ३ ॥
मेरे दरद की कोई न बूझे।
मूरख सब संसारा ॥ ४ ॥
विषयन रस में रहे मद माता।
सहे दुक्ख चौधारा ॥ ५ ॥
बिरही की गति बिरही जाने।
या कोई गुरुमुख प्यारा ॥ ६ ॥
बिना मेहर सतगुरु पूरे के।
बिरह घाव नहिं लगे करारा ॥ ७ ॥

चरनदास मैं राधास्वामी गुरु का।
सदा रहूँ मतवारा ॥ ८ ॥

---

## शब्द ५६

मनमोहन गुरु रूप लगे मोहिं अति प्यारा ॥ टेक ॥
नैन कमल गुरु सदा बिराजें।
चरन कमल निज धारा ॥ १ ॥
सत्त नूर वा रूप में झलके।
सेत सेत दरसारा ॥ २ ॥
जस चन्दा मिल मगन चकोरा।
जस मीना जल धारा ॥ ३ ॥
और पतंगा मगन होय जस।
निरखत दीप उजारा ॥ ४ ॥
अस निरखत मैं गुरु नख शोभा।
रोम रोम बलिहारा ॥ ५ ॥
कहन सुनन में कैसे आवे।
यह गति अगम अपारा ॥ ६ ॥
गुरु की दया होय जा जन पर।
सोइ निरखे नैन उघारा ॥ ७ ॥
निस दिन रहे चरन लौलीना।
सतगुरु नाम उचारा ॥ ८ ॥

सरन आनन्द लहे दिन राती ।
तन मन से होय न्यारा ॥ ९ ॥

नैनन हीन जगत जिव फिरते ।
करम भरम झख मारा ॥ १० ॥

बिना गहे चरन राधास्वामी ।
कभी न हो निस्तारा ॥११॥

---

## शब्द ६०

अरे सुमिरन करले मूढ़ जना ।
क्यों जग सँग भूल भुलाना रे ॥ टेक ॥

मानुष जन्म अमोलक पायो ।
काहे भूल भुलाना रे ॥ १ ॥

बार बार यह औसर नाहीं
आज नहीं कल जाना रे ॥ २ ॥

अबही चेत करो मन अपने
समय बहुर नहिं पाना रे ॥ ३ ॥

अनेक सूरमा भूपति राजा
धर धर काल चबाना रे ॥ ४ ॥

जान बूझ क्यों होत दिवाना
झूठा धरत गुमाना रे ॥ ५ ॥

बिन गुरु नाम सकल जग झूठा
सुमिरन करो धियाना रे ॥ ६ ॥
स्वाँति बूँद जस रटत पपिहा
अस सुमिरन सुधि लाना रे ॥ ७ ॥
सुमिर सुमिर गुरु नाम अपारा
जग से हो अलगाना रे ॥ ८ ॥
छोड़ छाड़ सब जगत बखेड़ा
सतगुरु चरन समाना रे ॥ ९ ॥
जो चाहो पूरा उद्धारा
राधास्वामी सरन गहाना रे ॥ १० ॥

---

शब्द ६१

या जग का ब्योहार देख मन
अचरज अधिक समाना रे ॥ टेक ॥
जा घर रहे सुख का भंडारा
और आनन्द ख़ज़ाना रे ॥ १ ॥
झूठे सुख के कारन निस दिन
जम की हाट बिकाना रे ॥ २ ॥
मीना मरे जल माहिं पियासी
साह मरे बिन दाना रे ॥ ३ ॥
हस्ती उड़े पवन में निस दिन
पंछी क़ैद बसाना रे ॥ ४ ॥

सूर फिरे बन हाल बेहाला
कायर राज चलाना रे ॥ ५ ॥
मूरख बढ़ के ज्ञान कथत नित
ज्ञानी भयो अनजाना रे ॥ ६ ॥
चोर भयो कुतवाल सबन का
राजा पकड़ मगाना रे ॥ ७ ॥
यह सब हाल जगत का उलटा
छिन में जाय सुलटाना रे ॥ ८ ॥
राधास्वामी गुरु के चरन पकड़ जो
उलटी धार चढ़ाना रे ॥ ६ ॥

---

## शब्द ६२

है कोई ऐसी-सुरत शिरोमन
अटल सुहाग जिन पाना है ॥ टेक ॥
धोय धाय कर चूनर अपनी
सतगुरु रंग चढ़ाना है ॥ १ ॥
निस दिन रहे गुरू रँग राती
एक गुरू रँग भाना है ॥ २ ॥
आठ पहर चितवे गुरु रूपा
सुमिर सुमिर धरे ध्याना है ॥ ३ ॥
आस भरोस जगत की तज के
चरनन गहे ठिकाना है ॥ ४ ॥

लाज शरम झूठी सब अटकें
चित से दूर फिकाना है ॥ ५ ॥
दया मेहर से गुरु की घट में
प्रेम भरे अधिकाना है ॥ ६ ॥
भाग भरी अस सुरत सुहागिन
सहजहि घर को जाना है ॥ ७ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड असारा
छूटे देश बिगाना है ॥ ८ ॥
परस चरन प्रीतम राधास्वामी
बहुर जनम नहिं पाना है ॥ ९ ॥

---

शब्द ६२

अचरज भाग जगा मेरा प्यारी
(मोहिं) नाम दिया गुरु दाना री।
जनम जनम की तृषा बुझानी
पी पी अमीं अघाना री ॥ टेक ॥
जस कोयल नित अम्ब देख कर
मस्त होय मगनाना री ।
मस्त मगन होय कू कू करती
रूप अम्ब मन भाना री ॥ १ ॥
अस गुरु रूप निहारत निस दिन
मम हिरदा हरषाना री ।

हरष हरष गुरु नाम सुमिरती
　　नैनन रूप बसाना री ॥ २ ॥
जस कँगला कोई जनम जनम का
　　दाम हाथ नहिं लाना री ।
हीरा पाय गाँठ गठियावे
　　हरदम रहे हुलसाना री ॥ ३ ॥
अस गुरु नाम पाय जिय मोरा
　　निस दिन रहे बिगसाना री ।
कहन सुनन में कैसे लाऊँ
　　अचरज मिला खज़ाना री ॥ ४ ॥
सतगुरु दयाल करी जब किरपा
　　तब यह भाग हम पाना री ।
दीन दुखी मोहिं देख दयानिधि
　　दीना नाम निशाना री ॥ ५ ॥
दूर बहाय सब आन बखेड़ा
　　निस दिन नाम कमाना री ।
राधास्वामी नाम मिला अनमोला
　　दम दम भाग सराहना री ॥ ६ ॥

---

शब्द ६४

ना जानूँ साहब कैसा है ॥ टेक ॥
कोई दिखावे काली मूरत
　　कोई बतावे गजानन सूरत ।

रूप भयंकर पेख होय हैरत
क्या साहब तू ऐसा है ॥ १ ॥
कोई तुलसी पीपल बतलाते
कोई भैंसा बकरा कटवाते ।
गाय साँप बन्दर पुजवाते
क्या साहब तू ऐसा है ॥ २ ॥
कोई कहे तुम अकाश सरूपा
संस्कृत के बसो तुम कूपा ।
हवन यज्ञ के निस दिन भूखा
क्या साहब तू ऐसा है ॥ ३ ॥
कोई कहे तुम अरब में बसते
कुराँ वज़ीफ़ा के बस रहते ।
नबी मेहर बिन कभी न मिलते
क्या साहब तू ऐसा है ॥ ४ ॥
कोई कहे ईसा पुत्र तुम्हारा
आया जग में धर औतारा ।
बिन उन मेहर न कोई सहारा
क्या साहब तू ऐसा है ॥ ५ ॥
बिन गिरजा तुम आन न भावें
जो चाहे तुम्हें वहाँ ही पावे ।
इंजील का पढ़ना अधिक सुहावे
क्या साहब तू ऐसा है ॥ ६ ॥

कबीर और नानक गुरु के घराने
　　ग्रंथ बिना कोई गुरु नहिं मानें।
पुस्तक पूजें चौका आनें
　　क्या साहब तू ऐसा है ॥ ७ ॥
हे साहब मेरे प्रीतम प्यारे
　　हे स्वामी मेरे प्रान अधारे ।
क्या सचमुच रहो इन के सहारे
　　जिन का भाखा लेखा है ॥ ८ ॥
मेरे मन अस निश्चय आई
　　तुम्हरे किंकर सब ये रहाई ।
तुम ते अधिका और न काई
　　क्या साहब तू ऐसा है ॥ ९ ॥
तन और मन और सूरत प्यारी
　　तीन वस्तु मोहिं दरसें न्यारी ।
अलग अलग इन रहें भँडारी
　　क्या साहब जग ऐसा है ॥ १० ॥
तन भंडार सब पिंड बखाना
　　मन भंडार ब्रह्मंड पहिचाना ।
सुरत भँडार मैं तुम को जाना
　　क्या साहब तू ऐसा है ॥ ११ ॥
भटक भटक मैं वहु भटकाया
　　कहीं खोज ना तुम्हरा पाया ।

राधास्वामी दर जब सीस नवाया
तब समझा यह लेखा है ॥ १२ ॥

---

## शब्द ६५

चल री सुरत अब निज घर अपने
काहे को जग में सोती है ॥ टेक ॥
जब से निज घर तेरा छूटा
काल करम तोहिं धर धर लूटा ।
दुक्ख दरद तेरा कोई न पूछा
रही अकेली रोती है ॥ १ ॥
परम पुरुष प्यारे राधास्वामी दाता
सब रचना के पित और माता ।
वह ही हैं तेरे साँचे ताता
सत्तपुरुष तेरा गोती है ॥ २ ॥
तिमिरखंड यह पिंड रहावा
आगे ब्रह्मँड देश कहावा ।
अद्भुत रचना जहाँ बसावा
झिलमिल झिलमिल जोती है ॥ ३ ॥
तिस आगे इक देश नियारा
सत्त देश ताहि सन्त पुकारा ।
सत्त लोक बसे ताहि मँझारा
जहाँ सत्त सत्त धुन होती है ॥ ४ ॥

दो पद आगे और रहाने
अलख अगम तिन नाम धराने ।
लखे उन्हें सोई निज घर जाने
नहीं सब करनी थोथी है ॥ ५ ॥
राधास्वामी बसें जहाँ कुल भूपा
अकह अपार अगाध सरूपा ।
हैरत हैरत धाम अनूपा
अनबेधा वह मोती है ॥ ६ ॥
निज घर का मैं भेद पियारी
राह रकाने संग कहा री ।
अब चलने की करो तयारी
बृथा समय क्यों खोती है ॥ ७ ॥
सतगुरु खोज करो उन संगा
भूल भरम होवें सब भंगा ।
जुक्ती लेय उड़ो जस चंगा
खुले तब घट की पोथी है ॥ ८ ॥
मेहर करें जब दीनदयाला
निज घर अपना लेय सँभाला ।
राधास्वामी राधास्वामी नाम की माला
दम दम रहे पिरोती है ॥ ९ ॥

## शब्द ६६

आज आरती करूँ सजाई ।
उमँग प्रेम मेरे अधिक समाई ॥ १ ॥
तन और मन कीन्हे मैं निश्चल ।
काम क्रोध की मेटी किलकिल ॥ २ ॥
सुरत निरत सँग उमँगत आई ।
नैन कमल पर गई जमाई ॥ ३ ॥
राग उठा अद्‌भुत इक न्यारा ।
कहन न आवे वार न पारा ॥ ४ ॥
सुन सुन राग अब छोड़त तन को ।
भाग चली फिर द्वार दसम को ॥ ५ ॥
मानसरोवर पहुँची जाय ।
हंसन सँग रही मल मल न्हाय ॥ ६ ॥
कल मल कीन्हे सब ही दूर ।
निरखा आगे अद्‌भुत सूर ॥ ७ ॥
बीना धुन सुन अधिक हरषती ।
झूम झूम पग आगे धरती ॥ ८ ॥
सत्त लोक कीन्हा परवेशा ।
अचरज लीला अचरज देशा ॥ ९ ॥
रूप पुरुष का कैसे बरनूँ ।
कोटि सूर लाजें इक रोमूँ ॥१०॥

अलख अगम लख पहुँची पार।
दरस किये जाय निज दिलदार ॥११॥
चरन कमल पर सीस धराया।
रोम रोम से राधास्वामी गाया ॥१२॥
राधास्वामी प्यारे निज दिलदार।
बहुत किया सूरत से प्यार ॥१३॥
मेहर से कीन्हा पूरन काज।
मेहर से बख़्शा औसर आज ॥१४॥
धन राधास्वामी प्यारे सतगुर।
मेहर करें नित जो सब जन पर ॥१५॥

---

## शब्द ६७

### सेवक—सम्वाद

(प्रश्न)

सेवक करे पुकार धार चित दृढ़ बिस्वासा।
सतगुरु होयँ दयाल दान दें चरन निवासा ॥ १ ॥
आयू बीती जाय दिनों दिन काया छीजे।
बल पौरुष रहे हार जतन कोई नेक न सूझे ॥ २ ॥
सुनिये दीन दयाल मेहर कर बिनती मेरी।
मान लेव दया धार नहीं अब लाओ देरी ॥ ३ ॥
पुत्र पिता से छूट सहे दुख बहु या जग में।
बिन माता मर जाय बिलप कर सुत कब लग में ॥ ४ ॥

पति का होय बियोग पतूनी सिर होय रँडेपा ।
छूटे कस जंजाल जरे नित याहि अँदेसा ॥ ५ ॥
प्रीतम रहें बिदेस प्रेमी का निस दिन मरना ।
मछली जल का जीव बिना जल कैसे जीना ॥ ६ ॥
स्वामी मुख लें मोड़ और फिर फेरें नाहीं ।
सेवक झुर झुर मरे जीवना नाहिं सुहाई ॥ ७ ॥
प्रेमी सेवक बाल सबन का ऐसा लेखा ।
प्रीति जहाँ जिस लगी छुटे पर मरतें देखा ॥ ८ ॥
मैं हूँ बाल तुम्हार और सेवक भी साँचा ।
हो स्वामी सिरताज मेरे तुम पितु और माता ॥ ९ ॥
प्रेमी भी तुम्हार सदा मैं चरनन राता ।
तुम प्रीतम दिलदार सरल चित सुन्दर गाता ॥ १० ॥
अब तुमही करो नियाव नहीं धृग ऐसा जीना ।
तिहरा दुख जब पड़े बिना तुम निस दिन सहना ॥ ११ ॥
ऐसी दशा निहार तरस तुम नेक न आवत ।
दीन दुखी की माँग ध्यान तुम नाहिं समावत ॥ १२ ॥
दूना दुख हो जाय उठें जब ऐसी शंका ।
ऊपर जलती आग झले कोइ जैसे पंखा ॥ १३ ॥
तुम्हरे क्या यही रीति तरस कबहूँ नहिं करना ।
ज़ख़्मी कोइ हो जाय लोन ऊपर से धरना ॥ १४ ॥
सुनिये आज पुकार दया धर प्यारे सतगुर ।
लहू अपना नित पिऊँ सहूँ मैं सब की दुर दुर ॥ १५ ॥

परम गुरू दातार मेरे तुम राधास्वामी ।
चरनन लेउ लिपटाय करो सब दुख की हानी ॥ १६ ॥

---

## शब्द ६८

(उत्तर)

सतगुरु परम दयाल कही यह अम्मृत बानी ।
सुन लो बचन हमार कहूँ मैं तोहिं बुझानी ॥ १ ॥
यह है तन का देश बिना तन जीना नाहीं ।
जो शक्ती यहाँ बसे रहे परदे के माहीं ॥ २ ॥
मनुआँ बड़ बलवान उसी की यहाँ ठकुराई ।
करन कारन सब काज यहाँ पर मन ही रहाई ॥ ३ ॥
सूरत रहे नियार नहीं उलझेरे पड़ती ।
मन को देती जान और कुछ काज न करती ॥ ४ ॥
पाकर सुत से जान करे मन अपनी किरिया ।
तन को देवे जान उसी में बँध पुन रहिया ॥ ५ ॥
जग का यही ब्योहार कहा मैं तोहिं सुनाई ।
प्रेमी सेवक बाल यहाँ पर मन ही रहाई ॥ ६ ॥
प्रीतम स्वामी पिता यही मन नाम धराने ।
तन या मन की प्रीति रहें जीव सदा भुलाने ॥ ७ ॥
तन के भीतर लहू लहू बस प्रीति जो होती ।
महिमा वाकी अधिक जगत में निस दिन रहती ॥ ८ ॥

इन से बढ़ चढ़ प्रीति रहे इक और अलगानी ।
पिछला कोइ संजोग कहें कारन जिस ज्ञानी ॥ ९ ॥
यही सब जग की प्रीति परे इस क्या कुछ लेखा ।
बिन तन मन से होय न्यार कहो कस जाय वह पेखा ॥ १० ॥
स्रुत की स्रुत सँग प्रीति कहो कोइ कैसे गावे ।
रसना रहे तुतलाय बरन में कैसे लावे ॥ ११ ॥
गन्दा तन मन लहू और गन्दी इन रीती ।
निर्मल चेतन सुरत और निर्मल इस प्रीती ॥ १२ ॥
शील संतोष और बिरह मिलें सँग प्रेम और ज्ञाना ।
इन सब का ही खेल सुरत रहे सदा खिलाना ॥ १३ ॥
सुरत अंश की प्रीति समझ काहू नहिं आवे ।
फिर अंशी की प्रीति भला कैसे लख पावे ॥ १४ ॥
सुरत प्रेम की बुन्द अकथ इस का ब्योहारा ।
अंशी प्रेम भँडार प्रीति उस अगम अपारा ॥ १५ ॥
काल करम का देन रहे तुम सिर अधिकानी ।
जेहि बिधि होय वह दूर रीति हम वैसी ठानी ॥ १६ ॥
कहो इसे ना न्याव दया निज करो बिचारी ।
तुम्हरा सिर ले बोझ देह यहँ आ हम धारी ॥ १७ ॥
ग़ाफ़िल थे तुम पड़े हुए जस बाल अजाना ।
हम ही हेला मार मार तुम्हें सुधि में लाना ॥ १८ ॥
घर का दिया सँदेस और चलने की जुक्ती ।
प्रीति हिये उमँगाय कराई सच्ची भक्ती ॥ १९ ॥

जब लग चुके न देन　सहो दुख रह इस जंगल ।
जिस दिन चूका देन　करो फिर आनँद मंगल ॥ २० ॥
तुम ही करो विचार　तरस क्या हमरे नाहीं ।
राधास्वामी मेहर बिचार　रहो चरनन की छाहीं ॥ २१ ॥

---

## शब्द ६९
### ( प्रश्न )

सुनकर अम्मृत बचन　अधिक सेवक हरषाया ।
तपन हुई घट दूर　हिये बिच प्रेम भराया ॥ १ ॥
चरनन सीस नवाय　अरज़ यह कीन सँभारे ।
हे स्वामी सिरताज　मेहर के निज भंडारे ॥ २ ॥
समझ पड़ी कुछ आज　मौज जस तुमने कीन्ही ।
तुम्हरी मेहर अपार　दयानिधि कुछ हम चीन्ही ॥ ३ ॥
तुम बिन को अस होय　मेहर अस जो चित लाता ।
सब जीवन के हाल ज़ार पर　तरस जो खाता ॥ ४ ॥
जान पड़ी अब मोहिं　दशा जो हम सिर आई ।
वह सब मौज तुम्हार　मेहर बस तुमने रचाई ॥ ५ ॥
पर यह देश उजाड़　जहाँ मोहिं बासा दीना ।
अरु मन काला नाग　संग जो मेरे कीना ॥ ६ ॥
देख देख दिन रात　रहूँ अति हिय घबरानी ।
डरप डरप जिय जाय　अजा जस सिंह दिखानी ॥ ७ ॥
यह तन दुख की खान　मोहिं इक छिन नहिं भावे ।
बैरी मन का संग　तनिक नहिं मोहिं सुहावे ॥ ८ ॥

सुमिरन ध्यान और भजन  जुक्ति निज घर चलने की।
निज किरपा हिये धार  दया निधि तुमने बख़्शी ॥ ९ ॥
करन चहूँ दिन रात  उमँग अँग सँग में लेकर।
पर यह बाधा होयँ  पटकते धक्के देकर ॥ १० ॥
कभी खुजली होजाय  कभी पटकन होय तन में।
कभी आलस सिर आय  गुनावन उठते मन में ॥ ११ ॥
जग के भोग बिलास  चहे मन दिन और राती।
इनकी लहर उठाय  करे मन बहु उत्पाती ॥ १२ ॥
झुरत रहूँ बेहाल  पेश कुछ नेक न जावे।
तुम्हरा सुन्दर रूप  नैन में नाहिं ठैरावे ॥ १३ ॥
कौन मौज तुम धार  दिये मोहिं ऐसे साथी।
मन सा बैरी दुष्ट  बसाया मेरी छाती ॥ १४ ॥
तुम्हरा यह सब खेल  समझ मेरी नहिं आवे।
समरथ पुरुष दयाल  मेहर अस क्यों न करावे ॥ १५ ॥
सँग इनका छुट जाय  सुरत रहे चरनन अटकी।
यह तन होवे नाश  भरम की फूटे मटकी ॥ १६ ॥
सतगुरु दीनदयाल  मेहर अब ऐसी धारो।
तन मन होकर नाश  सुरत का होय उबारो ॥ १७ ॥

---

## शब्द ७०

(उत्तर)

सुन सेवक का हाल  दयानिधि बचन सुनाया।
दया धार बरसाय  दर्द दुख दूर बहाया ॥ १ ॥

मानुष जन्म अमोल भेद कोइ वाहि न जाने ।
बिन जाने याहि भेद क़द्र कैसे मन आने ॥ २ ॥
जस तेली अनजान भेद पारस नहिं जाना ।
पड़ी पारसी पास रहा नित तेल तुलाना ॥ ३ ॥
अस बिन समझे भेद क़दर तुम तन नहिं कीनी ।
हाड़ माँस अटकाय ख़बर अन्तर नहिं लीनी ॥ ४ ॥
अंशी निज भंडार सर्व रचना जस साजी ।
ऐसे वित अनुसार सुरत तन रचना राची ॥ ५ ॥
सन्तन कहा सुनाय भेद रचना का ऐसा ।
पिंड ब्रह्मंड और परे कहा सन्तन का देसा ॥ ६ ॥
इनके छै छै भाग खोल कर सन्त बखाने ।
चक्र कमल और पदम उन्हीं के नाम कहाने ॥ ७ ॥
मानुष चोले माहिं रहे इन सब की छाया ।
मंडल से होय मेल द्वार जो जाय खुलाया ॥ ८ ॥
ज्यों ज्यों जागे भाग खुलें सब गुप्त दुवारे ।
सहज जीव निरवार मेल हो निज भंडारे ॥ ९ ॥
बिन इस तन के और कहीं यह औसर नाहीं ।
कोटि जन्म भटकाय तभी यह हाथ लगाई ॥ १० ॥
भक्ति बीज अनमोल सन्त जो आकर डारें ।
बिन या तन घट भूमि कहीं नहिं अंकुर लावें ॥ ११ ॥
घर चलने की जुक्ति सन्त जो आय बताई ।
बिन या तन के बास कभी ना जाय कमाई ॥ १२ ॥

ताते होय हुशियार क़दर इस तन की जानो ।
ऐसे तन के स्वाँस स्वाँस की क़ीमत मानो ॥ १३ ॥
मन जो तुमको मिला कहूँ इस भेद सुनाई ।
सुत और तन के बीच रहा यह मेल कराई ॥ १४ ॥
आदि कर्म का भार रहा जो तुम्हरे सिर पर ।
वाकी जब तब धार गिरे इस मन के ऊपर ॥ १५ ॥
कहो मन को तुम द्वार चहे समझो इक नाली ।
आदि कर्म की मैल जहाँ से वह होय खाली ॥ १६ ॥
बिन पाये मन संग नहीं हो तन में बासा ।
बिन इनके संजोग कर्म नहिं होवें नासा ॥ १७ ॥
बिन हूए कर्म नाश नहीं हो घर को चलना ।
जम की हाट बिकाय पड़े दुख निस दिन सहना ॥ १८ ॥
राधास्वामी कहा सुनाय खोल अब सारा भेदा ।
चरनन में लौ लाय हरो तन मन के खेदा ॥ १९ ॥

---

## शब्द ७१

( प्रश्न )

तन मन का सुन भेद हुआ सेवक अति परसन ।
सुधि बुधि गई बिसराय गिरा सतगुरु के चरनन ॥ १ ॥
मेहर दया के सिन्ध दया की लहर उमाई ।
दोनों भुजा पसार लिया सेवक गल लाई ॥ २ ॥

जब कुछ बीते काल खुली सेवक की आँखी।
गल बिच गलफी डाल अरज़ यों मुख से भाखी ॥ ३ ॥
जो कुछ भेद अमोल कहा तुम प्यारे सतगुर।
प्रिय लागा अति मोहिं बसा वह मेरे निज उर ॥ ४ ॥
दूर हुए दुख साल फ़िकर बहु होगये नासा।
मन बिच आई शान्ति बँधी चित चरनन आसा ॥ ५ ॥
तुम्हरी आज्ञा पाय करूँ परशन इक झीना।
दया धार समझाव पड़े कबलग मोहिं जीना ॥ ६ ॥
कर्म बोझ सिर मोर पड़ा बेहद है स्वामी।
जब लग वह नहिं नाश सुरत रहे तन बिच तानी ॥ ७ ॥
याते होय अनुमान जुगन जुग मों को रहना।
या मंडल में पड़े रूप मर मर के धरना ॥ ८ ॥
मन की नाली खबर नहीं सूखे कब ताईं।
ऐसा दिन कब आय चलन हो निज घर राहीं ॥ ९ ॥
निज घर है अति दूर राह भी बहु रपटीली।
पहुँचन कब कस होय चाल जब ऐसी ढीली ॥ १० ॥
स्वामी दीन दयाल जाउँ मैं बलि बलि तुम्हरे।
देओ उत्तर दया धार प्रश्न इसका भी हमरे ॥ ११ ॥

---

## शब्द ७२

(उत्तर)

स्वामी मेहर बिचार बचन धीरज अस बोले।
सुनहु भेद अब सार कहत हूँ तुम से खोले ॥ १ ॥

करम भार का भेद रहे सच मुच ही ऐसा ।
कोटि जनम लग जायँ चुकन को इसका लेखा ॥ २ ॥
आदि कर्म जंजाल लगा है जैसा कठिना ।
छूटन किस दिन होय समझ में को ला सकना ॥ ३ ॥
निज घर जेती दूर बिकट जस रस्ता कहियन ।
पहुँचन होय न होय समझ में नाहिं समैयन ॥ ४ ॥
एक बार इक पेड़ खड़ा कहिं सीधा ऊँचा ।
शिखरी पर फल लगा जिसे जहँ कोइ न पहुँचा ॥ ५ ॥
और कोई इक कीट घूमता पृथिवी ऊपर ।
पहुँचा यहँ पर आय वृत्त फल महिमा सुनकर ॥ ६ ॥
कौन जतन वह करे पुरे कस मन की आसा ।
भूमी ऊपर पड़ा कीट नित सहे तरासा ॥ ७ ॥
एक जतन यह होय चढ़े वह तरवर ऊपर ।
या फल नीचे आय पड़े तरवर से गिरकर ॥ ८ ॥
दोनों जतन असाध कीट की पेश न जावे ।
चढ़ने का बल नाहिं न हाँ मन धीरज लावे ॥ ६ ॥
कोटि बरस दरकार पहुँच को फल के नेरे ।
और देखे फल बाट पड़े जनमन को ठेरे ॥ १० ॥
बहुत देर तक सोच कीट मन यही समाया ।
जो कुछ होय सो होय चढ़ो ऊपर बल लाया ॥ ११ ॥
चिकना था वह पेड़ खड़ा इक दम था सीधा ।
बल पौरुष सब लाय कीट कुछ ऊपर पहुँचा ॥ १२ ॥

हार गई जब देह लगा धड़ थर थर कँपने ।
ठहरन से लाचार लगा अब नीचे गिरने ॥ १३ ॥
पग जो रपटा खाय गिरा वह औंधा नीचे ।
बेबस रहा सिसकाय कहे दुख अपना किससे ॥ १४ ॥
इसी हाल के माहिं वहाँ पच्छी इक आया ।
देख कीट बेहाल तरस मन ताहि समाया ॥ १५ ॥
निकट कीट के आन कहा पच्छी ने ऐसे ।
क्या रे कीट अजान पड़े बेदम हो कैसे ॥ १६ ॥
सुन कर मीठा बोल कीट ने लिया सँभाला ।
दुख अपने का हाल सभी फिर रो कह डाला ॥ १७ ॥
पच्छी दया बिचार कहा तुम बैठो सीधे ।
पग हमरा लो थाम ज़ोर कर दोनों कर से ॥ १८ ॥
लेकर तुमको उड़ूँ पलक में पहुँचें ऊपर ।
फल का करो अहार सहज में मुझपर चढ़कर ॥ १९ ॥
बोला कीट पुकार धन्य हो मीत सुमीता ।
पर बल कर में नाहिं गहन का नाहिं सुभीता ॥ २० ॥
ना जानूँ छुट जाय चरन कहिं मग के माहीं ।
क्या गति मेरी होय गिरूँ जो सिर के दाईं ॥ २१ ॥
पच्छी सुन यह बोल कहा निज दया उमाये ।
लेट जाव तुम सीध चोंच में लेउँ उठाये ॥ २२ ॥
ज्योंही चोंच मँझार लिया तिस कीट दबाई ।
करन लगा हाकार मेरा दम निकला भाई ॥ २३ ॥

हे सज्जन सिरताज करो कुछ और उपाए ।
जामें रहे न धोख सहज में जो बन आए ॥२४॥
तब पच्छी यों कहा जतन अब रहता एके ।
कस तुम पकड़ो मोहिं और मैं तुमको हलके ॥२५॥
जब तुम गिरने लगो गहूँ मैं कस के तुमको ।
इसमें दुख जो होय सहो तुम चुप से उसको ॥२६॥
घड़ी पलक की बात फ़िकर मन में नहिं राखो ।
सहज होय निर्वाह सहज में फल रस चाखो ॥२७॥
सेवक करो विचार बात जो हमने भाषी ।
जिव है कीट समान और सतगुरु हैं पच्छी ॥२८॥
फल समझो निजधाम करम का पेड़ पसारा ।
चढ़ना तिन भुगतान कठिन चित लेव सँभारा ॥२९॥
बिन पाए निज धाम चैन भी जीव न पावे ।
परलय की तकि बाट जीव से रहा न जावे ॥३०॥
बिन गुरु आए हाथ काज कुछ जीव न सरि है ।
निर्बल कीट समान चढ़े और गिर गिर पड़ि है ॥३१॥
जो बड़भागी जीव मिले सतगुरु से आई ।
चरन कमल सिर धार रहे तिन माहिं समाई ॥३२॥
तिनकी सुरत लपेट शब्द में इक दिन धुरघर ।
सहजहि दें पहुँचाय मेहर से प्यारे सतगुर ॥३३॥
चिन्ता अब सब छोड़ करो सतगुरु से प्रीती ।
राधास्वामी कही बनाय सहज यह सब से रीती ॥३४॥

## शब्द ७३

(प्रश्न)

मेहर भरे सुन बोल घटा घट सेवक छाई ।
रिम झिम बरषा लाय धार जल नैन बहाई ॥ १ ॥
घुमँड घुमँड घनघोर प्रेम के बरसे बदला ।
रोम रोम हरषाय हिये के खिल गये कमला ॥ २ ॥
आस वास जग धुली हुआ हिरदा अति निर्मल ।
गन्ध सुगन्धी पाय भँवर मन बैठा निश्चल ॥ ३ ॥
सेवक होय अस हाल प्रश्न की सुद्धि बिसारी ।
स्वामी सरन अडोल हिये बिच दृढ़ कर धारी ॥ ४ ॥
स्वामी परम दयाल मेहर तब कीन्ह नवीना ।
धर सेवक सिर हाथ बचन मुख ऐसा कीना ॥ ५ ॥
सेवक भाग तुम्हार जगा अचरज इस छिन में ।
सेव माँग सोइ माँग आय जो तुम्हरे मन में ॥ ६ ॥
सेवक गद् गद होय अरज अस कीन्ह सँभारा ।
हे स्वामी सिरताज मेहर के निज भंडारा ॥ ७ ॥
ऐसी कोइ पहिचान सन्त की कहो बिचारी ।
समझ बूझ जिस लाय जीव लें सब चित धारी ॥ ८ ॥
कर तुम्हरी पहिचान सभी जिव बैठें जुड़ मिल ।
होंय चरनन लौलीन मिटे सब दाँता किलकिल ॥ ९ ॥
प्रेम प्रीति घट आय भरम दल होवें नासा ।
सहज बने जिव काज चरन में मिले निवासा ॥१०॥

सब मिल गुन तुम गाएँ जगत में होय उजियारा ।
माँग यही इक मोर परम गुरु दीन दयारा ॥११॥

## शब्द ७४

( उत्तर )

सुन सेवक की माँग हुए स्वामी अति मगना ।
गहरी मेहर विचार मृदू अस बोले बचना ॥ १ ॥
माँग है तुम्हरी ठीक परख पर सन्त की झीनी ।
मेहर करें जब धनी तभी कोइ ले उन चीन्ही ॥ २ ॥
जा हिरदय अनुराग सोई जिव जानो मेहरी ।
सन्त परख सोइ पाय सहज मन बुद्धी हेरी ॥ ३ ॥
कान पड़े जब भिनक सन्त जन कहीं बिराजे ।
हिरदय उमँगे चाव दरस की लगे पियासे ॥ ४ ॥
होवें सन्त असन्त नहीं कुछ पता ठिकाना ।
ले सरधा और आस दरस को होय रवाना ॥ ५ ॥
सन्त होय कोइ एक और पाखंडी बहुतक ।
कर बाहर श्रिंगार करें निसदिन बहु कौतुक ॥ ६ ॥
इक सम आसन लाय कहीं थे जिव बहु बैठे ।
ऊपर चादर डाल सीस मुख सभी लपेटे ॥ ७ ॥
बालक इक अनजान पिता अपने को खोजत ।
जा पहुँचा वाहि थान खबर पा भरमत डोलत ॥ ८ ॥
चादर लिपटे देख सभी बालक घबराया ।
सोच समझ चित लाय सबन का मुख खुलवाया ॥ ९ ॥

पहिले देखा नाहिं पिता मुख भरके दृष्टी ।
देख सबन सम हाल परख कस लावे पितु की ॥ १० ॥
मन में तब यही फुरी धरो टुक धीर दिलासा ।
पितु मेरे होंय एक और सब भाँड तमासा ॥ ११ ॥
पितु के चित में प्यार रहे मम ओर समाना ।
पाखंडी चित घात द्रोह भय करें ठिकाना ॥ १२ ॥
पितु मेरे का प्यार छिपे नहिं कभी छिपाया ।
दूसर से अस प्यार बने नहिं कभी बनाया ॥ १३ ॥
इक इक के ढिग जाय कहा तब बाल पुकारी ।
मैं हूँ बाल अनाथ पिता बिन भया दुखारी ॥ १४ ॥
अपने पितु के खोज तजा मैं घर और बारा ।
करिहौं खोज और जाँच समझ अपनी अनुसारा ॥ १५ ॥
सुन सुन बालक बोल हुए अँग सबके परगट ।
सहज बाल पितु पाय चरन में लागा झट पट ॥ १६ ॥
अनुरागी अस जाय रहे कुछ दिन उन सँग में ।
दम दम ले पहिचान बरति हैं किन किन अँग में ॥ १७ ॥
सतगुरु सन्त दयाल जीव के सद हितकारी ।
जग में प्रगटें आय जीव का करन उबारी ॥ १८ ॥
सब से करें पियार बाल सम सब को जानें ।
भूल चूक करे बाल कभी नहिं चित में आनें ॥ १९ ॥
उनका कोमल अंग छिपे नहिं कभी छिपाया ।
दूसर से यह अंग निभे नहिं कभी निभाया ॥ २० ॥

राधास्वामी कहें सुनाय परख यह सोई कर पावे ।
सन्त चरन अनुराग हृदय जिस माहिं समावे ॥ २१ ॥

---

## शब्द ७५

### ( प्रश्न )

सेवक सुन पहिचान मगन होय बोला ऐसे ।
सर्व गुनन भंडार कहे कोइ गुन तुम कैसे ॥ १ ॥
सतगुरु की पहिचान कही जो तुमने न्यारी ।
सहज बसी हिये मोर लगी मोहिं अति कर प्यारी ॥ २ ॥
अद्भुत सुन्दर सीख जनाई दो इक तुक में ।
अगम अथाह कहो सिन्ध भरा तुम एकहि बुक में ॥ ३ ॥
जो शिक्षा यह धार रहे मन अपने प्रानी ।
निश्चय सन्त असन्त सहज में ले पहिचानी ॥ ४ ॥
सन्त चरन अनुराग हिये जिव होना चहिये ।
मेहर बिना पर धनी नहीं यह धन कोई पइये ॥ ५ ॥
प्रथमे ठहरी मेहर और अनुरागा दूजे ।
तीजे खोज और जाँच समागम सतगुरु पीछे ॥ ६ ॥
एक विनय अब करूँ और मैं तुम से दाता ।
सन्त मिलें क्या करे जीव सो कहो बिख्याता ॥ ७ ॥
जागा हिये अनुराग मेहर जो होगइ धुर की ।
जाँच परख बन आय सरन भी मिलगइ गुरु की ॥ ८ ॥

अब जिव क्या कुछ करे　टिके सुरती निज चरनन ।
और न कितहूँ जाय　करो अब सो भी बरनन ॥ ९ ॥
तुम थी कही जनाय　सहज तरने की रीती ।
सोच फ़िकर सब छोड़　करो सतगुरु से प्रीती ॥ १० ॥
सोच फ़िकर सब छुटें　करे जिव कौन उपावो ।
गहिरी गुरु से प्रीति　जुड़े कस सो कह गावो ॥ ११ ॥

---

## शब्द ७६

(उत्तर)

सुन कर बिनय नवीन　मेहर स्वामी को आई ।
जीवन के हित अर्थ　वचन यों बोल सुनाई ॥ १ ॥
सेवक यह भी प्रश्न　नहीं है तुम्हरा कठिना ।
सहज समझ में आय　करे जिव क्या कुछ जतना ॥ २ ॥
रोगी कोइ जो होय　दुखी अतिकर रोगन से ।
ढूँढ भाल ले पाय　जड़ी अस कहिं भागन से ॥ ३ ॥
जाके पीये घोट　और घिस घिस के लाए ।
कटत कटे सब रोग　देह निर्मल हो जाए ॥ ४ ॥
रोगी क्या कुछ करे　बने जो ऐसी सूरत ।
सोचो मन में आप　कहन की नाहिं ज़रूरत ॥ ५ ॥
हाथ लगे पर जड़ी　उमँग अस बाढ़े मन में ।
आधा दुख मिट जाय　हर्ष बस से तत् छिन में ॥ ६ ॥
घिस घिस के वह लाय　प्रीति से निस दिन बूटी ।
आस भरोसा धार　पिये वाहि दिन दिन कूटी ॥ ७ ॥

कुछ दिन लाये खाय असर जो बूटी लावे ।
तन का रोग असाध सहज में कटता जावे ॥ ८ ॥
फिर तो यही जी आय लेस ले सारे तन को ।
पेश कहीं जो जाय भक्त ले कई इक मन को ॥ ९ ॥
भूले तन की पीड़ और रोना भी भूले ।
वार वार सिल वाट धरे बूटी और भूले ॥ १० ॥
जब लग बिनसे रोग होय नहिं काया निर्मल ।
चैन न उसको आय तजे नहिं बूटी छिन पल ॥ ११ ॥
जग के भीतर बास लगा जिसको दुखदाई ।
भोग रोग सम जान पड़े जिसको सब आई ॥ १२ ॥
रहे दुखी अत्यन्त तपत बेबस रहे तन में ।
पेश कछू नहिं जाय सहे दुख मनहीं मन में ॥ १३ ॥
बूझत बूझत बूझ पड़े महिमा सन्तन की ।
जाग उठे बड़ भाग लाग हो चित चरनन की ॥ १४ ॥
ऐसा जा का हाल सोई अनुरागी कहियन ।
मेहर करी जब धनी तभी चित लाग समैयन ॥ १५ ॥
अनुरागी अस जीव महा रोगी सम जानो ।
और सतगुरु संजोग जड़ी का मिलना मानो ॥ १६ ॥
हाथ लगे पर जड़ी खिला मन जस रोगी का ।
आन मिले गुरु देव घटे दुख अस खोजी का ॥ १७ ॥
जस रोगी ले आस करे बूटी का सेवन ।
खोजी धर बिश्वास रहे कुछ दिन गुरु चरनन ॥ १८ ॥

सेवा निस दिन करे प्रीति से घिस तन मन को ।
संग में बैठे जाग खोल के नैन श्रवन को ॥१९॥
बचन सुने चित देय पिये जस रोगी बूटी ।
ले जुक्ती अभ्यास करे दे मन को कूटी ॥२०॥
गुरु सँग के परताप तपन जब मिटती देखे ।
सहज होत जिव काज आस जग घटती पेखे ॥२१॥
फिर तो यही मन चाय वार दे सरबस रचना ।
पेश कहीं जो जाय बना ले गुरु को अपना ॥२२॥
भूले जग के दुक्ख और तपना भी भूले ।
नैनन गुरु बिठलाय मगन होय निस दिन भूले ॥२३॥
जब लग होय छुटकार मिले नहिं चरनन बासा ।
चैन न उसको आय तजे नहिं स्वाँस गिरासा ॥२४॥
इससे बढ़ क्या प्रीति करेगा जिव या जग में ।
जाय बसी चित माहिं धसी मन की रग रग में ॥२५॥
राधास्वामी कहा सुनाय यही हैं बढ़ के उपावो ।
गुरु सँग कर के बास प्रीति मन माहिं बढ़ावो ॥२६॥

---

### शब्द ७७

नैया मेरी बूड़त थी जल माहिं ॥टेक॥
काम क्रोध के काले बदला बरषा रहे बरसाय ।
नौ द्वारन से पानी भरता रोका नाहिं रुकाय ॥ १ ॥

करम रेख पड़ी तह में भारी देख देख डर आय ।
लोभ मोह अहंकार की आँधी एक ग़ज़ब रही ढाय ॥ २ ॥
मँझधारा में आय पड़ी रही बेबस गोते खाय ।
खेवटिया कोइ अजब पोस्ती देख देख मुसकाय ॥ ३ ॥
अपनी सी मैं बहुत कराई नेक होश नहिं लाय ।
इर्द गिर्द सब जल थल दीसे पेश कछू नहिं जाय ॥ ४ ॥
उलट नयन मैं ऊपर ताकूँ है कोइ ऐसा करे सहाय ।
करम रेख पर मेख जो मारे चलती पवन थमाय ॥ ५ ॥
सतगुरु सन्त मेरी विनती सुनकर धुर से चल कर आय ।
थाम लिया मोहिं भुजा पसारी सीतल अंग लगाय ॥ ६ ॥
खेवटिया को होश में लाये अमीं बुन्द छिड़काय ।
उलटी धार चलाई नैया अपना ज़ोर लगाय ॥ ७ ॥
भौजल पार सहज मैं पहुँची रही गुरु के गुन गाय ।
धन राधास्वामी प्यारे सतगुरु जिन बूड़त लई बचाय ॥ ८ ॥

---

## शब्द ७८

सतगुरु दीजे मोहिं इक दात ॥ टेक ॥
नीच निबल मैं गुन नहिं कोई ।
बल पौरुष कुछ ज़ोर न गात ॥ १ ॥

आन पड़ा मैं भूल के देशा।
दम दम पर रहा ग़ोते खात ॥ २ ॥
दुष्ट दूत लिया चहुँ दिस घेरी।
बहुत मचाई इन उत्पात ॥ ३ ॥
भजन बन्दगी तुम जो सिखाई।
करन चहूँ मैं चित के साथ ॥ ४ ॥
ये बैरी मेरे जनम जनम के।
रल मिल करते निसदिन घात ॥ ५ ॥
सब बिधि मैं अति दीन अधीना।
डर डर रहूँ अपने दिन काट ॥ ६ ॥
आज दुखी होय रोम रोम से।
करूँ पुकारी तुम से नाथ ॥ ७ ॥
दया बिचारो ऐसी प्यारे।
ज़ोर ज़ुलुम इन होवे मात ॥ ८ ॥
भक्ति तुम्हारी सदा बन आवे।
चरन तुम्हारे रहें सिर माथ ॥ ९ ॥
राधास्वामी प्यारे होउ सहाई।
बाल तुम्हारा रहा बिलक़ात ॥१०॥

---

शब्द ७९

ना जानूँ साहब कब मिलिहो रे ॥ टेक ॥
तुम बिन दुक्ख सहूँ नित साईं
बिलप करूँ चातृक की नाईं।

सुद्धि करो अब मेरे ताईं
हे स्वामी अब आय मिलो रे ॥ १ ॥
तुम बिन सब जग घोर अँधियारा
जीवन का पल पल सिर भारा।
इस जीवन से मरना प्यारा
हे प्रीतम अब सुद्धि करो रे ॥ २ ॥
मैं पपिहा नित रटना लाई
स्वाँति बुन्द बिन कछू न भाई।
सीपी सम मुख रहूँ खुलाई
स्वाँति के बादल आय बरसो रे ॥ ३ ॥
बरन कहूँ क्या हाल जस मेरा
दर्दी बिना कोइ नेक न हेरा।
हे समरथ सुनो दर्दी की टेरा
घट मेरे में आय बसो रे ॥ ४ ॥
मैं मूरख हूँ अति अनजाना
तुम दर्शन बिन भया दिवाना।
जो चाहो मोहिं होश में आना
चरन कमल मेरे सीस धरो रे ॥ ५ ॥
हे सतगुरु साहब राधास्वामी
बार बार तुम चरन नमामी।
मेहर करो आज अन्तरजामी
दरस देय दुख दूर करो रे ॥ ६ ॥

नहिं माँगूँ कोइ सुख अस्थाना

नहिं चाहूँ मैं आदर माना।

एक दरस तुम्हरे की चाना

हे राधास्वामी आस पुरो रे॥ ७॥

---

## शब्द ८०

सरन पड़े की लाज प्रभु राखो राखन हार॥ टेक॥

निर्गुनियारा गुन नहिं एकौ औगुन भरे हज़ार॥ १॥

मन के संग सदा मदमाता बिषयन करूँ अहार॥ २॥

हुक्म तुम्हारा नेक न मानूँ बहूँ जगत की लार॥ ३॥

भजन ध्यान और सतसँग सेवा चित से रहा बिसार॥ ४॥

जस तस तुमने सरना लीना तुमही करो निरबार॥ ५॥

सरन दिये की लाज तुम्ही को कीजे जीव उबार॥ ६॥

पतित पावन नाम तुम्हारा लीजे पतित सँभार॥ ७॥

परम गुरू साँचे पितु माता जल्दी सुनो पुकार॥ ८॥

भक्ति भाव की बख़्शिश कीजे अपनी ओर निहार॥ ९॥

जामें छूटें कंटक करमा चरनन मिले अभार॥ १०॥

राधास्वामी सतगुरु परम दयाला दीजे कष्ट निवार॥ ११॥

---

## शब्द ८१

आज तुम चेत करो गुरु संग।

धार कर हियरे भक्ती ढंग॥ १॥

चतुरता अपनी देव बिसार ।
दीनता साँची लेव सँभार ॥ २ ॥

परख कोइ गुरु की क्या आने ।
अगम गति कैसे पहिचाने ॥ ३ ॥

अरे मन साँची जियरे जान ।
समझ तेरी किनके माहिं रहान ॥ ४ ॥

गुरू गति अगम अपार अनाम ।
बुद्धि से कैसे कोई पतियाम ॥ ५ ॥

त्याग सब बुद्धी का बल जोर ।
सरन गुरु निश्चय पावो ठौर ॥ ६ ॥

कोई दिन रहकर गुरु के पास ।
निरख कर कोइ दिन चरन बिलास ॥ ७ ॥

हाल मन अपने का देखो ।
जाल मद मोह कटता पेखो ॥ ८ ॥

छूटती देखो मन की जंग ।
प्रेम गुरु चढ़ता देखो रंग ॥ ९ ॥

निरख यह हाल करो बिस्वास ।
गुरू के संग पुरे सब आस ॥१०॥

बढ़े ज्यों ज्यों गुरु आधारा ।
सहज होय जग से छुटकारा ॥११॥

चाट कोइ दिन गुरु चरनन धूर ।
होय तेरा कारज सहजहि पूर ॥१२॥

मिले निज धाम और अमर बिलास ।
　　परम गुरु राधास्वामी चरनन बास ॥१३॥
परख सतगुरु की यह गाई ।
　　समझ कर मन निश्चय लाई ॥१४॥
चेत सतसँग की सुध लावो ।
　　मेहर राधास्वामी की पावो ॥१५॥

---

## शब्द ८२

गुरू का नाम जपो प्यारी ।
　　रूप गुरु घट में सँभारी ॥ १ ॥
सँभाल कर दृष्टी अन्तर जोड़ ।
　　गुनावन मन की सब ही छोड़ ॥ २ ॥
सुरत से नाम की रटना लाय ।
　　अमीं रस घट में पिओ अघाय ॥ ३ ॥
अमीं रस पी पी होय मन सूर ।
　　मलिनता तन मन की होय दूर ॥ ४ ॥
प्रगट जब शब्द की धुन हो आय ।
　　उसी में सुत तुम देव लगाय ॥ ५ ॥
शब्द धुन सुन सुन बढ़े उमंग ।
　　चढ़े मन घट में सुत के संग ॥ ६ ॥
जाय कर निरखें ज्योति निशान ।
　　खुले फिर लाल सूर अस्थान ॥ ७ ॥

छोड़ मन त्रिकुटी माहिं अकेल।
चढ़े स्रुत सुन में करत कुलेल ॥८॥
पहुँच कर मानसरोबर तीर।
करे स्रुत मंजन निर्मल नीर ॥ ९ ॥
निरख स्रुत आगे चलती दौड़।
मधुर धुन बंसी का सुन शोर ॥ १० ॥
धाय कर पहुँचे सत दरबार।
सरावत भाग करे दीदार ॥ ११ ॥
लेय दुर्बीन बढ़े आगे।
भाग जुग जुग सोया जागे ॥ १२ ॥
जाय परसे राधास्वामी चरना।
सुरत होय मस्त और अति मगना ॥१३॥

---

## शब्द ८३

सरन में गुरु की पाई आज।
बिसारे जग के भय और लाज ॥ १ ॥
चरन गुरु हिरदय माहिं बसाय।
रूप रँग जग के दूर बहाय ॥ २ ॥
संग गुरु लागे अति प्यारा।
दरस गुरु तन मन धन वारा ॥ ३ ॥
बचन गुरु सुन हियरा मायल।
निरख गुरु छबि जियरा घायल ॥ ४ ॥

दया गुरु मुख से बरनी न जाय ।
परख ताहि दम दम भाग सराय ॥ ५ ॥
फ़िकर मेरे दिल के दीन जलाय ।
प्रेम की चिनगी माहिं धराय ॥ ६ ॥
सुरत मेरी गुरु ने कीनी पोढ़ ।
जगत के बन्धन सहजहि तोड़ ॥ ७ ॥
गुरू मोहिं अंग लगाय रहे ।
बाल सम गोद खिलाय रहे ॥ ८ ॥
गुरू मोहिं बख़्शी अद्‌भुत जुक्त ।
मेहर कर कीना जीवन-मुक्त ॥ ९ ॥
कहूँ सब जीवन से सन्देस ।
गहो गुरु सरन छोड़ अन्देस ॥ १० ॥
गुरू प्यारे समरथ पुरुष सुजान ।
सहज में करिहैं तुम कल्यान ॥ ११ ॥
काल का झगड़ा देहैं छुटाय ।
करम का लेखा देहैं चुकाय ॥ १२ ॥
मिटावें तन मन के सब खेद ।
लखावें घट का सब ही भेद ॥ १३ ॥
सुरत को करिहैं भौजल पार ।
शब्द की डोरी कर असवार ॥ १४ ॥
सहस और त्रिकुटी सुन से होय ।
गुफा के द्वारे ले चल तोय ॥ १५ ॥

धाम में अपने दें पहुँचाय ।
चरन में राधास्वामी बास दिलाय ॥ १६ ॥
कहे को मेरे धारो चीत ।
संग गुरु कर के गहो परतीत ॥ १७ ॥
समय फिर ऐसा नहिं पावो ।
खोवो मत नहिं फिर पछतावो ॥ १८ ॥
सरन से गुरु की काज बन आय ।
मेहर कर राधास्वामी कहें समझाय ॥ १९ ॥

---

## शब्द ८४

सन्त में यार परघट है इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ १ ॥
तेरे घट में छिपा बैठा इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ २ ॥
जगत में क्या फिरे मारा इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ३ ॥
बिना सतसंग नहीं मिलना इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ४ ॥
संत से भेद ले घट का इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ५ ॥
सिमट कर आँख में बैठो इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ६ ॥
पुकारो यार को घट में इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ७ ॥
मिले दीदार इक छिन में इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ८ ॥
संत की तब परख आवे इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ९ ॥
सराहो भाग फिर अपने इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ १० ॥
यही है राह मिलने की इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ ११ ॥
कहन राधास्वामी की मानो इधर आओ यहाँ ढूँडो ॥ १२ ॥

---

## शब्द ८५

सतगुरु प्यारे ने जगाई ।
मन में प्रीति नवीनी हो ॥ टेक ॥

प्रीति जगी मन निर्मल हूवा ।
काम क्रोध का बल सब गया ।
छूटे माया मोह मलीनी हो ॥ १ ॥

निर्मल होय मन सतसँग लागा ।
जाग उठा मन सत अनुरागा ।
होगया दीन अधीनी हो ॥ २ ॥

बचन गुरू के चित धर सुनता ।
दर्शन कर कर नित्त उमँगता ।
मेहर गुरू रहे चीन्हीं हो ॥ ३ ॥

उमँग अंग ले किया अभ्यासा ।
फोड़ दिया घट नील अकासा ।
सुरत शब्द में दीनी हो ॥ ४ ॥

सुन धुन स्रुत मन चढ़े अधर में ।
छूट गया मन त्रिकुटी नगर में ।
स्रुत राह घर की लीनी हो ॥ ५ ॥

आगे चढ़ सुन द्वारा तोड़ा ।
भँवरगुफा का सुन लिया शोरा ।
सतपुर की धुन झीनी हो ॥ ६ ॥

अलख लोक सुत पहुँची धाये ।
अगम लोक के पार लँघाये ।
पाया धाम क़दीमी हो ॥ ७ ॥
आदि जुगादी भाग जगाया ।
राधास्वामी प्यारे का दरशन पाया ।
प्रेम अमीं रस भीनी हो ॥ ८ ॥
सतगुरु प्यारे के गुन रही गाय ।
काज किया जिन प्रीति जगाय ।
हुई उन चरनन रीनी हो ॥ ९ ॥

---

शब्द ८६

सुरतिया बिगस रही,
हरदम गुरु सेवा धार ॥ टेक ॥
प्रीति जगी गुरु चरनन भारी ।
छाया घट में प्रेम खुमार ॥ १ ॥
चरनन में रहे नित लिपटानी ।
तन मन धन सब देती वार ॥ २ ॥
उमँग अंग ले सतसँग करती ।
दरशन पर जाती बलिहार ॥ ३ ॥
बचन गुरू के चित दे सुनती ।
मस्त मगन रहती सरशार ॥ ४ ॥
दृष्टि जोड़ के आरति करती ।
घट में चढ़ती शब्द की लार ॥ ५ ॥

अचरज रूप निरखती घट में ।
सूर चन्द का नाहिं शुमार ॥ ६ ॥
अद्भुत मेहर परख सतगुरु की ।
भाग सरावत बारम्बार ॥ ७ ॥
धन राधास्वामी प्यारे सतगुरु ।
धन प्रीतम मेरे सत करतार ॥ ८ ॥
अचरज खेल दिखाया मोंको ।
घट की दिखाई खूब बहार ॥ ९ ॥
गुन औगुन मेरे चित नहिं धारे ।
आप लिया मोहिं गोद बिठार ॥ १० ॥
धन धन धन प्यारे राधास्वामी ।
धन धन धन मेरे पिता दयार ॥ ११ ॥
हरदम तुम्हरे चरन धियाऊँ ।
हरदम गुन तुम गाऊँ सँभार ॥ १२ ॥

---

शब्द ८७

सुरतिया झुरत रही मन माहिं,
प्रेम की घट में देख कसर ॥ टेक ॥
औगुन अपने निस दिन गुनती ।
गुन गुन रोवत आठ पहर ॥ १ ॥
बुधि चतुराई मान ईरषा ।
जगत लाज और चित की पकड़ ॥ २ ॥

सब मिल मोंको ख़्वार किया है ।
भर भर मन में अपना ज़हर ॥ ३ ॥
दुष्ट बिरोधी अलग सतावें ।
अलग सहूँ मैं इनका क़हर ॥ ४ ॥
मैं चाहूँ निर्मल होय बरतूँ ।
दूर होय सब मन की अकड़ ॥ ५ ॥
पर बल मेरा पेश न जावे ।
बेबस बहती इधर उधर ॥ ६ ॥
जब जब मेहर से सतसँग पाया ।
मिटती देखी इनकी लहर ॥ ७ ॥
प्रेम उमँग कुछ घट में जागे ।
चरनन में मन हुआ स्थिर ॥ ८ ॥
दूर हटे वही हाल बेहाला ।
ध्यान भजन सब गये बिसर ॥ ९ ॥
ज़ुल्मी ज़ुल्म चलावें अपना ।
फाँसें मोहिं कर जाल मकर ॥ १० ॥
प्रेम का किनका जो कहिं पाऊँ ।
तुरत मिटें मेरे सभी फ़िकर ॥ ११ ॥
प्रेम बिना यह दुख सब सहती ।
प्रेम बिना हुई ज़ेर ज़बर ॥ १२ ॥
प्रेम होय तो चढ़ कर घट में ।
दुष्ट बिरोधी मारूँ जकड़ ॥ १३ ॥

नाम की तेग़ चलाऊँ कस कर ।
　　इक इक का सिर काटूँ पकड़ ॥ १४ ॥
पर यह प्रेम तभी मैं पाऊँ ।
　　जब सतगुरु करें धुर की मेहर ॥ १५ ॥
दोउ कर जोड़ करूँ अब विनती ।
　　हे राधास्वामी मेरे सतगुर ॥ १६ ॥
दीन दुखी की अरज़ी सुनिये ।
　　मेहर की कीजे मुझ पै नज़र ॥ १७ ॥
प्रेम का किनका बख़्शिश दीजे ।
　　दर्दी की बँधवाओ कमर ॥ १८ ॥

---

## शब्द ८८

सखी री मैं तो जावत हूँ पिया देश ॥ टेक ॥
या नगरी रह सुख नहिं पाया ।
　　दुखित रही दिल रेश ॥ १ ॥
मन सा बैरी मिला सँगाती ।
　　घट में राखत सदा कलेश ॥ २ ॥
साँचा मीत न कोई देखा ।
　　भाई बन्धु क्या घर के ख़्वेश ॥ ३ ॥
अपने ही सुख को सब चाहत ।
　　अपस्वारथ नित राखत पेश ॥ ४ ॥

भरमत भरमत सब जग डोली ।
पूजे बहुतक गौरि गनेश ॥ ५ ॥
पढ़ पढ़ पोथी बहु थक हारी ।
साँचे सुख का मिला न लेश ॥ ६ ॥
भाग जगे पिया लेवन आये ।
धार के सतगुरु सन्त का भेष ॥ ७ ॥
मेहर करी मोहिं चरन लगाया ।
मेटे दिल के सभी अँदेश ॥ ८ ॥
तुम भी चेत चलो मेरी प्यारी ।
क्यों रहो दुख में इस परदेश ॥ ९ ॥
सतगुरु से मिल जुक्ती धारो ।
मन बैरी के काटो नेश ॥ १० ॥
जो चाहो तुम पता ठिकाना ।
खोज करो राधास्वामी दर्वेश ॥ ११ ॥
मेहर करें इक छिन में भेटें ।
और निज घर का दें संदेश ॥ १२ ॥

---

## शब्द ८९

सुरतिया बिनती करत रही ।
करो गुरु मेरा आज उधार ॥ टेक ॥
जग का रहना मोहिं न भावे ।
दुखी रहूँ मन सँग बीमार ॥ १ ॥

काम क्रोध के खाऊँ झकोले।
मोह माया बस सदा खुवार ॥ २ ॥
एक घड़ी को चैन न पाऊँ।
दुख सुख भोगूँ भोगन लार ॥ ३ ॥
हे स्वामी क्या बरन सुनाऊँ।
जस जस बिपता रही सहार ॥ ४ ॥
ऐसा जग बिच कोई न देखा।
मुझ दुखिया की करे सँभार ॥ ५ ॥
जो देखा सो बढ़का दुखिया।
दग्ध रहे त्रिय ताप मँझार ॥ ६ ॥
सतगुरु सन्त की महिमा सुनती।
मेहर दया के सिन्ध अपार ॥ ७ ॥
भवन छोड़ निज जग बिच आवें।
जीव दया निज हिरदे धार ॥ ८ ॥
जापर दृष्टि मेहर की डारें।
तुरत हरें चित के दुख सार ॥ ९ ॥
जो कोइ सरन में उनकी आवे।
सहज होय वाहि जीव उबार ॥ १० ॥
कोइ दिन सँग में अपने रख कर।
आप करें उस काज सँभार ॥ ११ ॥
अस महिमा सुन बहुतक चित में।
तरस रही कस लहूँ दीदार ॥ १२ ॥

भाग जगा मेरा आदि जुगादी।
मेहर हुई तुम अपर अपार ॥१३॥
भटकत भटकत जस तस स्वामी।
आ पहुँची आज तुम दरबार ॥१४॥
चरन पकड़ अब दृढ़ कर तुम्हरे।
रोम रोम से करूँ पुकार ॥१५॥
मौज करो अस दीन दयारा।
मुझ ग़रीब का होय निरवार ॥१६॥
जग से मेरा नाता टूटे।
मन से छूटे मेरा किनार ॥१७॥
निज घर अपने ओर सिधारूँ।
चरन कमल तुम हिरदे धार ॥१८॥
जल्दी करो देर नहिं लावो।
हे राधास्वामी गुरू दयार ॥१९॥

---

शब्द ६०

सुरतिया हँस हँस गावत नित्त।
गुरू की आरति प्रेम भरी ॥ टेक ॥
प्रेम की दात दई गुरु प्यारे।
गुन औगुन नहिं चित्त धरी ॥ १ ॥
घट में रूप अनूप दिखाया।
सूर चन्द्र की छुटी लड़ी ॥ २ ॥

निज चरनन में खैंच बुलाया ।
　　अचरज अद्भुत मेहर करी ॥ ३ ॥
मेहर भरी दृष्टी अस डारी ।
　　तन मन की सब सुद्धि हरी ॥ ४ ॥
हिरदे के दुख साल मिटाये ।
　　चिन्ता ममता दूर पड़ी ॥ ५ ॥
प्रेम भरे नित बचन सुनाये ।
　　सुन सुन हिरदे रहत तरी ॥ ६ ॥
अस अस किरपा चितवत गुरु की ।
　　प्रेम हुलास रहे चित्त बढ़ी ॥ ७ ॥
उमँग उमँग हिया बलि बलि जाता ।
　　तन मन धन सब वार धरी ॥ ८ ॥
गुरु छबि छाय रहे नैनन में ।
　　प्रेम खुमारी रहे चढ़ी ॥ ९ ॥
राधास्वामी मिले रँगीले सतगुरु ।
　　सुफल करी मेरी देह नरी ॥ १० ॥

---

## शब्द ९१

सन्त की महिमा कहूँ गाई ।
　　पिरेमी जन सुन हर्षाई ॥ १ ॥
सन्त को क्या कोइ पहचाने ।
　　परख बिन क्या महिमा जाने ॥ २ ॥

जगत में जीव मिलें बहुते।
　　　　वृथा दुख औरन जो देते ॥ ३ ॥
दर्द कोई चित में नहिं लाते।
　　　　बिना मतलब दुख पहुँचाते ॥ ४ ॥
उठत रहे मन में यही हिलोर।
　　　　तड़पता देखें कब कोइ और ॥ ५ ॥
कहो मत उनको तुम इन्सान।
　　　　किरत के हैं पूरे शैतान ॥ ६ ॥
उतर कर इनसे जीव अनेक।
　　　　स्वारथ की चित धारें टेक ॥ ७ ॥
स्वारथ अपना हरदम चायँ।
　　　　दुक्ख काहू का चित नहिं लायँ ॥ ८ ॥
चहे कोई जिये चहे मरजाय।
　　　　स्वारथ इन पर सिध हो जाय ॥ ६ ॥
रहें कोई बिरले जिव ऐसे।
　　　　डरें दुख औरन जो देते ॥१०॥
जहाँ तक बने न करते काम।
　　　　किसी की जिससे होवे हान ॥११॥
मिले कहीं ऐसा लाख में एक।
　　　　रहे यही जिस चित माहिं बिवेक ॥१२॥
और भी दुर्लभ जिव होते।
　　　　फ़िकर कर औरन दुख खोते ॥१३॥

सुक्ख जिन अपना तज डारा ।
दुक्ख जीवन का चित धारा ॥ १४ ॥
दुक्ख में औरन के दुखिया ।
सुक्ख में जीवन के सुखिया ॥ १५ ॥
जतन से ऐसा जीव मिले ।
ढूँढ़ कोई जग के माहिं फिरे ॥ १६ ॥
जहाँ पर अस जिव करता बास ।
सभी नर बरतें होय वाहि दास ॥ १७ ॥
करें सब मिलकर आदर मान ।
निरख वह चित में रहे हुलसान ॥ १८ ॥
सन्त का हाल सुनो अब कुछ ।
सुने पर सब जिव दीखें तुच्छ ॥ १९ ॥
सन्त सम साँचा मीत नहीं ।
सन्त सम कोमल चीत नहीं ॥ २० ॥
दया जिव निस दिन पाले सन्त ।
बहुत जिव भार उठावे सन्त ॥ २१ ॥
दया धर जग में देह धारे ।
प्रीति बस काज करे सारे ॥ २२ ॥
चहे नहिं काहू से सन्मान ।
बहुत जीवन की सहता तान ॥ २३ ॥
सन्त रहे दुख सुख से न्यारा ।
अस्तुति निन्दा के पारा ॥ २४ ॥

सन्त नहीं चीन्हे मीत अमीत ।
सँवारे काज सबन धर प्रीत ॥ २५ ॥
सन्त नहीं परखे बोल और चाल ।
सन्त इक देखे अन्तर हाल ॥ २६ ॥
सन्त कभी चित में माने न हार ।
करत रहे हरदम जीव उबार ॥ २७ ॥
मौज धर कर जो जग आवे ।
बिना उस कुछ नहिं चित भावे ॥ २८ ॥
प्रीतम महिमा जिस भावे ।
सन्त का प्यारा हो जावे ॥ २९ ॥
मिले जब राधास्वामी प्यारे कन्त ।
सुनी तब महिमा सतगुरु सन्त ॥ ३० ॥
मेहर कर राधास्वामी अपनाया ।
मेहर कर चरनन लिपटाया ॥ ३१ ॥
रहूँ मैं नित उन महिमा गाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ ३२ ॥

---

## शब्द ९२

मेरे प्यारे बहिन और भाई ।
क्यों आपस में तुम झगड़ो ।
रल मिल कर सतसँग करना ॥ टेक ॥

सोच करो तो अपने मन में।
क्यों आये थे राधास्वामी मत में।
गही सतगुरु की सरना ॥ १ ॥
देखा जग का हाल असारा।
मन माया का फन्दा भारा।
चौरासी का फिरना ॥ २ ॥
भोगन की धर धर मन आसा।
तन मन के सहे अनेक संतापा।
तृष्ना अगिन का जलना ॥ ३ ॥
जग के रँग सब फीक दिखाई।
मन की घात की सुधि कुछ आई।
इनसे चहा तुम बचना ॥ ४ ॥
सोच करी तुम दिन और राती।
केहि बिधि छूटें यह उत्पाती।
सुक्ख मिले कहिं चैना ॥ ५ ॥
खोजत खोजत सतसँग पाया।
निज घर का तुम्हें भेद सुहाया।
और छूटन का जतना ॥ ६ ॥
सहजहि देखा होत उधारा।
प्रिय लागा सतसँग ब्योहारा।
कुल मालिक का मिलना ॥ ७ ॥

उमँग अंग ले सतसँग लागे ।
वचन और दर्शन रस नित पागे ।
मेटी मन की कलपना ॥ ८ ॥
अब यह कौन कुमति तुम लीनी ।
मूल बस्तु एकदम तज दीनी ।
मन लागा लड़ भिड़ना ॥ ९ ॥
परमारथ की सुद्धि भुलाई ।
बे मतलब रहे राड़ बढ़ाई ।
समझ बूझ पड़ा ढकना ॥ १० ॥
चेतो समझो होश में आवो ।
भूल चूक पर झुरो पछतावो ।
जाय लगो गुरु चरना ॥ ११ ॥
राधास्वामी सतगुरु होइ हैं सहाई ।
भूल भरम सब दे हैं मिटाई ।
पकड़ धरें मन ठगना ॥ १२ ॥
निस दिन तुम्हरा भाग बढ़ावें ।
प्रेम प्रीति घट माँहि बसावें ।
सुफल करें देह धरना ॥ १३ ॥

---

## शब्द ९३

मनुवाँ हठीला माने न बात, भोगन में रस लेत ॥ टेक ॥
गली गली में भरमत डोले, करे न गुरु सँग हेत ॥ १ ॥

नित समझाऊँ भय दिखलाऊँ, नेक कान नहिं देत ॥ २ ॥
भोगन में पड़ होय दुखारी, तौ भी करे न चेत ॥ ३ ॥
काम क्रोध के धक्के सहता, लोभ मोह की लहे अलसेट ।४।
अहंकार में ग़ोते खाता, डूबत अक़ल समेत ॥ ५ ॥
ऐसा मूरख अक़ल का अंधा, कहन को बड़ा सुचेत ॥ ६ ॥
सतगुरु दयाल परम हितकारी, आये तज पद सेत ॥ ७ ॥
निर्मल रस की जुक्ति बतावें, यह नहिं मानत एक ॥ ८ ॥
कौन जुक्ति अब करिये सजनी, बस आवे यह प्रेत ॥ ६ ॥
हार हार मैं करूँ पुकारी, हे राधास्वामी पुरुष सुचेत ।१०।
दया धार मेरी विनती मानो, यह मन डारो रेत ॥११॥

---

## शब्द ६४

सुरतिया धार बहाय रही ।
सतगुरु का दर्शन पाय ॥ टेक ॥
जनम जनम के बिछड़े प्रीतम ।
आज मिले मोहिं आय ॥ १ ॥
सतसँग में मोहिं खैंच बुलाया ।
धुर की मेहर कराय ॥ २ ॥
भौजल धार पड़ी थी बहती ।
सुधि बुधि सब बिसराय ॥ ३ ॥
हाथ पकड़ लिया मोहिं निकारी ।
सीतल अंग लगाय ॥ ४ ॥

आपहि परख दई कुछ अपनीं ।
आपहि प्रेम जगाय ॥ ५ ॥
आपहि काज किये मेरे पूरे ।
आपहि दरस दिखाय ॥ ६ ॥
आओ री सखी मिल आरति करिहैं ।
ले हैं पुरुष रिझाय ॥ ७ ॥
भाग जगा कोइ अचरज न्यारा ।
औसर अद्भुत पाय ॥ ८ ॥
क्या सतगुरु के ऊपर वारूँ ।
भेंट धरूँ क्या आय ॥ ९ ॥
बिन सतगुरु कुछ और न सूझे ।
तन धन तुच्छ दिखाय ॥ १० ॥
सतगुरु चरन पकड़ कर दृढ़ से ।
बिनती करत बनाय ॥ ११ ॥
हे स्वामी मेरी ओर निहारो ।
चित की आस पुराय ॥ १२ ॥
अब से बिछड़न होय न कबही ।
सदा रहूँ लिपटाय ॥ १३ ॥
घर तुम्हरे कुछ कमी न होई ।
चित मेरा ठैराय ॥ १४ ॥

जस तस दान देव यह प्यारे ।
जस तस लेव अपनाय ॥१५॥
राधास्वामी दयाल परम हितकारी ।
हूजे आज सहाय ॥१६॥

---

## शब्द ९५

दरश आज दीजिये मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥टेक॥
मेहर अब कीजिये मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥१॥
सरन में लीजिये मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥२॥
मनुवाँ तड़प रहा मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥३॥
दरश को तरस रहा मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥४॥
दुखी की अरज़ सुनो मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥५॥
दरश दे दुक्ख हरो मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥६॥
क्यों एती देर करी मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥७॥
घर कुछ नाहिं कमी मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥८॥
दुक्ख यह सहा न जाय मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥९॥
मेहर बिन नाहिं उपाय मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥१०॥
मेहर चित धारिये मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥११॥
पन न बिसारिये मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥१२॥

---

### शब्द ६६

कस जायँ री सखी मेरे मन के विकार ॥ टेक ॥

यह मन चोर चुगल मदमाता ।
भोगन रस पी रहे मतवार ॥ १ ॥

झूठा कपटी लम्पट पाजी ।
दुष्ट विरोधी नीच नकार ॥ २ ॥

अपने सुख के कारन पापी ।
पाप करत नहिं लावे आर ॥ ३ ॥

आदर मान का सदा चटोरा ।
रगन रगन में भरा अहंकार ॥ ४ ॥

जो कोइ कसर जनावे इसकी ।
भड़क उठे और करे तकरार ॥ ५ ॥

सतगुरु सन्त में दोष निकाले ।
अपने को समझे हुशियार ॥ ६ ॥

कड़ुवे वचन विना नहिं वोले ।
ठानत रहे हर इक से रार ॥ ७ ॥

अस अस रोग भरे मन मेरे ।
क्या कहूँ मुख से नाहिं शुमार ॥ ८ ॥

अपनी सी में बहुत कराऊँ ।
पर कुछ नाहिं बसावे पार ॥ ९ ॥

झुरत रहूँ निस दिन अन्तर में ।
भेजत रहुँ मन पर धिक्कार ॥ १० ॥

समय पड़े पर पेश न जावे।
बार बार मैं बैठूँ हार ॥११॥
दया मेहर जो गुरू सुनाया।
सहज सहज तोहिं ले हैं सुधार ॥१२॥
इसी बचन के बल पर जीऊँ।
यही बचन मेरा जीव अधार ॥१३॥
राधास्वामी सतगुरु ओर निहारूँ।
दूर करें कब मन के बिकार ॥१४॥

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय।

# प्रेमबिलास

## भाग तीसरा

### शब्द ९७

मेहर होय कोइ प्रेमी जाने ऐसा गुरू हमारा ॥टेक॥
रूप रंग रेखा नहिं ताके नहिं गोरा नहिं कारा ॥ १ ॥
सर्ब निवासी घट घट बासी तीन लोक के पारा ॥ २ ॥
मौज होय जग देह धर आवे जीवन करे उबारा ॥ ३ ॥
भक्ति भाव की रीति चलावे प्रेम प्रीति की धारा ॥ ४ ॥
चिन्ता में सद रहे अचिन्ता हर्ष सोग से न्यारा ॥ ५ ॥
चरन सरन दे दास भक्त का मेटे दुख भय सारा ॥ ६ ॥
काज करे कर्ता नहिं होवे अचरज अकथ ब्योहारा ॥ ७ ॥
बुधि चतुराई मूर्छा खाई ज्ञान जोग थक हारा ॥ ८ ॥
जा पर मेहर करी राधास्वामी (घट) अन्तर रूप निहारा ॥ ९ ॥

## शब्द ९८

राधास्वामी आय प्रगट हुए जग में ।
राधास्वामी मोहिं लगाया सँग में ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम मिला निज मन्तर ।
राधास्वामी रूप लखा घट अन्तर ॥ २ ॥
राधास्वामी शब्द सुना सरवन में ।
राधास्वामी आरति करी चरनन में ॥ ३ ॥
राधास्वामी मेहर करी घट माहिं ।
राधास्वामी प्रीति रही चित छाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी सेव करूँ हर्षाती ।
राधास्वामी संग बसूँ दिन राती ॥ ५ ॥
राधास्वामी अस्तुति कहुँ क्या गाई ।
राधास्वामी छिन में पार लगाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी आन बँधाई आसा ।
राधास्वामी दूर हटाई त्रासा ॥ ७ ॥
राधास्वामी प्रगट किया सत नूर ।
राधास्वामी तिमिर किया सब दूर ॥ ८ ॥
राधास्वामी कीन्हा जग से न्यारा ।
राधास्वामी दीन्हा चरन सहारा ॥ ९ ॥
राधास्वामी करम किए सब नासा ।
राधास्वामी मेहर से प्रेम प्रकासा ॥ १० ॥

राधास्वामी मात पिता दरसारे।
राधास्वामी हुए मेरी नैनों के तारे ॥ ११ ॥
राधास्वामी मेहर दया के सिन्ध।
राधास्वामी प्रेम अमीं के कुंड ॥ १२ ॥
राधास्वामी सतगुरु सन्त स्वामी।
राधास्वामी अगम अगाध अनामी ॥१३॥
राधास्वामी चरनन रहूँ लिपटाय।
हरदम राधास्वामी नाम धियाय ॥ १४ ॥

---

## शब्द ९९

राधास्वामी नाम जपो मेरे भाई।
राधास्वामी धाम सहज मिल जाई ॥ १ ॥
राधास्वामी नाम जपो मन हे रे।
राधास्वामी के सँग सुक्ख घनेरे ॥ २ ॥
राधास्वामी नाम है सब का सार।
राधास्वामी नाम है सत करतार ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम ही पालनहार।
राधास्वामी नाम करे उद्धार ॥ ४ ॥
राधास्वामी परम पुरुष का नाम।
राधास्वामी अकह अपार अनाम ॥ ५ ॥
राधास्वामी आए धर औतार।
राधास्वामी कीन्हा जग निस्तार ॥ ६ ॥

राधास्वामी हरे सकल जिव खेद ।
राधास्वामी दीना निज घर भेद ॥ ७ ॥
राधास्वामी नाम की महिमा गाई ।
राधास्वामी मेहर की ख़बर जनाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी धुर घर से चल आए ।
राधास्वामी अगम अलख लख आए ॥ ९ ॥
राधास्वामी सतपुर चरन पधार ।
उतरे राधास्वामी गुफा मँझार ॥ १० ॥
राधास्वामी आए सुन के द्वार ।
राधास्वामी त्रिकुटी किया उजियार ॥ ११ ॥
राधास्वामी सहसकमल में पहुँचे ।
राधास्वामी मन के घाट बिराजे ॥ १२ ॥
राधास्वामी प्रकट किया सत सूर ।
राधास्वामी मत का किया ज़हूर ॥ १३ ॥
राधास्वामी अपनी परख बताई ।
राधास्वामी सत करनी करवाई ॥ १४ ॥
जो जन राधास्वामी सरनी आए ।
राधास्वामी उनको लिया अपनाए ॥ १५ ॥
राधास्वामी नाम लगा उन प्यारा ।
राधास्वामी नाम मिला आधारा ॥ १६ ॥
राधास्वामी नाम जपत चित सीला ।
राधास्वामी घट की दिखाई लीला ॥ १७ ॥

राधास्वामी जोति का दरश दिखाया।
राधास्वामी लाल सूर दरसाया ॥१८॥
राधास्वामी सारँग धुन पकड़ाई।
राधास्वामी मुरली मधुर सुनाई ॥१६॥
राधास्वामी पुरुष के दरश कराए।
राधास्वामी अलख अगम दिखलाए॥२०॥
राधास्वामी आगे राह चलाई।
राधास्वामी निज घर दिया पहुँचाई ॥२१॥
राधास्वामी मेहर करी भरपूर।
राधास्वामी कीन्हे कारज पूर ॥२२॥

---

शब्द १००

अजब जहाँ के बीच काल ने
जाल बिछाया अपना है।
अंग अंग से बँधे जीव सब
छुटन भया अति कठिना है ॥१॥
विषय भोग की बनी है रसरी
मन इच्छा मिल बटना है।
बन्द बन्द पर लगी ग्रन्थी
काल करम मिल कसना है ॥२॥

निज घर की जिव सुद्धि बिसारी
पड़ा अक़ल पर ढकना है।
खेल कुमति सब अधिक सुहाया
और जाल का फँसना है ॥ ३ ॥
कोइ अपने को ब्रह्म समझते
जग को रैन का सुपना है।
निर्भय होय जग माँहि बिचरते
दोष कछू नहिं लगना है ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति और सरन दीनता
नेक न चित में धरना है।
अहंकार और लोभ लहर में
डूब डूब कर मरना है ॥ ५ ॥
कोइ मूरति मन्दिर में अटके
कहिं तीरथ में पचना है।
कहिं पुस्तक को होय डंडवतें
करम भरम कहिं फँसना है ॥ ६ ॥
जिन प्रताप ते महिमा इनकी
काज न उनसे रखना है।
कौन चाल वह आप चले सब
क्या साधन किया जतना है ॥ ७ ॥

धन आदर सन्तान बृद्धि की
चित में लागी लगना है।
इष्टदेव का धार बहाना
मन की भक्ती करना है ॥८॥
दयावन्त कोइ सील सुभावी
देख जगत का तपना है।
पर उपकार की धर चित आसा
रैन दिवस रहें खपना है ॥९॥
होय जगत में वाह वाह जब
चाव उठे मन दुगुना है।
बड़ उपकारी समझ आपको
मस्त रहें अति मगना है ॥१०॥
निज उपकार किये बिन पहिले
काज कहो क्या सरना है।
घर में फ़ाक़ा चार दिनों से
जग की ज़्याफ़त करना है ॥११॥
कोइ कहते हम गुन के ग्राहक
जहाँ मिले तहाँ लेना है।
राग द्वेष हमरे कुछ नाहीं
इक मालिक से लगना है ॥१२॥

साध सन्त के ग्रन्थ छाँट कर
　　मन भाया सो गहना है ।
जा करनी से मन मरता था
　　पिंड छुड़ाया अपना है ॥१३॥
सुन्दर रूप पदारथ रस की
　　घट में बाढ़ी तृष्ना है ।
लेत रहें रस सद बिषयन का
　　नाम भक्ति का धरना है ॥१४॥
ऐसे गहिरे फन्द जाल से
　　लाख करे कोइ जतना है ।
उलट पलट बहु उलझे इसमें
　　कभी न होवे छुटना है ॥१५॥
मिलें भाग से गुरू पियारे
　　सहज होय जिव बचना है ।
अपनी प्रीति कराय जीव से
　　बन्ध से बन्धन कटना है ॥१६॥
मेहर से नाता छुटे जगत से
　　जा पहुँचे सुत गगना है ।
जड़ चेतन की गाँठ खुले पर
　　काल रहे सिर धुनना है ॥१७॥

मगन होय सुत निज घर पहुँचे
अमर होय रस बसना है ।
राधास्वामी दयाल गुरू प्यारे के
लिपट रहे निज चरना है ॥ १८ ॥

---

## शब्द १०१

कैसी कुबुद्धी नारि मन के जो कहने में आगई (मैं) ॥ टेक ॥
निज प्रीतम की सुद्धि भुलानी ।
कौन कुमति हिये छा गई ॥ १ ॥
भरमी मन मेरा महा बलवन्ता ।
भरमी के सँग भरमा गई ॥ २ ॥
रूप रंग की हुई अधीनी ।
देख रूप उलझा गई ॥ ३ ॥
लिपट लिपट कर कहती मुख से ।
परम आनन्द मैं पा गई ॥ ४ ॥
उजड़ी नगरिया लगी सुहावन ।
ग़रज़ अक़ल को खा गई ॥ ५ ॥
कौन करम थे ऐसे मेरे ।
ऐसी बिपति सिर आ गई ॥ ६ ॥
होना था सो होकर ठैरा ।
पेश किसू की ना गई ॥ ७ ॥

पर अब चेत करूँ ब्योहारा ।
सतसँग रीति सुहा गई ॥ ८ ॥
राधास्वामी दयाल के गुन नित गाऊँ ।
जिनकी मेहर सुधि आगई ॥ ९ ॥

---

## शब्द १०२

भाई तूने यह क्या ज़ुल्म गुज़ारा ।
भक्ती का किया अहंकारा ॥ टेक ॥
दीन ग़रीबी मत इस जुग का
सतगुरु खोल पुकारा ।
तू सतगुरु का सेवक कैसा
जो उन बचन न धारा ॥ १ ॥
सतगुरु स्वामी प्रेम भंडारा
प्रेम का दीपक बारा ।
सेवक जन जिन जिन सुध पाई
जल जल आपा गारा ॥ २ ॥
अस भक्तन के सँग में रह तू
उनका न ढंग सम्हारा ।
पतंग रीति की क़दर न जानी
भयो खद्योत लबारा ॥ ३ ॥
समय मिले पर चढ़े अकासे
जग बिच करन उजारा ।

कौन जात तू बित क्या तेरा
कहाँ पर धरा अँगारा ॥ ४ ॥
अब भी चेत करो मेरे भाई
बिगड़ी बात सँवारा ।
राधास्वामी दयाल के मानो बचना
सहज होय निरवारा ॥ ५ ॥

---

## शब्द १०३

भाई तूने बड़ का जुल्म गुज़ारा ।
मोह बस गुरु को बिसारा ॥ टेक ॥
गुरु सँग प्रीति करी जिन गहिरी
सहज हुए भव पारा ।
सुत तिरिया और सास ससुर मोह
किस को पार उतारा ॥ १ ॥
ऋषी मुनी और इन्द्र मुनीन्द्र
करम भरम झक मारा ।
बिन गुरु भक्ति रहे सब रीते
मिला न पद निज सारा ॥ २ ॥
जिन से आस धरी तुम मन में
इनकी कौन शुमारा ।
अन्धे बहिरे फिरें जगत में
बेमुख गुरु दरबारा ॥ ३ ॥

झूठी आस सभी यह तुम्हरी
झूठ भरोसा सारा ।
अब ही खोज करो गुरु संगा
इन से होय किनारा ॥ ४ ॥
भूल भरम तेरी छिन में खोकर
बख्शें चरन सहारा ।
राधास्वामी सम कोइ मीत न दीखे
मैं उनके बलिहारा ॥ ५ ॥

---

## शब्द १०४

स्वामी तुम काज बनाए सबन के ॥ टेक॥
जो कोई सरन तुम्हारी आया दीन गरीबी पन ले ।
सभी भार उसका तुम लीना दुक्ख हरे तन मन के ॥ १ ॥
परमारथ हम बूझ न जाना सुक्ख चहे इन्द्रियन के ।
स्वारथ अर्थ बसा हिरदे में अन्तर रगन रगन के ॥ २ ॥
पर तुम मेहर करी जस हम पर न्यारी कहन सुनन से ।
भोग दिये और जोग भी दीना रोग दहे जनमन के ॥ ३ ॥
सभी बासना मन की पुजाई मेहर से अन और धन दे ।
मोह आस से लिया बचाई वारी चरन सरन के ॥ ४ ॥
बारम्बार करूँ शुकराना धर धर सीस चरन पे ।
धन्य धन्य राधास्वामी सतगुरु मात पिता सब जन के ॥ ५ ॥

---

## शब्द १०५

बाहर के साज काज नहिं सर है ॥ टेक॥

बाहर के साज सजो क्या जुगिया।
भोगन सँग जब लागी नजर है ॥ १ ॥

बाहर के साज रहा जो प्रानी।
रहे बाहर नहिं जाय निज घर है ॥ २ ॥

बाहर के साज सजे इक बगुला।
मारत मछरी याही मकर है ॥ ३ ॥

बाहर के साज बिलाई साजे।
दाव पड़े ले पंछी पकड़ है ॥ ४ ॥

बाहर के साज सभी इक जैसे।
जाल बिछा मन रोकी डगर है ॥ ५ ॥

जिन जन भाग से सतसँग पाया।
तिस ही पड़ी कुछ इसकी खबर है ॥ ६ ॥

सुन सुन कर सतसँग के बचना।
सहज मिटी सब मन की कसर है ॥ ७ ॥

बाहर तज फिर भीतर लागा।
जा पहुँचा चढ़ सुन्न शिखर है ॥ ८ ॥

मेहर दया से गुरु पूरे के।
दरश करे घट में निज बर है ॥ ९ ॥

राधास्वामी मेहर यह कीट उबारा।
कहत बने नहिं उनका शुकर है ॥१०॥

## शब्द १०६

साईं मोहिं नाम लगा भल तेरा
　　जिन मन बस कीन्हा मेरा ॥ टेक ॥
दिन केते और मुद्दत केती
　　जतन किये मैं साँझ सवेरा।
कोइ बिधि यह मन तज विषया रस
　　निज घट करे बसेरा ॥ १ ॥
कोई कहा तुम गीता पढ़लो
　　खतम करी दस बेरा।
पढ़न समय कुछ मन हुआ निश्चल
　　पीछे वही उलझेरा ॥ २ ॥
कोई कहा तुम करो पुकारी
　　पट दे किया अँधेरा।
भुइँ ऊपर सिर धरके पहरों
　　रोय रोय कीन्ही टेरा ॥ ३ ॥
कभी घबरा और बेबस होकर
　　जा कीन्हा बन डेरा।
बिलक बिलक बहु करी पुकारा
　　तब पल छिन मन हेरा ॥ ४ ॥
पट खोले बन से चल आए
　　जब बीती कुछ बेरा।

यह चंचल सब क़ौल भुलाना
भोगन का हुआ चेरा ॥ ५ ॥
हार गया अस सर्व रीति से
जोर लगा बहुतेरा ।
पर मन निर्मल हुआ न कुछ भी
निज घट नेक न ठैरा ॥ ६ ॥
भाग जगे तुम चरनन लागा
नाम मिला सुलझेरा ।
सुमिर सुमिर हिये शुधता आई
छूटा भोग बखेड़ा ॥ ७ ॥
नाम अमीं पी निश्चल होकर
निज घट कीन्हा फेरा ।
जब कुछ ऊपर चढ़ा मेहर से
आ अनहद धुन घेरा ॥ ८ ॥
बहुत वार यह झटक छूट के
भाग गिरा विष झेरा ।
पर कुछ पेश गई नहिं इसकी
ठैरत ठैरत ठैरा ॥ ९ ॥
हे स्वामी सतगुरु निज नामी
राधास्वामी बन्दी छोड़ा ।
दम दम नाम जपूँ मैं तुम्हरा
पार किया जिन बेड़ा ॥ १० ॥

शब्द १०७

स्वामी तुम अचरज खेल दिखाया ॥ टेक ॥

सुत तिरिया और नाती गोती
बहुतक से मन लाया ।
आठ पहर निस दिन रहें घेरी
हिरदे हित उमँगाया ॥ १ ॥

आस पड़ोसी संग सँगाती
सबहिन संग सुहाया ।
आवत देख सीस पै आनें
पूछें कहो क्या लाया ॥ २ ॥

हरष हरष सौगातें बाँटें
ले ले मन हरषाया ।
बहुत काल अस खेल में बीता
सब मिल खेल खिलाया ॥ ३ ॥

इक इक कहे भई तुम हमरे
और का नहिं कुछ दाया ।
जान पड़ा जग स्वर्गपुरी मोहिं
फूला अँग न समाया ॥ ४ ॥

होनहार इक अस हो आई
तुम निज कर अपनाया ।
तुम्हरी प्रीति जगी हिये मेरे
सतसँग को चित धाया ॥ ५ ॥

देखत हाल सभी रँग बदला
मौसम कहो बदलाया ।
प्रीति गई घट क्रोध समाना
दुर दुर भाष सुनाया ॥ ६ ॥
मेहर दया का धार भरोसा
चरनन में चल आया ।
मेहर भरी दृष्टी इक लेकर
दुख सब दूर बहाया ॥ ७ ॥
प्रेमी प्यारे देख भक्त जन
मनुआँ बहु हुलसाया ।
सुन सुन बड़ सतसँगियन महिमा
सेवा को चित चाया ॥ ८ ॥
उमँग उमँग नित सेवा करता
तन मन सुधि बिसराया ।
दीन देख के सज्जन प्रेमी
बहुतक हित दिखलाया ॥ ९ ॥
नैनन भर के नीर कहा यह
अँग बहु हमको भाया ।
हो सुत सम प्यारे तुम हमको
बार बार जतलाया ॥१०॥
सुन सुन कर अस हित की बातें
निस दिन भाग सराया ।

जान पड़ा यह असल कुटुँब है
　　　　सतगुरु आन रचाया ॥११॥
होनहार हुई इक दूसर
　　　　जुग कहो पलटा आया ।
जाय बिराजे देश आन तुम
　　　　वस्तर तन बदलाया ॥१२॥
दीन जान मोहिं दिया ठिकाना
　　　　चरनन माहिं लगाया ।
प्रेमी सज्जन खबर न पाई
　　　　रहे अलग अलगाया ॥१३॥
पिछली प्रीति किया चित जोरा
　　　　उनको लिख जतलाया ।
भाग बिना कोइ करे कहा कहो
　　　　चित में नाहिं समाया ॥१४॥
मौसम पिछली आई लौट के
　　　　चहुँ दिश खुश्का छाया ।
स्वर्गपुरी सम कुटुँब नया भी
　　　　मृगतृष्णा दरसाया ॥१५॥
होनहार हुई इक तीसर
　　　　मेहर करी तुम दाया ।
कहूँ कहा अचरज है भारी
　　　　फिर जो देखन आया ॥१६॥

प्रीति गई सब मीत चीत से
　　बैरी रूप बनाया ।
हित की बातें लगें बान ज्यों
　　उलटी समझ गहाया ॥ १७॥
आगे बिथा कहूँ कस मुख से
　　अचरज कल की माया ।
देख देख जग का ब्योहारा
　　सरवन हाथ धराया ॥ १८॥
जब जब पग दासन के दासा
　　तुम्हरी ओर बढ़ाया ।
कहन सुनन के निज हितकारी
　　उलटा हित दिखलाया ॥ १६ ॥
तुम छाँड़े होंय अती मगन मन
　　झटपट लें गल लाया ।
बहुत भाँति से हित दिखलावें
　　अपने संग खिलाया ॥ २०॥
ता ते मैं मन निश्चय कीन्हा
　　भाग उन ओछा पाया ।
तुम्हरा प्रेम हिये जिन नाहीं
　　तुम प्रेमी नहीं भाया ॥ २१ ॥

लिपट रहूँ चरनन में तुम्हरे
　　राधास्वामी जिन सरनाया।
तुम बिन मीत न देखा जग में
　　आखूँ ढोल बजाया ॥ २२॥

---

## शब्द १०८

सन्त बिन सब जिव आतम घाती ॥ टेक ॥
कोइ कोइ माया धर धर जोड़ी
　　हो गए लाख करोड़ी।
जब जम गरदन आकर तोड़ी
　　कौड़िक काम न आती ॥ १ ॥
इक इक लिख पढ़ भये सुजाना
　　मुख से कथत ज्ञाना।
आँख मिची हुए मूढ़ अजाना
　　याद रही नहिं बाती ॥ २ ॥
क्या फूले मुख मुकुर निहारे
　　भूले सँग परिवारे।
जब चलने की आए है बारे
　　कूटो धड़ धड़ छाती ॥ ३ ॥
आतम तत्त की सुद्धि भुलाना
　　तन मन साँचे माना।

नीच ऊँच पड़े जोनी जाना
सहन पड़े उत्पाती ॥ ४ ॥
दुर्गति से जो बचना चाहो
सन्त में निश्चय लाओ।
उनसे राह अगम की पाओ
जतन करो दिन राती ॥ ५ ॥
सहज सहज सुत घट में जागे
बिजली चमकन लागे।
तन और मन की मिटे उपाधे
सुन्न शिखर चढ़ जाती ॥ ६ ॥
आगे की भी राह खुलावे
सन्त मेहर घर जावे।
राधास्वामी पुरुष में जाय समावे
बिगड़ी बात बन आती ॥ ७ ॥
सन्त बिना नहिं सुरत उबारी
कोई न जीव उपकारी।
सन्त की महिमा अगम अपारी
निज प्रीतम पितु माती ॥ ८ ॥

शब्द १०६

कोई राख लेव मोहिं अब की ॥ टेक ॥
इकली नारि पड़ी बन भीतर रोय रही कब की।
धाड़ मार सुन सुन बन राजा हौल गई अधिकी ॥ १ ॥

चितवूँ देस मात पितु अपने ले ले मन सुबकी ।
ऐसे धनी सेठ की कनिका होगई बे पत की ॥ २ ॥
करम रेख को दोष दिये नहिं पीड़ घटे घट की ।
जतन करे को चित बहु लोचे बात नहीं हथ की ॥ ३ ॥
राम रहीम करीम चितारे आस धरी रब की ।
बाहर भीतर कोइ न भेंटे नहीं सुध ली रतकी ॥ ४ ॥
धरन गगन कोइ काम न आए आस तजी सब की ।
हार पड़ी अब यही पुकारूँ उलट ओर नभ की ॥ ५ ॥
समरथ दीनदयाल कोइ जग में आय मिलो झट की ।
राधा सुरत नाम की नारी बिन स्वामी भटकी ॥ ६ ॥

---

## शब्द ११०

( मसनवी )

जो जबाँ यारी करे खुल कर सुना
आज दिल कोई राग बज़्मे यार[1] का ॥ १ ॥
सोज़[2] से ऐसा भरा वह राग हो
जाँ तलक पहुँचे सदा बस आग हो ॥ २ ॥
मुर्दा दिल सुन पावें नग़मा[3] हों गरम
संग दिल[4] ज्यों मोम हों फ़ौरन नरम ॥ ३ ॥
आशिक़ों के फ़िक्र जल कर ख़ाक हों
क़िस्से दुनिया दीन के सब पाक हों ॥ ४ ॥

---

१ सतसंग २ तपन ३ राग ४ पत्थर सा यानी बज्र हृदय ।

इश्क़ का आलम में रौशन हो चिराग़
और रया[1] के पहलु में पड़ जाय दाग़ ॥ ५ ॥
इस जहाँ में हाय सद अफ़सोस है
इल्म ओ फ़न का जबकि भारी जोश है ॥ ६ ॥
जाँच जब कि होती है हर बात की
छान बीं हर शय के जिन्स ओ ज़ात की ॥ ७ ॥
सब जहाँ का हो रहा है तोल ओ नाप
पर नहीं परखे है कोई अपना आप ॥ ८ ॥
भूले अपने आप को सब लोग हैं
जेहल[2] के हर सू में फैले रोग हैं ॥ ९ ॥
तन परस्ती का गरम बाज़ार है[3]
अस्ल आपे से हुआ इन्कार है ॥ १० ॥
नफ़्स के फ़रमान[4] जारी हो रहे
खाक मल मल के हैं जामा धो रहे ॥ ११ ॥
हिर्स का आलम में बजता ढोल है
इश्क़ का सुनता नहीं कोइ बोल है ॥ १२ ॥
जब कि भूले आप को हैं आदमी
जानेंगे क्या बात वह फिर यार की ॥ १३ ॥
यह जो ग़फ़लत का कहा मैं हाल है
इस से बढ़कर और फैला जाल है ॥ १४ ॥

१ पाखंड २ अज्ञानता ३ शरीर के पालन पोषन पर ज़ोर दिया जा रहा है ४ मन के हुक्म ।

जो कि जानें आप को हैं खुद नहीं
यार कैसा है कहाँ है सुधि नहीं ॥१५॥
जन व जर[1] को ही सभी कुछ मानते
ऐसे दुनिया को मुक़द्दम[2] जानते ॥१६॥
करके क़ाबू सोलह[3] ओ छत्तीस[4] को
सीख करके चार[5] छै[6] छब्बीस[7] को ॥१७॥
यार की निस्बत बहुत कुछ बोले हैं
फ़हम[8] का लेकर तराज़ू तोले हैं ॥१८॥
टेक हरफ़ों की किसी ने बाँध ली
खैंचा तानी कर के बोली साध ली ॥१९॥
हर्फ़ों से हट के टिका कोई बोल में
राग और सुर के रहा वह तोल में ॥२०॥
कोइ इनसे बढ़ के जो स्याना हुआ
नफ़्से मज़मूँ[9] सीख कर दाना हुआ ॥२१॥
हर्फ़ सीखे सीखे सुर और राग भी
नफ़्से मज़मूँ से भी पैदा लाग की ॥२२॥
पर नहीं सोचा कि वह शय कौन थी
जिसके दिल से बात सब पैदा हुई ॥२३॥
लब[10] से चल के जा टिके दिल तंग में
रँग गये मदहोश उसके रंग में ॥२४॥

१ स्त्री व धन २ मुख्य ३ स्वर ४ व्यञ्जन ५ वेद ६ शास्त्र ७ अंगरेज़ी हरूफ़ ८ अक़्ल ९ मतलब १० होंठ।

अस्ल शय आगे रही जाना नहीं
अर्ज़[1] औ जौहर[2] में फ़रक़ माना नहीं ॥ २५ ॥
दिल में जो आया सोई कहने लगे
दिल की लहरों में पड़े बहने लगे ॥ २६ ॥
यह अजब दुनिया में फैला जाल है
रूह का कोई न पुरसाँ हाल[3] है ॥ २७ ॥
दिल की मंज़िल[4] से न आगे काम है
आशक़ी भी इसलिये बदनाम है ॥ २८ ॥
आशक़ी का हाल अब आगे सुनो
इश्क़ के गुलशन[5] के गुल थोड़े चुनो ॥ २९ ॥
आशक़ी और प्रेम जानो एक चीज़
फ़रक़ बोली का है बस साहब तमीज़ ॥ ३० ॥
प्रेमियों की चाल है जग से जुदा
जानते हैं प्रेमी इस को बेवफ़ा ॥ ३१ ॥
हिर्स दुनिया के वह समझें हैं ख़तर
इसलिये करते नहीं इस पर नज़र ॥ ३२ ॥
जबकि देखा हाल दुनिया का ख़राब
अहले इल्म ओ अक़्ल[6] होते ग़र्क़े आब[7] ॥ ३३ ॥
होगया प्रेमी का दिल जैसे बरफ़
और उलट उस रुख़ किया अपने तरफ़ ॥ ३४ ॥

१ बाहरी शक्ल व बनावट २ असल चीज़, रूह से मतलब है ३ रूह यानी सुरत की कोई सुधि नहीं लेता ४ अस्थान ५ बाग़ ६ पढ़े लिखे लोग ७ डूबते।

खोज आपे का हुआ पैदा फ़िकर
लिखने और पढ़ने के छूटे सब ज़िकर ॥ ३५ ॥
मैं हूँ क्या और कौन मेरा यार है
यार से मिलना मुझे दरकार है ॥ ३६ ॥
शौक़ यह जागा कि ढूँढें अस्ल चीज़
काग़ज़ ओ स्याही लगे सब हो ग़लीज़ ॥ ३७ ॥
शौक़बस बहुतक जतन करता रहा
बेबसी को देख कर रोता रहा ॥ ३८ ॥
रात दिन दिल से उठे थी आहे सर्द
आ मिले कोई हाय ऐसा नेक मर्द ॥ ३९ ॥
शौक़ दिल का जो कि पूरा कर सके
दामने उम्मीद जो कि भर सके[१] ॥ ४० ॥
आख़िरश क़िस्मत ने की जब यावरी[२]
मुज़्दः ले आई सबा यकबारगी[३] ॥ ४१ ॥
मुर्शिदे कामिल[४] के पकड़े जब क़दम[५]
हो गए सब राज़ अफ़शा[६] दम के दम ॥ ४२ ॥
ज़ात का सब भेद अपने खुल गया
अर्ज़ के भीतर का जौहर मिल गया ॥ ४३ ॥
जौहरी ने प्रेमी को अपना लिया
मैं व तू का कुछ न फिर परदा रहा ॥ ४४ ॥

---

१ आशा पूरी कर सके २ सुभाग हुआ ३ अचानक हवा ख़ुश ख़बर ले आई यानी सन्त सतगुरु की अचानक ख़बर मिली ४ सन्तसतगुरु ५ चरन ६ सब भेद खुलगए।

जैसे नाला[1] जब तलक बहता रहे
सब कोई नाले को नाला ही कहे ॥ ४५ ॥
और जब दरिया[2] से नाला जा मिला
होगया दरिया नहीं नाला रहा ॥ ४६ ॥
आशक़ी का हाल यह मैंने कहा
इश्क़ की मंज़िल का भी बरनन किया ॥ ४७ ॥
जिसको हो कुछ शौक़ तहक़ीक़ात[3] का
और कोई चाहे चला यह रास्ता ॥ ४८ ॥
चाहिये कि खोज पहिले वह करे
मुर्शिदे कामिल के क़दमों में गिरे ॥ ४९ ॥
और पता जो चाहे पूरा जान ले
राधास्वामी की सरन मन ठान ले ॥ ५० ॥

---

## शब्द १११

मन मोरा गुरु सँग लाग हो ॥ टेक ॥
गुरु सँग प्रीति करो तुम ऐसी
जस जोती सँग नयना ।
पल बिसरे कुछ सूझै नाहीं
घोरमघोर ही रैना (हो) ॥ १ ॥
गुरु से प्रीति करो मन ऐसी
जस गोरस सँग नीरा ।

---

१ छोटी नदी २ समुद्र ३ जांच परख ।

पलक एक जो मिटे बिछोहा
रल मिल होंय इक शीरा ( हो ) ॥ २ ॥
ऐसी प्रीति कठिन है भारी
सहज न जानो भाई ।
आगे होय पग पीछे पड़ि है
गिरो भरम की खाई ( हो ) ॥ ३ ॥
ऐसी प्रीति बने धीरज से
ज्यों परबत का चढ़ना ।
हरदम दृष्टि रहे मारग पर
सोच समझ पग धरना ( हो ) ॥ ४ ॥
गुरु सँग में कोइ दिन जो ठैरो
काज बने तब पूरा ।
प्रीति प्रतीति बसे घट भीतर
कायर से होय सूरा ( हो ) ॥ ५ ॥
शब्द की डोरी हाथ में आवे
जा पहुँचे तू गगना ।
निरखत लीला अद्भुत घट की
मस्त होय अति मगना ( हो ) ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु मिले भाग से
औसर जाने न देवो ।
चरन कमल में उनके लगकर
अम्मृत रस नित लेवो ( हो ) ॥ ७ ॥

## शब्द ११२ ( दोहे )

### दासता

जा मन्दिर में दासता नहीं दीप उजियास ।
प्रेम भक्ति और सील का तहाँ न जानो बास ॥ १ ॥
दास कहावे जगत में नहीं भक्ति से काम ।
बिन पति की रे पातरी सदा सुहागिन नाम ॥ २ ॥
दासातन हिरदे नहीं प्रेम भक्ति नहिं पास ।
बिना प्रान की खालड़ी स्वाँस लेत बिन श्रास ॥ ३ ॥
दासातन से बैर है भक्ती सँग उत्पात ।
ते नर काग समान हैं निस दिन बिष्ठा खात ॥ ४ ॥
दासातन हिरदे बसे प्रेम भक्ति घट छाय ।
सो नर हंसा जगत में चुन चुन मुक्ता खाय ॥ ५ ॥
कहने के बहु दास हैं बरतन का कोइ एक ।
दास सोई जन जानिये जा मन सदा बिबेक ॥ ६ ॥
धन बस पर बस दासता करे सभी जग आय ।
दास सोई जन जानिये जाका दास सुभाय ॥ ७ ॥
दास बने कोइ राम का महापुरुष कोइ ख़ास ।
दासन के जो दास हैं हम उन चरनन दास ॥ ८ ॥
दास कहाए ना बने बने न बोल बखान ।
दास बनन को चाहिये चढ़ा कोइ दिन सान ॥ ९ ॥
जिन की लाग शरीर में दास बनें क्या खेह ।
दास बनें कोइ साध जन खेह करी जिन देह ॥१०॥

देख दास की दासता मत कोइ धरे गुमान ।
दासन के सँग आप हैं रक्षक जान और प्रान ॥ ११ ॥
कामिन को दें काम धन मानी मान अहार ।
दासन को दें दासता सोच समझ करतार ॥ १२ ॥
कामिन धन दुख मूल है मान पाप की पोट ।
जो यह धन धारन करें सहें धरम की चोट ॥ १३ ॥
दासातन है सार धन धनी दिये कोइ पाय ।
खर्चे सुख संसार में अन्त धनी अपनाय ॥ १४ ॥

---

## शब्द ११३

### ज्ञान

कंठ करी कुछ साखियाँ पढ़े ज्ञान के ग्रंथ ।
जो इतने ज्ञानी बने सुगवा बड़ा महन्त ॥ १ ॥
ज्ञान ज्ञान बहु भाँति का बहुतक ज्ञान दुवार ।
एक ज्ञान साधू लहे चढ़कर नौ के पार ॥ २ ॥
मोटी पतली खाल में ज्ञान भेद हो जाय ।
घोड़ा माने बाग से हाथी आँकुस खाय ॥ ३ ॥
जीव एकही देह में अलग अलग अस्थान ।
याहि खाल के भेद से इक सम गहें ना ज्ञान ॥ ४ ॥
तृन इक पड़े जो आँख में होय घनेरी पीड़ ।
वाहि देह के हाथ से सहज उठे शहतीर ॥ ५ ॥
तन सम मन में भेद हैं मोटा पतला होय ।
जैसा मन जाका रहे परघट दीसे सोय ॥ ६ ॥

हंस और बगुला दो ज़ने बैठ सरोवर तीर ।
अपने अपने भोग की करें अलग तदबीर ॥ ७ ॥
मन कठोर है हाथ सम कोमल चित ज्यों आँख ।
निश्चय तिन के ज्ञान में फ़र्क़ रहे बहु भाँति ॥ ८ ॥
देही तो अस्थूल है मनुवाँ बड़ा महीन ।
देही मन के ज्ञान का भेद लेव मन चीन ॥ ९ ॥
सुरत अंश जो सार है मन देही की जान ।
कौन रक़म वाहि ज्ञान हो समझे पुरुष सुजान ॥१०॥
देह ज्ञान धागा कहो मन का मक की तार ।
सुरत ज्ञान है धार सम कहन सुनन से न्यार ॥११॥
देह ज्ञान भोगी टिके बाचक मन की दौड़ ।
सुरत ज्ञान जोगी गहे चढ़ पहुँचे निज ठौर ॥१२॥

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय ।

# प्रेमबिलास

भाग चौथा

## शब्द ११४

हे दयाल सद कृपाल हम जीवन आधारे ।
सप्रेम प्रीति और भक्ति रीति बन्दें चरन तुम्हारे ॥ १ ॥
दीन अजान इक चहें दान दीजे दया बिचारे ।
कृपा दृष्टि निज मेहर बृष्टि सब पर करो पियारे ॥ २ ॥

### शब्द ११५

गुरु दयाल ( मेरे दयाल ) अस करिये दाया ।
तुम्हरी सेवा और तुम भक्तन की बनत रहे सिर नाया ॥ १ ॥
दीन ग़रीबी चरन की प्रीती सदा रहे चित मेरे ।
मान मोह मद आलस निद्रा कभी न आवें नेड़े ॥ २ ॥
हानि लाभ और लोक लाज के भरम न मन में लाऊँ ।
सदा भरोसा रहे चरन का सेव करत गुन गाऊँ ॥ ३ ॥
प्रेमी प्यारे दास तुम्हारे इक चित होय सब चाहें ।
प्रेमपत्र और समाचार के दर्शन फिर भी पावें ॥ ४ ॥
परम पुरुष समरथ तुम दाता कौन कठिन यह बाता ।
दया मेहर से निज भक्तन की मान लेव अरदासा ॥ ५ ॥
प्रेमसन्देस अब दया मेहर से ततछिन होवे जारी ।
जा पहुँचे यह जिस जिस घर में सदा हो मंगलकारी ॥ ६ ॥
दुर्मति दूर हटे जीवन से सत मत के फल चाखें ।
प्रेम मगन होय सभी उमँग से राधास्वामी २ भाखें ॥ ७ ॥

---

### शब्द ११६

( दोहे )

बृच्छन से पाती झड़ी पड़ी धूल में आय ।
जोबन था सब झड़ गया दिन दिन सूखी जाय ॥ १ ॥
जब लग लागी बृच्छ से झूमे मगन अकाश ।
न्यारी हो मारी फिरे दह दिस पवन की दास ॥ २ ॥

जब लग लागी बृक्ष से सीतल छाया देय।
न्यारी हो ईंधन भई अगिन देय होय खेह ॥ ३ ॥
जब लग लागी बृक्ष से पिव की प्यारी पात।
न्यारी हो दुर्गन्धिनी सड़े पड़ी होय खात ॥ ४ ॥
सतगुरु संग न छोड़ियो रे मन जब लग प्रान।
सँग छूटे होय हाल तुम टूटी पात समान ॥ ५ ॥
सतगुरु सँग लागे रहे हरा भरा रहे गात।
प्रेम प्रीति घट में बसें शील सुमति सिर माथ ॥ ६ ॥
जो मन गुरु सँग प्रीति है तो चिन्ता मत मान।
सहजहि सतगुरु सँग मिले बिरह खोज का दान ॥ ७ ॥
या जग में हम देखिया एक अचम्भा आय।
सतगुरु संग न चाहते सतगुरु भक्त कहाय ॥ ८ ॥
नाम गुरू का लेत हैं महिमा गुरु की गायँ।
सतगुरु सँग की बात सुन पर ढीले पड़ जायँ ॥ ९ ॥
मीना ऐसी ना सुनी चहे न जल का संग।
पंछी ऐसा ना सुना करे पवन से जंग ॥ १० ॥
ऐसा सूम न भेंटिया धन सँग जो नहिं चाय।
भूखा अस कोइ ना मिला भोजन से घबराय ॥ ११ ॥
सुन सुन के नित होत है यही अचम्भा मोहि।
कौन रक़म गुरुभक्ति यह बिन सतगुरु जो होय ॥ १२ ॥
सोच समझ निश्चय किया यह मन अपने माहिं।
अस गति उनकी होति है जिन गुरु प्रीती नाहिं ॥ १३ ॥

घाटा गुरु की प्रीति का पुरे न मुख के बोल ।
बाहर पानी के पड़े भरा न देखा डोल ॥१४॥
साँचा होय गुरु संग कर नैन श्रवन दोउ खोल ।
हानि लाभ चिन्ता मिटे मिले बस्तु अनमोल ॥१५॥

---

## शब्द ११७

सुन सुन रह्या न जाय महिमा सतगुरु की ॥ टेक ॥
मछरी पड़ी भँवर के माहीं बहती बेबस धार ।
ठहरन को कहिं ठौर न पावे मछुवा खड़ा रे किनार ॥ १ ॥
सतगुरु पुरुष सुजान हैं रे जुक्ति कहें वह सार ।
झीनी धार पकड़ स्रुत मछरी पहुँचे सिन्ध मँझार ॥ २ ॥
पंछी पड़ा बहेलिये बस में दिया पिंजरे डार ।
निकसन की कोइ राह न पावे हार गया पर मार ॥ ३ ॥
सतगुरु पुरुष सुजान हैं रे मंत्र कहें इक कार ।
जाके जपे पलक इक छिन में खुल जाय पिंजरा किवाड़ ॥ ४ ॥
जीव बँधा देही के भीतर जरे आस की नार ।
जहाँ तहाँ पर मुख जब मारे मुख में पड़ती छार ॥ ५ ॥
सतगुरु पुरुष सुजान हैं रे राधास्वामी के औतार ।
प्रीति करा जिव बन्द छुड़ावें आस त्रास दें टार ॥ ६ ॥

---

## शब्द ११८

गुरू ने मोहिं (हमारे गुरु) ऐसा रतन बढ़ दिया ॥ टेक ॥
भाव घटे नहिं मोल न उतरे मुहर छाप सिर किया ॥ १ ॥
खर्च किये से बढ़ता निसदिन घर दर सब भर दिया ॥ २ ॥
चोर न जाने साह न पावे सुरती में धर लिया ॥ ३ ॥
ना गुन अरखें न औगुन परखे अपनी मेहर कर दिया ॥ ४ ॥
राधास्वामी सतगुरु नाम रतन दे निर्धन धनवर किया ॥ ५ ॥

---

## शब्द ११९

हित की बात खोल कहूँ प्यारे गुरु पूरे का खोज लगाना ॥टेक॥
जो चाहो छूटन या जग से गुरु पूरे का खोज लगाना ॥१॥
गुरु बिन सब जिव उरझ रहे हैं गुरु पूरे का खोज लगाना ॥२॥
निज घर में जो पहुँचा चाहो गुरु पूरे का खोज लगाना ॥३॥
बिन गुरु राह न मिलि है भाई गुरु पूरे का खोज लगाना ॥४॥
बिन गुरु चाल न चलि है इकदिन गुरु पूरे का खोज लगाना ॥५॥
भजन भक्ति का जो रस चाहो गुरु पूरे का खोज लगाना ॥६॥
बिन गुरु भक्ति भजन सब थोथे गुरु पूरे का खोज लगाना ॥७॥
गुरु पूरे भगवन्त पहिचानो गुरु पूरे का खोज लगाना ॥८॥
बिन भगवन्त भक्ति कहो कैसी गुरु पूरे का खोज लगाना ॥९॥

मत भूलो कर कर मन रंजन गुरु पूरे का खोज लगाना।१०।
सन्त बचन पर जो है निश्चय गुरु पूरे का खोज लगाना।११।
सतगुरु सन्त की आज्ञा यह ही गुरु पूरे का खोज लगाना।१२।
सतगुरु सन्त की मेहर जो माँगो गुरु पूरे का खोज लगाना।१३।
सतगुरु मिले मिले कुल देवा गुरु पूरे का खोज लगाना।१४।
गुरु बिन और न मालिक दूजा गुरु पूरे का खोज लगाना।१५।
यही जुक्ति मालिक मिलने की गुरु पूरे का खोज लगाना।१६।
मालिक से बेमुख नहिं चाहें गुरु पूरे का खोज लगाना।१७।
यही बचन है मूल सबन का गुरु पूरे का खोज लगाना।१८।
राधास्वामी कहें तुम हित कर मानो गुरु पूरे का खोज लगाना१६

---

शब्द १२०

समझ मोहिं आई आज गुरु बात ॥ टेक ॥
निज घर है अति दूर ठिकाना।
राह बिकट बल ज़ोर न गात ॥ १ ॥
बिन गुरु प्रीती काज न सरिहै।
बिन प्रीती को कमर बँधात ॥ २ ॥
गुरु का कहना चित धर सुनिये।
बात कहें गुरु हित की छाँट ॥ ३ ॥
करनी से मुख कभी न फेरो।
जहँ लग अपनी पार बसात ॥ ४ ॥

करनी किये बिन बल नहिं आवे ।
बिन बल कैसे पंथ चलात ॥ ५ ॥

पंथ चले बिन घर रहे दूरी ।
काल करम नित करें उत्पात ॥ ६ ॥

भाग जगे हुई सुरत सुहागिन ।
सतगुरु आय मिले मोहिं नाथ ॥ ७ ॥

अब मैं चेत करूँ नित करनी ।
जामें चाल चले दिन रात ॥ ८ ॥

सहज सहज घट में पग धारूँ ।
सहस कमल त्रिकुटी सुन घाट ॥ ९ ॥

इनसे होय कर भँवरगुफा होय ।
सतपुर पहुँचूँ बीन बजात ॥१०॥

अलख अगम लख निज घर पाऊँ ।
राधास्वामी सतगुरु की निज दात ॥११॥

---

## शब्द १२१

गुरु दयाल अब सुधि लेव मेरी ।
मँझ धारा में पड़ी है नैया डूबन में नहिं देरी ॥ टेक ॥
प्रेम गया हिये काम समाना नाम रूप बिसराने ।
निडर निलज्ज हुआ है मनुवाँ नेक कहन नहिं माने ॥ १ ॥

सुरत शब्द में जोड़न बैठूँ बिषयन सँग जुड़ जाऊँ।
सतसँग सेवा लागें फीके क्योंकर मन समझाऊँ॥ २ ॥
साधन कर जिव भाग बढ़ावें शब्द रूप रस पावें।
एक अभागा मैं ही तरसूँ साधन बन नहिं आवें॥ ३ ॥
तड़प तड़प कर करूँ पुकारी बिनती करूँ सिर नाई।
अपना कर मोहिं तजो न मग में औगुन गिनती लाई॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दया के सागर अपना पन न बिसारो।
पाप करम मैं सदा से करता जीव दया चित धारो॥ ५ ॥

---

## शब्द १२२

(होली)

मेरे सतगुरु आप खिलाय रहे
मैं कैसे न खेलूँ री होरी॥ टेक॥

जब लग पिया मिले थे नाहीं बात रही कुछ औरी।
दीन दुहागिन घर में रहती मैली चदरिया ओढ़ी॥ १ ॥
अब मैं पागे पिया निज अपने सोया भाग जगोरी।
मैली चदरिया फेंक उन मारी चुनरी दई सिर कोरी॥ २ ॥
ओढ़ चुनरिया सन्मुख ठाढ़ी प्रेम भरी कर जोड़ी।
देख पिया तब हँस कर बोले आज भई तुम मोरी॥ ३ ॥
सुन गुरु बचन उमँग अस जागी होय गई कहो बौरी।
सीस चरन पर रख मद माती करन लगी मैं निहोरी॥ ४ ॥

सतगुरु पिया दाव यह पाकर रँग मटकी सिर छोड़ी ।
रंग रँगी मेरी कोरी चुनरिया अटल सुहाग मिलोरी ॥ ५ ॥
जगत जीव यह भेद न जानें हँस हँस करें हैं टिकोरी ।
जिनको मिले रँगीले सतगुरु उनहीं समझ पड़ोरी ॥ ६ ॥
मैंने पिया प्यारे राधास्वामी पाये प्रेमसिन्ध बन्दि छोड़ी ।
मैली चदरिया तन की छूटी सुत चुनरी सिर ओढ़ी ॥ ७ ॥

---

## शब्द १२३

भूल पड़ी जग माहिं भरम बस जिव भयो ।
निज घर सुधि बिसराय जगत सँग लग रह्यो ॥ १ ॥
हंस सरोवर भूल तलैयाँ आ बसे ।
मुक्ता खोज न पाय निस दिन दुख सहे ॥ २ ॥
बहुतक किये उपाय छुधा तनि ना मिटी ।
जहँ तहँ मारे चुंच मुख कंकर अटी ॥ ३ ॥
हंसा होय निरास निगल कंकर गये ।
छुधा कियो बेहाल समझ बस ना चले ॥ ४ ॥
धीर धरी मन माहिं कछुक हम खाइया ।
चिन्ता अब कुछ नाहिं जतन बढ़ पाइया ॥ ५ ॥
पलक रही सुख चैन बहुर पीड़ा भई ।
दरद करेजे होय छुधा तनि ना गई ॥ ६ ॥

रैन दिवस दुख पाय सुने नहिं बात को।
कंकर चुन चुन खाय सहे सन्ताप को ॥ ७ ॥
हंसा दुखिया देख दुखी मन बहु रहे।
हंसा सुने न बात जतन कोई क्या करे ॥ ८ ॥
हंस दया चित धार बहुरि समझाइये।
माने हंस सुजान सो संग मिलाइये ॥ ९ ॥
कंकर मुक्ता नाहिं हंसा सुधि करो।
चलो सरोवर तीर तलैयाँ परिहरो ॥ १० ॥
बिना सरोवर जाय छुधा तनि ना टले।
महा दरिद्र यह देश यहाँ सुख ना मिले ॥ ११ ॥
सतगुरु बन्दी छोड़ राह बतलावहीं।
अपना बल दे संग ले पहुँचावहीं ॥ १२ ॥
हंसा देर न लाय सरन गुरु की गहो।
भूल भरम देओ त्याग डार सँग जा रलो ॥ १३ ॥
राधास्वामी गुरू दयाल जगत रछपाल हैं।
चरन सरन उन धार मिटें दुख साल हैं ॥ १४ ॥

---

## शब्द १२४ (दोहे)

### शिष्य का अङ्ग

सतगुरु पूरे खोज कर हुआ चरन लौ लीन।
राधास्वामी कहें पुकार कर शिष पूरा लो चीन ॥ १ ॥

गुरु दरशन मन लोचता चैन न छिन को आय।
जगत भोग फीके लगें ता सँग मन नहिं जाय ॥ २ ॥
लोभ मोह मन से गये मनुवाँ बे परवाह।
रतन खान घट में खुली जगत काँच नहिं भाय ॥ ३ ॥
रोग सोग चिन्ता मिटी सुमति दात गुरु दीन।
परख मौज कुछ पाय कर संशय सभी टलीन ॥ ४ ॥
उमँग उमँग सेवा करे उमँग उमँग सतसंग।
उमँग सहित सुमिरन करे उमँग सहित धुन संग ॥ ५ ॥
बलिहारी वा शिष्य के हौं वारी सौ बार।
जड़ चेतन का भेद जिन चीन्ह लिया मन मार ॥ ६ ॥
कारज जग के सब करे सुरत रहे अलगान।
कमल फूल नित बास जल तौ भी अलग रहान ॥ ७ ॥
गुरु पूरे दुर्लभ अती तीन लोक के माहिं।
पूरा शिष भी सहज से ढूँड मिलेगा नाहिं ॥ ८ ॥
परम कृपा जब गुरु करें परम दया करतार।
पूरे गुरु के खोज की तब पावे जिव सार ॥ ९ ॥
देह फन्द जिव फाँसिया कुमति किया घट बास।
पूरे गुरु और शिष्य की कौन धरे मन आस ॥ १० ॥

---

## शब्द १२५

मन सोच समझ रे भाई
तेरे हित की कहूँ बुझाई ॥ १ ॥
क्यों टेक पुरानी अटके
तेरे हाथ नहीं कुछ आई ॥ २ ॥
यह मानुष जन्म अमोला
भ्रम भूल में जाय बिताई ॥ ३ ॥
क्यों वेद कतेबन अटके
हैं कागज़ फिरी सियाही ॥ ४ ॥
क्यों वेदसार नहिं धारे
सुत चेतन ताहि कहाई ॥ ५ ॥
बिन किरपा सत करतारा
सो कभी हाथ नहिं आई ॥ ६ ॥
चहे वेद पढ़ो सौ बारे
सोचो चहे श्रवन कराई ॥ ७ ॥
यह कहन हमारी मानो
कठ* मुण्डक* पूछो जाई ॥ ८ ॥
सो किरपा कस तुम पाओ
यहि जतन बिचारो भाई ॥ ९ ॥
जो राम कृष्ण मन माने
ब्रह्म रूप धरे जग आई ॥ १० ॥

* उपनिषदों के नाम हैं।

उनही की कहन सँभारो
मेरी जो नहीं सुहाई ॥ ११ ॥
उन टेक छुड़ाई दूसर
निज टेकहि दृढ़ करवाई ॥ १२ ॥
सब धर्म छोड़ हे अर्जुन!
यों कृष्ण कहा समझाई ॥ १३ ॥
मेरी इक शरन सँभालो
मैं लेउँ तोहि मुकताई ॥ १४ ॥
मत शंका राखो कोई
यह वाक्य सत्य हो आई ॥ १५ ॥
यह बचन कहा गीता से
जिसकी मन बसी प्रभुताई ॥ १६ ॥
जो खोज अंग हो मन में
खोजो जा मत ईसाई ॥ १७ ॥
पूछो क्या कहा पैग़म्बर
फ़ुक़रा क्या कहा बनाई ॥ १८ ॥
शिक्षा क्या सन्तन दीनी
पूछो जा सन्त अनुयायी ॥ १९ ॥
जो उत्तर मिलेगा तुमको
घर बैठे सुन लो वाही ॥ २० ॥

सब शरन बताई अपनी
पिछली सब टेक छुड़ाई ॥२१॥
यह परशन करता परशन
दूसर नहिं जतन उपाई ॥२२॥
यहि शिच्छा मूल सबन की
और बचन शाख सब गाई ॥२३॥
यहि हुकुम दिया राधास्वामी
सन्तन सँग मेल मिलाई ॥२४॥
बिन किरपा सतगुरु पूरे
जिव काज बने नहिं भाई ॥२५॥
याते अब सतगुरु खोजो
छोड़ो सब तात पराई ॥२६॥
सुत बन्नी सतगुरु बन्ना
मिलने पर होय सगाई ॥२७॥
फिर भाँवर घट में ले कर
सुत गुरु सँग जाय बियाही ॥२८॥
बन्ना ले बन्नी सँग में
निज घर की ओर चलाई ॥२९॥
जा पहुँचें सहसकमल में
त्रिकुटी की चढ़ें चढ़ाई ॥३०॥

पहुँचें जा मानसरोवर
सूरत तहँ मल मल न्हाई ॥३१॥

फिर बने चहीती बन्नी
शोभा धज कही न जाई ॥३२॥

हँस खेलत बढ़ती आगे
धुन बंशी सुन मुसकाई ॥३३॥

जा पहुँचे सत दरबारा
फिर अलख अगम सुधि पाई ॥३४॥

निज महल करे परवेशा
राधास्वामी धाम कहाई ॥३५॥

पिया सँग नित करती केला
सुख भोगे अगम अथाई ॥३६॥

यह शादी होय मुबारक
सखियाँ मिल देयँ वधाई ॥३७॥

घर पूरा गति यह पूरी
आगे कुछ और न काई ॥३८॥

स्रुत पाय सहज में भाई
राधास्वामी सरन जो आई ॥३९॥

यह सत्य सत्य मैं भाखा
नहिं मानो रहो पछताई ॥४०॥

---

## शब्द १२६

धन्य धन्य सखी भाग हमारे
धन्य गुरू का संग री ॥ टेक ॥
मैं अति दीन निबल नाकारी
जानूँ न कोई ढंग री ॥ १ ॥
चरन लगाय गुरु भाग जगाये
दीनी भक्ति उतंग री ॥ २ ॥
अटल सुहाग दिया गुरु प्यारे
बख़्शा रंग सुरंग री ॥ ३ ॥
बारम्बार करूँ शुकराना
मन में जगाय उमंग री ॥ ४ ॥
जगत जीव यह मरम न बूझें
सुन सुन होते दंग री ॥ ५ ॥
मेहर करें जब राधास्वामी सतगुरु
संशय भरम होयँ भंग री ॥ ६ ॥

---

## शब्द १२७

सजीले सज तुम अकह अपारी ॥ टेक ॥
सत चित आनँद रूप तुम्हारा तेज पुंज हो भारी ॥ १ ॥
शक्तीमात्र जगत में जितनी बिजली धरत अकारी ॥ २ ॥
झिल मिल चमकें लगें सुहावन दें जब चीर उतारी ॥ ३ ॥

चेतन शक्ति परम अति झीनी　बिजली प्रान अधारी ॥ ४ ॥
शोभा दमक कहें क्या उसकी　कहन सुनन से न्यारी ॥ ५ ॥
बुधि इन्द्री मानुष जो पाई　हैं सब तुच्छ नकारी ॥ ६ ॥
फिर कैसे लख पावे कोई　लीला जस तुम धारी ॥ ७ ॥
तेज अगाध सुशोभित सुन्दर　चमक दमक बलिहारी ॥ ८ ॥
दृष्टी बल पावे कहिं ऐसा　बुद्धी जागे न्यारी ॥ ९ ॥
कोटिन सूर और चन्द्र असंखा　चमकें होय इक तारी ॥ १० ॥
दृष्टी देखे बुधि रस लेवे　आनँद मिले अथाह री ॥ ११ ॥
तो भी अनुभव तुच्छ रहावे　वार न तुम्हरा पारी ॥ १२ ॥
बुन्द देख कहो क्या कोई बूझे　सिन्ध जस कियो विस्तारी ॥ १३ ॥
राधास्वामी मेहर भेद यह जाना　चरन सरन बलिहारी ॥ १४ ॥

---

## शब्द १२८

सजन प्यारे मन की घुंडी खोल ॥ टेक ॥
जब लग मन की खुले न घुंडी
　समझ न आवें सतसँग बोल ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति तेरे चित नहिं ठहरें
　संशय भरम सँग डाँवा डोल ॥ २ ॥
अम्मृत बरसे नित सतसँग में
　अम्मृतधार बहे झक झोल ॥ ३ ॥

तुझ पर बुंद टिके नहिं एको ।
ऐसे मन तेरे धारे खोल ॥ ४ ॥
हित की बात कहूँ अब तोसे ।
राधास्वामी की यह सीख अमोल ॥ ५ ॥
जब लग लागी घुंडी तेरे ।
जनम जाय तेरा नाप और तोल ॥ ६ ॥

---

## शब्द १२६

### विनय-पत्र

दोहा

पाती भेजूँ पीव को प्रेम प्रीति सों साज ।
छिमा माँग विनती करूँ सुनियें पति महराज ॥ १ ॥
कोटि कोटि करूँ वन्दना अरब खरब परनाम ।
चरन कमल बल जावती यह चेरी बिन दाम ॥ २ ॥

चौपाई

हे प्रीतम हे प्रान पियारे ।
हे स्वामी हे प्रान अधारे ॥ ३ ॥
तुम सम प्रीतम और न होई ।
मुझ सम बड़ भागिन नहिं कोई ॥ ४ ॥
चरन सरन जिन तुम्हरी पाई ।
चरनन लग जो तुम्हरी कहाई ॥ ५ ॥

मैं निज भाग सराहूँ कैसे ।
पति दुरलभ मैं पाये जैसे ॥६॥

दोहा

भाग जगा कोइ आदि का मेहर भई करतार ।
यह दासी निर आसरी पाये तुम भरतार ॥ ७ ॥

चौपाई

मैं निरधन कोइ धन नहिं मेरे ।
तुम प्रीतम हो शाह सचेरे ॥ ८ ॥
मैं अजान और अति कर मूरख ।
तुम प्रीतम सब जगत प्रकाशक ॥९॥
मैं अति नीच कुरूप मलीनी ।
तुम प्रीतम हो अति परबीनी ॥१०॥
मैं औगुन की खान नकारी ।
तुम प्रीतम सब गुन भंडारी ॥११॥

दोहा

सात सिन्ध जो मसि करें लेखन बनकट पायँ ।
रैन दिवस लेखक बनें गुन औगुन लिखे न जायँ ॥१२॥

चौपाई

हे प्रीतम तुम गुन क्या गाऊँ ।
चरनन पर मैं बलि बलि जाऊँ ॥ १३ ॥
रूप सुहावन जस तुम धारा ।
कहन न आवे बार न पारा ॥ १४ ॥

मस्तक शोभा क्या कहुँ कैसी ।
सूर चन्द्र पाई कला न वैसी ॥१५॥
नैन रँगीले मुख मुसकाहट ।
बैन रसीले बरसे अम्मृत ॥१६॥

दोहा

नख सिख शोभा प्रीतमा जस तुम रची सजाय ।
दरश दिवानी बावरी कैसे कहे बनाय ॥१७॥

चौपाई

धन्य सुदेश जहाँ तुम बसते ।
भूमि पवित्र जहाँ पग धरते ॥१८॥
वस्तर धन्य जो तन पर धारो ।
धन्य अन्न जो बने अहारो ॥१९॥
धन्य सो नीर पान जिस करते ।
धन्य पवन स्वाँसा जिस लेते ॥२०॥
धन्य धन्य सो जीव सुभागी ।
सेव करें तुम्हरी मन लागी ॥२१॥

दोहा

धन्य धन्य सब रचन है धन्य धन्य सब ज़ीव ।
तुमको सुख पहुँचावते प्रान पियारे पीव ॥२२॥

चौपाई

प्रीति लगी मेरी तुमसे जिगरी ।
चितऊँ तुम्हें और सब बिसरी ॥२३॥

प्रीति लगी जस मछली जल से ।
प्रीति लगी जस भौंर कँवल से ॥२४॥

घन देखत मगने जस मोरा ।
झलक पाय तुम करती शोरा ॥२५॥

जिगर फटा दिल टुकड़े टुकड़े ।
स्वाँस गिरास चरन नहिं बिसरे ॥२६॥

दोहा

मानुष तन में रक्त ज्यों नाड़ी नस में पूर ।
प्रीति अस तुम्हरी प्रीतमा मेरे मन भर पूर ॥२७॥

चौपाई

लोग कहें मोहिं दिल की कच्ची ।
हे स्वामी हूँ मैं पर सच्ची ॥२८॥

मेरी कचाई को चित नहिं लाओ ।
कच्चे फल सम मोहिं निभाओ ॥२९॥

कच्चे फल की देखो सचाई ।
कैसे दृढ़ सँग डार जुड़ाई ॥३०॥

कच्चा बाल प्रीति उस देखो ।
कच्चा धाग ग़रीबी पेखो ॥३१॥

दोहा

कच्चे फल पर सूर की दृष्टि पड़े कुछ काल ।
सहजहिं पक्का होत है सुनिये दीनदयाल ॥३२॥

चौपाई

वात काटनी मैं नहिं चाहूँ ।
सुपने भी यह मन नहिं लाऊँ ॥३३॥

औगुन अपने सब बिधि जानूँ ।
कोर कसर अपनी सब मानूँ ॥३४॥

पतिव्रता पर हूँ मैं नारी ।
तुम बिन और नहीं चित लारी ॥३५॥

जो कहिं मौज तुम्हारी इच्छा ।
कर देखो कुछ जाँच परीच्छा ॥३६॥

दोहा

आज्ञा तनिक जो होय तुम काट धरूँ सब देह ।
घर में लूका फेर कर अगिन करूँ सब खेह ॥३७॥

चौपाई

कोइ कहते मैं तन बिच अटकी ।
भूषन बस्तर सँग रहुँ भटकी ॥३८॥

भोगन की मन चाहत रखती ।
तन पालन की इच्छा करती ॥३९॥

यह सब कथन न मानो प्यारे ।
इन दोषन से रहूँ किनारे ॥४०॥

जब लग तन में चलि हैं स्वाँसा ।
एक आस रहे इक बिस्वासा ॥४१॥

दोहा

तन मन सेवा में लगें और सेव तुम्हारी होय ।
दया दृष्टि मुझ पर रहे और न चाहत कोय ॥४२॥

चौपाई

हे स्वामी इक और भी सुनिये ।
जल अग्नी का लेखा गुनिये ॥४३॥
सूखी बस्तु पड़े जब जल में ।
सूखी रहे नहिं भीगे पल में ॥४४॥
जल बरसे सीली होय ईंधन ।
अग्नि पड़े पर लागे सुलगन ॥४५॥
अग्नि लाल और कोयर काले ।
अग्नि पड़े होयँ लालहि लाले ॥४६॥

दोहा

लोन खान में जो गिरे दिना चार होय लोन ।
चरनन तुम्हरे लाग पुनि दोष रहे मम कौन ॥४७॥

चौपाई

याते बिनती यही है स्वामी ।
जस तस सरन पड़ी हूँ निकामी ॥४८॥
औगुन मेरे चित नहिं लाओ ।
दीन जानि मोहिं दया उमाओ ॥४९॥
सत्य सत्य मैं सत्यहि भाषा ।
तुम से नेक न अन्तर राखा ॥५०॥

पतिव्रता तुम्हरी हूँ नारी ।
आस भरोस इक सरन तुम्हारी ॥५१॥

दोहा

पतिव्रता पति को गहे स्वाँति बुन्द जस सीप ।
और न जल से काम है जल थल भरे समीप ॥५२॥

चौपाई

नाम तुम्हारा निस दिन जपती ।
रूप तुम्हारा हिरदे धरती ॥५३॥
चल फिर काज करूँ मैं मन से ।
मुख से बोलूँ सुनूँ श्रवन से ॥५४॥
चित हरदम पर चरनन रहई ।
देह चले पर मन नहिं बहई ॥५५॥
सुरत रहूँ चरनन में जोड़ी ।
मन की वाग सदा रहुँ मोड़ी ॥५६॥

दोहा

रसना में जस रस बसे नैनन में ज्यों जोत ।
हिरदे अन्दर तुम बसो जान प्रान के सोत ॥५७॥
गागर ऊपर गागरी उलट जोड़ प्रभु दीन ।
भीतर भर तुम प्रेम जल अस काया मम कीन ॥५८॥
भौजल गहिर गँभीर मध जल थल भरे अपार ।
मुझ लोहा तुम काठ बिन दूसर कौन अधार ॥५९॥
धूम धाम अति कर मची जग की हाट बजार ।
बिन तुम अँगुली भीड़ में मेरो कौन सहार ॥६०॥

चौपाई

ऐसी अबल और आतुर नारी ।
जीवन के जिस तुम ही अधारी ॥६१॥

तुम चरनन में हरदम लीनी ।
चरनन बिन जिस और न चीन्ही ॥६२॥

प्रीतम तुमने दूर बिडारी ।
मैली समझ के दीन बिसारी ॥६३॥

कोर कसर कोइ चित में लाई ।
चरनन रज सभ झाड़ फिकाई ॥६४॥

दोहा

मछली मैला जीव है यह जाने सब कोय ।
जल से दूर न डारिये जियत जो राखन होय ॥६५॥

चौपाई

ऐसी मेहर बिचारो स्वामी ।
बार बार तुम चरन नमामी ॥६६॥

कष्ट हरो मोहिं निकट बुलाओ ।
दरशन दे मेरी तपन बुझाओ ॥६७॥

चरनन में मोहिं बासा दीजे ।
दासी जानि मेहर निज कीजे ॥६८॥

जीव दया तुम निस दिन पालो ।
दूर पड़ी मोहिं निकट बुलालो ॥६९॥

दोहा

नैना तरसें दरश को देह तड़पे बिन सेव ।
ऐसे दिन कब लग कटें तरस करो कुछ देव ॥७०॥
राधास्वामी परम गुरु परम पुरुष भरतार ।
दया धार उमँगाइये अपनी ओर निहार ॥७१॥

---

## शब्द १३०

रेख़ता

गुरु ज्ञान को जान सोइ मानता है,
जो ध्यान सों ज्ञान को काम लावे ।
मन मार तन जार दस द्वार हो पार,
धुर धाम में जाय बिश्राम पावे ॥ १ ॥
जग भोग के भोग की बास राता,
गुरु प्रीति की रीति सों प्रीति नाहीं ।
गहे हाथ कम्मान बिन बान मारे,
मतिमन्द सो मूढ़ रन जीत चाहीं ॥ २ ॥

---

## शब्द १३१

रेख़ता

दिन चार का खेल संसार है यह,
पल चार का भोग और राज भाई ।

जमराज फ़रमान जिस आन पहुँचे,

नहिं शान अभिमान कुछ काम आई ॥ १ ॥

सौ बात की बात इक मान लीजे,

भ्रम ज्ञान और मान को तुरत छोड़ो ।

गुरु प्रेम की प्यास की आस दृढ़ ले,

गुरु संग में मन और सुरत जोड़ो ॥ २ ॥